

श्रीभागवतभक्तिनिधि,

श्रीमन्त सरदार बलवन्तराव भैयासाहेब सिन्दे,

सी. बी. ओ. मदारुल-मुहाम,

राज ग्वालियार.

॥ श्री ॥

पदमाला।

श्री राधाकृष्ण चरण कमल चञ्चरीक,

श्री भागवत भक्तिनिधि, श्रीमंत सरदार,

बलवंतराव भैया साहब सिंदे,

सी. बी. ओ., मदारुल-मुहाम,

राज ग्वालियार

कृत।

जिसे पं० लक्ष्मीनारायण ज्योतिषी जनकगंज
लश्कर गवालियर ने
आलीजाह दरबार प्रेस गवालियार में
मुद्रित कराकर प्रकाशित किया।

संवत् १९७२, सन् १९१५ ई०
चतुर्थवार १,००० प्रति।

॥ श्रीराधारमणोजयति ॥

भजन भूमिका.

इस महाघोर कालिकाल में संत, सद्ग्रंथ, सत्पंथ, सदाचरण, आचार, विचार, ऐसे रहगये हैं कि जैसे दुष्काल में किसी २ कुंवे पर खेती की हरियाई दिखाई देती है. तथापि इस भारतवर्ष की भूमि पर हरिभक्त भी विद्यमान हैं, और मुमुक्षु भी विद्यमान हैं.

जो बड़ा संशय मुमुक्षुओं के चित्तमें धैर्यगलित करदेनेवाला होता है, वह यह है कि,

"किस मार्ग से संसार निवृत्ति और प्रभु की प्राप्ति होवे"

बहुतसे सज्जन पुरुष इसीके शोध में भटकते हुए निराश होकर बैठ जाते हैं, और अपने इच्छित फल प्राप्ति को नहीं पहुंचते हैं.

प्रभुप्राप्ति का मार्ग कुछ छिपा हुआ नहीं है, सीधी सड़क पड़ी हुई है, परंतु लोग गली कूंचों में भटका करते हैं, और ठोकरें खाया करते हैं, सीधा मार्ग नहीं चलते, क्योंकि लोकस्वभाव ऐसाही है, कि जो सरल और सुलभ उपाय है उसपर विश्वास नहीं आता, जो कठिन और दुर्लभ है वह बन नहीं पड़ता.

सब वेदों का भेद और संतों के अनुभव का सार यह है कि सदाचरण से प्रभु का नाम लेते रहिये, सेवा करते रहिये, नमस्कार करते रहिये, उनके चरणों में चित्त लगाये रहिये: इसीसे जीव की निस्संशय कृतार्थता है. जैसाकि श्रीगीता में स्वतः पूर्णपुरुषोत्तम सच्चिदानंद, आनंदकंद, श्रीगोविंद ने कहा है.

श्लोक.

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥ १ ॥

हम भी बहुत से मार्गों के गली कूंचों में भटक लिये हैं. बातें तो सब करते हैं, परंतु रहनी कठिन है,

और पदार्थ दूर है. सार की बात यह है कि जैसे कूप में डूबता हुआ डोर को दृढ़ पकड़ लेता है, इसी प्रकार श्रीमन्नाम को दृढ़ पकड़े रहिये, बेडा पार है.

यद्यपि यह बात सत्य है तथापि बहुत कालतक और बड़े दूरतक साधकों के चित्त में नाना प्रकार के संशय और अनेक भांति के विकार उठा करते हैं, जैसे हम पर श्रीगोविंद की कृपा है अथवा नहीं है, होवेगी किंवा नहीं होवेगी, कब करेंगे, क्या करेंगे, इस मार्ग में अपना कहांतक प्रवेश हुआ, साधन हमारा ठीक है अथवा नहीं है, भजन में मन नहीं लगता, चित्त नहीं ठहरता, लयविक्षेप बहुत होता है, इत्यादिक संकल्प विकल्प बहुत उठा करते हैं.

इस प्रकार के मन की भ्रमना से भजन में शिथिलता आजाती है, उत्साह बैठ जाता है, कोई २ इतर साधनों को स्वीकार करलेते हैं, कोई अभागी लोग कुछ काल साधन करके त्याग भी देते हैं.

परंतु साधकों को इन संशयों की ओर किंचित भी लक्ष देना उचित नहीं है, क्योंकि मनुष्य सत्व,

रज व तम, इन तीन गुणों से बना हुआ है. जब रज, तम, गुणों की वृद्धि होती है तब यह दोष बढ जाते हैं, जब सत्व गुण की वृद्धि होती है तब यह दोष घट जाते हैं. यह सब गुणों का खेल है, जैसे शरीर में कफ वात बढ़ने से जो मनुष्य रोगी होजाता है, वह शुद्ध पित्त के जागृति से निरोगी होता है, इस कारण भजनरूपी मात्रा से सतोगुण बढाते रहना, और दशांग का काढ़ा जो श्रीमद्भागवत में लिखा है:—

(१ निवृत्ति पर शास्त्रों का अवलोकन. २ तीर्थोदक का सेवन. ३ विरक्तजनों का संग. ४ एकांत निवास. ५ पिछली पांच घड़ी रात की जागृति. ६ निष्काम कर्म. ७ वैष्णव दीक्षा. ८ श्रीगोविन्द का ध्यान. ९ सात्विक मंत्र. १० चित्त शोधक संस्कार) इनका सेवन करते रहना उचित है, जिससे सत्वगुण की वृद्धि और पूर्वोक्त दोषों की निवृत्ति होती है.

इसी प्रकार से दोष निवृत्ति के हेत साधक को शरीर का परिमित अहार, विहार, निद्रा, जागृति से निरोगी रखना अत्यंत अवश्य है; क्योंकि परमार्थ के घुड़दौड़ का घोड़ा तो शरीर ही है, जो वाजी लंगडा होगया तो बाज़ी कौन जीतेगा.

यद्यपि पूर्वोक्त दोष बहुत दूरतक पीछा नहीं छोड़ते, तथापि इन उपद्रवों के भय से भजन में शिथिल न होना चाहिये, क्योंकि केवल भजन ही सब दोषों का नाशक है—तत्व की बात यह है:—

॥ दोहा ॥

कबहु उपेक्षा ना करें, त्यजत न निज जन पक्ष ।
विश्व विदित गोविन्द व्रत, यापर राखिय लक्ष ॥

श्रीपूर्णपुरुषोत्तम भक्तकामकल्पद्रुम अपने पाद पद्म प्राप्ति के उत्सुकों की कभी उपेक्षा नहीं करते, और अंगीकार करके कभी त्याग नहीं करते, यह प्रभु का जगविख्यात बाना है. जिस कार्य में त्रैलोक्यपति की सहायता है, उसके सिद्ध होने में संशय क्या है, इस कारण किसी भी साधक को निराश होना अथवा मन मलीन करने का कोई कारण नहीं है. शुद्ध संकल्प का बाण निशाने पर ही खटकता है बीच में नहीं अटकता.

मुमुक्षु को केवल ईश कृपा के शुद्ध लक्षण पर ही लक्ष रखना योग्य है.

प्रथम लक्षण यह है कि जब मनुष्य के चित्त में ईश्वर प्राप्ति की अभिलाषा उत्पन्न हुई, सोई समझ लेना कि श्रीजगदीश्वर के उम्मेदवारों में उसका नामोल्लेख होगया; क्योंकि यह इच्छा तभी होती है जबकि अनंत जन्मों के पापों की निवृत्ति होकर प्रभु सन्मुखता का समय समीप आता है.

जब अधिकतर लालसा होकर श्रीवैष्ण दीक्षा ग्रहण करी, और श्रीमन्नाम की चमकीली चपरास हृदय में पड़ी, तब साधक ने समझ लेना कि वह जगदीश की साधारण प्रजा संख्या से पृथक् होकर उसे श्री हरिदासवर्ग का सौभाग्य प्राप्त हुआ. वह पदवी चाहे जिस छोटे कोटि की होवे, तथापि है वह राजघर की नौकरी, कुछ भी हो अब वह सरकारी नौकर होगया. यदि कोई अपराध भी बनपड़े तो उसे अब राज्य अधिकारी ही उसके अपराध का निर्णय करेंगे और शिक्षा देवेंगे. [Departmental inquiry and punishment] इतर प्रजा के समान पुलिस नहीं खींचे २ फिरेगी, मिरची का तोबरा नहीं चढावेगी, न चीरके काठ में लगावेगी; क्योंकि श्रीमन्नाम की

महिमा अपार है, और दीक्षा के संस्कार का प्रभाव अतर्क्य है.

दीक्षा संस्कार अर्थात् गुरुद्वारामंत्र ग्रहण करना, यह भगवन् मार्ग में मुख्य है और परमार्थ के सुंदर मन्दिर का पाया यही है, इसके बिना देवालय नहीं खड़ा होगा. मनुष्य जन्म होते ही देह रूपी मिट्टी की मठी तो खडी होही जाती है, परंतु दिव्य देवालय जिसमें जगदीश्वर की मनोहर मूर्ति झलका करे, और नित्य आनंद के नगारे गरज़ा करें, वह सच्चिदानंदस्वरूप देवघर नहीं बनता, इस हेतु से प्राणीमात्र को अपनी कृतार्थता के निमित्त दीक्षा लेना अत्यंत अवश्य है. इस दीक्षा के संस्कार का प्रभाव कुछ ऐसा विलक्षण है कि नर का संबंध गुरु परंपरा द्वारा श्रीमन्नारायण तक करा देता है, और एक नवीन दिव्य वंशवृक्ष खड़ा करके जो अपने गुरुजनों की भजन संपत्ति है, उसका विधिपूर्वक दायभागी कर-देता है, नहीं तो एक जन्म में मनुष्य कितना साधन करेगा, और उससे क्या प्राप्ति करलेगा, काम तो जब ही पड़ता है जब गुरुजनों की धरी धराई धरोड़ हाथ

लगजाती है. जैसे किसी साधारण मनुष्य का पुत्र किसी बड़े घर में दत्तक होने से दत्तक लेनेवाले के संपत्ति का दायभागी होता है, इसी प्रकार दीक्षा संस्कार से मनुष्य अपने गुरुजनों की भजन संपत्ति का दायविभागी होता है.

वेद शास्त्र में दो प्रकार की संतति हैं, एक वीर्य संतति, दूसरी शब्द संतति. वीर्य संतति तो सबको व्यक्त है, जैसे पिता के रेत से पुत्र उत्पन्न होता है. शब्द संतति वह है, जिसका श्रीगुरु के द्वारा बीजमंत्र से शिष्य के हृदयकोश में भगवत्तत्व का प्रवेशरूप गर्भाधान होता है, जैसे माता के उदर में गर्भ बढ़ते २ क्रम से साढ़े तीन हाथ का जवान पट्ठा बनजाता है इसी प्रकार से भजन द्वारा वह गर्भ बढते २ सच्चिदानंद दिव्यदेही होजाता है. वह यही देह है जिससे श्रीतुकाराम महाराज वैकुंठ को गये और श्रीविट्ठल नाथ महाराज अपने शिष्य सहित नित्य लीला में प्राप्त हुए.

जब जीव प्रभु का भजन करने लगा सोई मुमुक्षु को समझ लेना चाहिये कि उसे सेवा का अधिकार नियत होगया, प्रभु की भजनसेवा जो मिली,

उसे अपना धर्म जानकर निर्बाध करते रहना. जब श्रीहरिभजन में मन लगने लगा, वृत्तियां रुकने लगीं, विषय वासना घटने लगी, स्वामि के रूप में, लीला में, नाममें, धाममें आनंद आने लगा तब जानो कि यह प्रभु प्रसाद का लक्षण है. सरकार में सेवा का स्वीकार हुआ, इनाम मिलने लगी, प्रतिदिन बुद्धि की शुद्धता, मन की निर्मलता, ज्ञान का प्रकाश, भ्रम का नाश, होने लगता है. सद्ग्रंथ, सत्पंथ, सदाचार, सद्-व्यवहार में रुचि बढने लगती है. श्रीहरि लीला कथा में प्रीति होने लगती है. मन सच्ची बात को ग्रहण करने लगता है, देह में दिव्य शक्ति का संचार होता है, यहां तक कि मनुष्य सत्यव्रत, सत्यसंकल्प होजाता है. यह स्पष्ट लक्षण हैं इसपर सतत लक्ष रखना, इतर भ्रमणा में नहीं पडना, यह सीधी बात है. यह परमारथपंथ सिद्ध शास्त्र है जैसे दो और दो चार होते हैं. अनुभव गम्य है, इसमें कहने सुनने की बात नहीं, वाद विवाद का काम नहीं, संशय करने का प्रयोजन नहीं, क्योंकि यह वस्तुप्रभाव है, जैसे अग्नि जलाता है और जल शीतल करता है, सच्ची

बात है, सच्चों ने कही है, और सची है. आप्तवाक्य पर विश्वास रखकर उत्साहसह भजन करते रहना, और सत्यत्व का अनुभव लेते रहना, यह जीवों का कर्तव्य है, और यही धर्म है.

यह हमारे साठ बरस के अनुभव की बात है जो मानेगा गुण गावेगा, नहीं तो पछतावेगा.

॥ दोहा ॥

कृष्ण कृष्ण दिन रैन कहि, जे जन समय बितायँ ॥
ते प्राणी वैकुंठ को, रोक टोक बिन जायँ ॥ १ ॥

बलवंतराव सिंदे.



॥ श्री ॥

पदमाला के पदों की अनुक्रमणिका।



पद्माला के पदों की अनुक्रमणिका ।

संख्या. प्रथम चरण. पृष्ठसंख्या.

संख्या.	प्रथम चरण.	पृष्ठसंख्या.
१३३	चरण गहों विनवहुं कर जोरी	७९
१३४	विनवत बीतो बृजनाथ समय	८०
१३५	अब कब कृपा करहु राधेवर	८१
१३६	काहु दिन कृपा होयगी स्वामी	८१
१३७	जन्म योंहीं बीतो जात बिहारी	८२
१३८	तुम्हीं पे रचो है सुहाग	८२
१३९	लगन तोसे लागी रे घनश्याम	८३
१४०	दिन रैन झरोके नैन लगे रहते हैं	८४
१४१	कुर्बान जान सूरत पै	८४
१४२	जबसे देखी झलक तुम्हारी	८५
१४३	कमल मुख कबलों दुराये रहोगे	८५
१४४	जबसे देखे श्याम सुन्दर	८६
१४५	कबन परे ऐसी विपता में	८६
१४६	देखी जबसे मोहनि मूरति	८६
१४७	बृज बीथिका बजार मोहन	८७
१४८	जबते श्याम गये मधुबन को	८७
१४९	हेली अबलों हरि नहिं आये	८८
१५०	घनश्याम तुम्हैं हेरत हेरत	८८
१५१	कहां गया वह पीतम प्यारा	८९
१५२	अरी दई मारी जरो यह होरी	८९
१५३	कैसे दूर देस मोहिं डार दई	९०
१५४	जाकी व्यथा सोई इक जाने	९०
१५५	ऊधौ कौन जतन अब कीजै	९१

संख्या.	प्रथम चरण.	पृष्ठ संख्या.
२०२	प्रिया संग झूलत कौन नई	११७
२०३	झूलत श्यामा श्याम चलोरी	११७
२०४	झूलत श्याम राधिका गोरी	११८
२०५	श्रीदंपति पद पंकज शोभा	११९
२०६	जा नैयाके जुगल खिवैया	११९
२०७	जिन भूलेहु प्रभुकी शरणलही	१२०
२०८	यदुपति चरण कमल बलिहारी	१२०

पद मराठी भाषा।

२०९	येईबा गुरुराया	१२१
२१०	कुठवरि प्रभु उपकार आपुले	१२१
२११	धरणे देऊनी उभा तुझे द्वारी	१२२
२१२	कांवसला रुसोनि कैसा	१२२
२१३	माझा जिवाचा जीवणा	१२३
२१४	कृष्ण वदा गोविंद वदा	१२३
११५	जयराधा कृष्ण जयराधाकृष्ण	१२४
२१६	ही दुष्ट वासना सुटे न	१२४
२१७	काय हरिमायेची लीला	१२५
२१८	चरणीं देई ठांव	१२५
२१९	देई दर्शन दासा पंढरी	१२६
२२०	वृन्दावन सोडुनी	१२६
२२१	दुरुनी आलों चरणा पाशीं	१२७
२२२	किती दिवस तरी राहाशिल	१२८
२२३	कोणतें साधन करूं भेटी साटीं	१२९

आत्मलाभ.

॥ इति ॥

॥ श्री ॥

शुद्धाशुद्ध पत्र.

पाठकजन कृपा करके इसके अनुसार पुस्तक शुद्ध करलें.



पद संख्या.	पद की पंक्ती सं.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३	५	जबत.	जवते.
३	७	नँद नद.	नद नंद.
४	८	घर जा.	घर जायो.
१२	८	पंथ.	पथ.
१३	८	विनासै.	विनासे.
१४	४	भया.	भये.
१८	६	जावै.	जोवै.
२५	४	दुख दायक.	सुख दायक.
२९	८	वृज पाल.	वृज वाल,
४७	२	हे.	है.
५७	२१	सर.	सार.
५९	४	छांई.	छाई.

पद संख्या.	पद की पंक्ती सं.	अशुद्ध.	शुद्ध.
६४	३	धरे.	धरे.
६५	६	दंपति	दंपती.
६८	१३	शक्ति.	शक्ती.
७२	५.	सिरत्रर पानी.	सिर त्रर पानी.
७२	४०	तोड.	तोडे.
७७	६	तरातिल.	तरलित.
८२	२	जिन.	जिम.
८४	१०	कृपासरी.	कृपेश्वरी.
८५	५	लावण.	लावण्य.
८५	९	ललता लळता.	ललता लालिता.
८५	१८	ताप.	तप.
९९	२	दानि.	दान.
१०१	१	देस से.	दूर देस से.
१०३	१३	सार.	सारे.
१०९	१	सकट.	संकट.
११७	२	कलप.	पलक.
१२६	८	छाऊ.	छांऊं.
१३५	७	गुण सार.	गुण सागर.
१५२	११	वोरी.	वौरी.
१६८	१	पतिम.	पीतम.
१६९	८	अली.	आली.
१७५	५	धरी.	धरी सुधार.
१७७	५	वलवल.	बलवंत.

पद संख्या.	पद की पंक्ती स.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१८२	१	रागन.	मगन.
२०२	५	मुसक्य.	मुसक्यन.
२०६	३	जक्त.	जगत.
२११	४	टाळिये ले तुम्ही.	तुम्ही टाळिये ले.
२११	६	वारंवार तुम्हा.	तुम्हा वारं-वार.
२२३	४	कीं.	किंवा.
२२३	६	मज.	आता.
२२३	१०	प्राणनाथा.	प्राणपति.
२२४	४	काकन.	कानन.
२२५	१	श्रीपती.	श्रीपदी.
२२५	४	तद्विरहाने.	त्वाद्विरहाने.
२३५	४	नसे दूजी माय बलवंता दीनाची.	बळवंता माय दूजी न से.
२४०	४	होति ची.	धरिली.
२४०	७	सनाथ केले तुम्ही.	तुम्ही सनाथ केले.
२४०	७	दशा.	तीदशा.
२४०	८	सुखाची.	सुखाची ही.

—※—

॥ श्री ॥

॥ श्रीराधारमणो जयति ॥

अथ पदमाला प्रारम्भ

पद १.

जै गणनायक जनसुखदायक, सबलायक जै सिद्धि-पती ॥ श्रीशंकरसुत मूरति अद्भुत, प्रथमपूज्य जै विमलमती ॥ १ ॥ सिंदुरचंदन मुनिगणवंदन, विघ्न-निकंदन जनत्राता ॥ करिवरआनन बंधु षडानन, संकट भानन सुखदाता ॥ २ ॥ एक रदन ऐश्वर्यसदन जै, मदनकदनप्रिय धूम्रध्वजा ॥ मोदकग्रासन मूषक आसन, पालक दासन सुत गिरिजा ॥ ३ ॥ जै चंद्र-भाल भुजबल विशाल, गल मणिन माल छविजाल भरी ॥ बलवंत भक्त पर वरद हस्त धर, करिय कृपा उर बसैं हरी ॥ ४ ॥

पद २.

मतिवरदानी शारदरानी, गुणगणखानी जगजानी ॥
हंसवाहिनी दास दाहिनी, प्रणत पाहिनी मुनि मानी ॥

॥ १ ॥ शुभ्र सरूपा परम अनूपा, लखि सुर भूपा मोहि रहे ॥ जय जगव्यापक मुनिजनजापक, गुण-गणथापक विरद कहे ॥ २ ॥ कर वीण विराजे पुस्तक भ्राजे, मतिभ्रम भाजे ध्यान किये ॥ मुकुट सीस पर शुभ्र शोभ तर, फटिक माल कर सुभग लिये ॥ ३ ॥ बलवंत विनय अस प्रभु उज्ज्वल यश, गावत जग निशिदिवस रहौं ॥ करुणा कीजै अस वर दीजै, हरि रस भींजे गीत कहौं ॥ ४ ॥

पद ३.

जै प्रभु चैतन चंद, जै जै नित्यानंद ॥ धृ० ॥ काम कल्प तरु दया वारि निधि, भक्ति दानि सुख-कंद ॥ १ ॥ प्रेमपंथ जिन अवनि प्रचारो, हरे सकल दुख द्वंद ॥ २ ॥ नाम प्रताप प्रबल प्रगटाई, काटे साधन फंद ॥ ३ ॥ जबत प्रगट भये करुणाकर, किये द्वार जम बंद ॥ ४ ॥ जिहिं प्रभाव बलवंत बदलभे, जड चैतन नँदनद ॥ ५ ॥

पद ४.

जय गौर देव पूरण कृपाल, प्रभु भक्ति भरित मूरत रसाल ॥ धृ० ॥ अनुरक्त मत्त लोचन विशाल,

जन्तु प्रगट प्रेम की दीप माल, उर्ध्व पुंड्र छबि शशि-रश्मिजाल ॥ १ ॥ कंदर्प जाल कच कुटिल भाल, सोहत विशाल उर कमल माल, कुंडल कपोल जिम भानु लाल ॥ २ ॥ भुजदंड सुमंडित बाजुबंद, मणि जटित कटक कर अर्द्ध चंद, मंजीर ध्वनि पद मंद मंद ॥ ३ ॥ दृग घात आश्रित जन किय निहाल, घर जाय दास बलवंत बाल, अब करिये कृपा मोपे दयाल ॥ ४ ॥

पद ५.

करुणाकर देव गौर चंद्र चरण ध्याऊं ॥ धृ० ॥ जड़ जीवन दिय उधार, करि केहरि कहि पुकार, कृष्ण कृष्ण बार बार, कहंलौं गुण गाऊं ॥ १ ॥ एक बेर कृष्ण नाम, लेत देत परमधाम, पूरण सब करत काम, चरण सीस नाऊं ॥ २ ॥ घर जायो तोर दास, दीजे पद तल निवास, धरम को प्रकाश पुनि, जगत में जगाऊं ॥ ३ ॥ तुमही बलवंत नाथ, धरिये कर कमल माथ, करिये अब मुहि सनाथ, और कहां जाऊं ॥ ४ ॥

पद ६.

जै जै गौरांग उदारा ॥ बंदौं पद बारंबारा ॥ धृ० ॥

शचि सुवन अजब छवि धारी ॥ क्या मोहिनि मूरति प्यारी ॥ चरणोंपे तन मन वारा ॥ वंदौं० ॥ १ ॥ गौरेन्दु वदन द्युति न्यारी ॥ उपमा शोधत मतिहारी ॥ वह रूप अनूपम न्यारा ॥ वंदौं० ॥ २ ॥ लोचन भ्रुभाल विशाला ॥ कर दंड कमंडलु माला ॥ वैराग्य भक्ति वपुधारा ॥ वंदौं० ॥ ३ ॥ श्रीकृष्ण नाम मुख राजे ॥ मोहिनि मूरति उर भ्राजे ॥ झूमत आवे मतवारा ॥ ॥ वंदौं० ॥ ४ ॥ प्रभु पतितपाल करुणाकर ॥ महिमंडल धर्म दिवाकर ॥ जीवोद्धारण व्रतधारा ॥ वंदौं० ॥ ॥ ५ ॥ नहिं शरणागत कोई छोडा ॥ भव बंधन सबका तोडा ॥ करदिया वन्द जम द्वारा ॥ वंदौं० ॥ ६ ॥ जो गौड़ देश बंगाला ॥ जहँ मोहनि मंत्र उजाला ॥ उसका परचारन वारा ॥ वंदौं० ॥ ७ ॥ जिस ओर दृष्टि प्रभु डारी ॥ नर नारी सुरत विसारी ॥ श्रीकृष्ण नाम उच्चारा ॥ वंदौं० ॥ ८ ॥ जिन स्पर्श किया चरणों का ॥ मिटगया द्वंद दुख धोका ॥ पाया रस भक्ति अपारा ॥ वंदौं० ॥ ९ ॥ गुरुदेव दया अब कीजै ॥ अस भक्तिदान मोहिं दीजै ॥ लख चकित होय जग सारा ॥ वंदौं० ॥ १० ॥ तुम प्रमुख पूर्वज साईं ॥ क्षमिये अपराध गुसांई ॥ मैं मूरख बाल तुम्हारा ॥ ॥ वंदौं० ॥ ११ ॥ नहिं कुपुत्र को पितु माता ॥ तज

देते हैं सुखदाता ॥ वैसा है हाल हमारा ॥ वंदौं० ॥ ॥ १२ ॥ करनीकर यदि कुछ पाया ॥ तन मन को नित्य तपाया ॥ फिर क्या अवलंब तुम्हारा ॥ वंदौं० ॥ ॥ १३ ॥ नहीं किया न कुछ करता हूं ॥ दिन रात पड़ा सोता हूं ॥ तुमपै है भरोसा सारा ॥ वंदौं० ॥ ॥ १४ ॥ गुरुजनकी वडी कमाई ॥ वलवंत मुफ्त में पाई ॥ क्या अद्भुत भाग्य हमारा ॥ वंदौं० ॥ १५ ॥

पद ७.

जग मोहन मन सोहन मोहिनि, अखिल विश्व जो भरै ॥ सोद मंगल दासन कहँ करै ॥ १ ॥ परा शक्ति अव्यक्ति चराचर के अंतर संचरै ॥ बुद्धि तम-तोम तरणि सम हरै ॥ २ ॥ भक्त जनन की जीवनि सोई दयाभाव उर धरै ॥ दुःख दारुण दासन के हरै ॥ ३ ॥ वार वार वलवंत विनय करि सीस कमल-पद धरै ॥ मात रसनासों सुधारस झरै ॥ ४ ॥

पद ८.

जै जै वृषभानुसुता, भक्त त्रातु मातु तुहीं, त्रिभुवन विख्यात जक्त, पापतापहारी ॥ ध्रु० ॥ धेनुद्विजन दुःख-

हरण, अखिल विश्व श्रेयकरण, तरुणतरणितेजवरण, किरणावर पसारी ॥ १ ॥ ब्रह्मादिक वंद्य चरण, सकल विश्व पोषकरनि, हरनि अघ अनंत संत, मुनि वरन विचारी ॥ २ ॥ मांगत बलवंतराव, कृष्ण कमलचरण चाव, बाढे नव नित प्रभाव, कीर्ति कुँवरि प्यारी ॥ ३ ॥

पद ९.

वंदे नंदकुमारं, श्रुतिसारम् ॥ धृ० ॥ नवनीरदसरस-द्युतिसुन्दर वर पीताम्बरधारम् ॥ मत्तमयूरपिच्छमुकुटच्छवि परिरंभितकचभारम् ॥ १ ॥ चंचल लोचन युगलांचलजित पंचबाणशर जालम् ॥ मृदुल कपोल चलन्मणिकुण्डल कुंकुमरंजितभालम् ॥ २ ॥ परम कृपालु मनोहर मंगल सकलकलैकनिधानं ॥ श्रीराधाभिधनिजसर्वस्वं वामांके विदधानम् ॥ ३ ॥ मुरलीमंजुलरवतरलीकृतगोपवधूनिकुरंबम् ॥ असित प्रेमरसवर्ष हर्षभरपुलकितभक्त कदंबम् ॥ ४ ॥ मुनिमानसचातकसंतर्पण चारु चरित्रमपारम् ॥ शरणागतकरुणावरुणालयमगणितगुणैरुदारम् ॥ ५ ॥ मामपि दिव्यनित्यदंपतिपदसेवाधृताभिलाषम् ॥ दीनमत्रबलवंतमेकदा पश्य दृशा निजदासम् ॥ ६ ॥

पद १०.

जागो मोहन जागो श्याम, जागो माधव हे सुख-धाम ॥ १ ॥ जागो कृष्ण दनुजदलघालक, जागो धर्म-विरदप्रतिपालक ॥ २ ॥ जागो वाल पूतनाहारी, जागो सकटासुरसंहारी ॥ ३ ॥ जागो देव तृणासुरत्रासक, जागो गुपाल बकासुरनाशक ॥ ४ ॥ जागो केशव केशि-निकंदन, जागु गुविंद अघासुरखंडन ॥ ५ ॥ जागो चाणुरखलबलगंजन, जागो कंसअसुरमदभंजन ॥ ६ ॥ धर्मको नाश होत गिरधारी, आवो वेगि सुदर्शन-धारी ॥ ७ ॥ धर्म के एक तुम्हीं रखवारे, कर विनती वलवंत पुकारे ॥ ८ ॥

अष्टपदी ११.

जय जय जय जगदीश हरे ॥ धृ० ॥ हे जगवंदन कंसनिकंदन, दुखदलगंजन मोद करे ॥ १ ॥ धर्म उधारक संतनपालक, भवभयहारक विश्वभरे ॥ २ ॥ सुमिरत जान अजान नाम तव, संकट कठिन कलेश टरे ॥ ३ ॥ सुनहु विनय वलवंत दासकर, कहत नाथ पद सीस धरे ॥ ४ ॥ यह कराल कलिकालजाल में, धर्म धेनु द्विज आनि परे ॥ ५ ॥ तुम्हरी ओर निहारि

कृपानिधि, व्याकुल विलपत हैं सगरे ॥ ६ ॥ धर्महेतु नरदेह धारि हरि, जुग जुग प्रति सब कष्ट हरे ॥ ७ ॥ अति विकराल काल जग छायो प्रगटो प्रभु कर चक्र धरे ॥ ८ ॥

अष्टपदी १२.

द्रवहु दयानिधि यदुराई ॥ दनुजदलन खलमलन कलुषकुलदहन धर्महित चितलाई ॥ धृ० ॥ कलिमल-जलधिकलोल अमंगल प्रबलबढी बहु दुखदाई ॥ १ ॥ शुचि श्रुतिसेतु ससंकित कंपित व्यथित संतगण अकुलाई ॥ २ ॥ सुरकुलमंडन असुरनिखंडन, पाखंडिन दंडन राई ॥ ३ ॥ तव कीरति जगतारक तरणी, भवसरितातट लरखाई ॥ ४ ॥ लोभसुरामदअंध मंद जन, नहीं नीति-पंथ दिखराई ॥ ५ ॥ दारिद दलित दशादेशन की, धरा-धान्य नहिं उपजाई ॥ ६ ॥ बिन जीवन जिमि मीन दीन तस, हीन दशा जन समुदाई ॥ ७ ॥ हे अनंत भगवंत करो बलवंत कृपा जग सुखदाई ॥ ८ ॥

अष्टपदी १३.

सुनिये दीनदयाल धर्मप्रतिपाल, धर्महित तनु धारी ॥ १ ॥ संकट विकट कठोर घोर चहुँ ओर परो अब

गिरधारी ॥ २ ॥ धर्म दिवाकर वदन दुरायो, छाई दश दिशि अँधियारी ॥ ३ ॥ श्रीगोपाल गोपकुलमंडन धर्म धेनु कहँ उद्धारी ॥ ४ ॥ अज्ञान-कंटकवन घन बाढ़ो, सत पथ दुर मोच्चकारी ॥ ५ ॥ अनाचारआचारविचारन, करे न कोऊ मतिधारी ॥ ६ ॥ श्रुति पुराण इतिहास विनासे, लुप्त भये आश्रम चारी ॥ ७ ॥ काल मान बलवंत बिलोकत, रहे संतजन हियहारी ॥ ८ ॥

अष्टपदी १४.

हे श्री माधव धाउ मुरारी, कंसारी संकटहारी ॥ ॥ ध्रु० ॥ सहत तिमिर किल्मिष बल छायो, दुरी शास्त्र शशि उजियारी ॥ १ ॥ चतुर्वरण वर धर्म विनासे, भया वर्णसंकर भारी ॥ २ ॥ सबके अंग अनंग प्रचारो, भये नारि नर व्यभिचारी ॥ ३ ॥ लुप्त भये सब धर्म सनातन, कुल मर्याद मिटी सारी ॥ ४ ॥ जिन जनपर आधार धर्मको, तिनहिं अधर्मध्वजा धारी ॥ ॥ ५ ॥ लागी बाड खेतको खावन, कौन करै फिर रखवारी ॥ ६ ॥ देखि विलक्षण गती कालकी, सुमती रहे मौन धारी ॥ ७ ॥ वाट तकत बलवंत एकटक, होत अबेर गदाधारी ॥ ८ ॥

अष्टपदी १५.

श्रीहरि परमकृपाला, मंगलमूल असंगलनासन अखिलविश्व प्रतिपाला ॥ धृ० ॥ सुठि शुचि सरस सरूप सुखद अति, विदितविश्व तिहुं काला ॥ १ ॥ अविरलअमल सरल गुणगाथा, गावत संत रसाला॥ २ ॥ अघवन दहनकृशानु धर्म कर, भानु ईश अविनाशी ॥ ॥ ३ ॥ प्रणतपाल प्रणपाल कृपानिधि, सकलकला-वलरासी ॥ ४ ॥ सच्चितघन आनंदकंद, बृजचंद करौ मत हांसी ॥ ५ ॥ कह कौतुक निरखतहौ लागत, धर्मधेनु गलफांसी ॥ ६ ॥ सतसंगति जो मूरि सजी-वनि, सहितमूल सो नासी ॥ ७ ॥ कहत विनय बलवंत जोर कर, कृपा करो अविनासी ॥ ८ ॥

अष्टपदी १६.

कलिमलमूल कठिन जारौ, दीनबंधु दुखदुरित-विदारन, धर्महेतु हरि अवतारौ ॥ धृ० ॥ कलित ललित अति मृदुल मीनवपु, कृत चरित्र अद्भुत भारौ ॥ श्रुति-निधि मणिगुण ज्ञान अलौकिक, प्रलय उदधि मधि उद्धारौ ॥ १ ॥ कमठकाठिनपृष्ठोपर सुंदर, मंदरागिरि हरि परिचारौ ॥ रत्न चतुर्दश कर्ष हर्षयुत, विबुधसमाज

काजसारौ ॥ २ ॥ करिवरवेश वराह भयावन, श्रृंगनि भार धरा धारौ ॥ भूरि भयंकर नरहरि तनुधारि, नखन उदर दानव फारौ ॥ ३ ॥ वामन विमल विप्र वनि श्री-पति, वलि छलि सुरसंकट टारौ ॥ वार त्रिसप्त निक्षत्रि महीकरि, सूर समूह गर्व गारौ ॥ ४ ॥ रघुकुलमंडल मंडन धृत वपु, कृत खंडन खल दलसारौ ॥ एकवचन इकबाण वामइक, दुरधर दशकंधर मारौ ॥ ५ ॥ उदये यदुकुल कमलकलानिधि, प्रेमपंथ प्रभु संचारौ ॥ खलदल खंडि धर्ममंडन करि, कंस कुटिल भट संघारौ ॥ ६ ॥ परम दयालु विशुद्ध बौद्ध वपु, करि स्वीकृत जस विस्तारौ ॥ कल्कि कलेवर धारि सकल, भूभार टारि सब जग तारौ ॥ ७ ॥ धर्महानि लखि देह धरों दुखहरों यह श्री मुख उच्चारौ ॥ सो बलवंत वचन करि पूरण, धर्मधेनु दुख निरवारौ ॥ ८ ॥

अष्टपदी १७.

श्रीराधे पदपंकज सिरधरि विनय विनीत सुनाऊं ॥ धृ० ॥ दास दौर देवी तुमही लौं, और कहां अब जाऊं ॥ १ ॥ जो कछु धर्मऽरु देशदशा भइ, तुम जानत कह गाऊं ॥ २ ॥ होय भाग्य बस जो कछु

जग में, सो दुख चित नहिं लाऊं॥३॥ ये न भलो लागे लोगन यह, पुनि पुनि कहत लजाऊं॥४॥ दीनदशा असहाय होय जहँ, तुम रानी वे राऊं॥५॥ जो जन विपति न कहहुँ स्वामि सों, तो अब अंत न ठाऊं॥६॥ सब संतन की इती विनंती, कहि पद सीस नवाऊं॥७॥ करौ कृपा वलवंत स्वामिनी, यह अभिमत फल पाऊं॥८॥

अष्टपदी १८.

हे हरि अवढर दानी॥धृ०॥ देव दयाकर भयहर शुभकर सव उर अंतरज्ञानी॥१॥ सत्य होय यदि मम अभिलाषा, तौ करुणा उर आनी॥२॥ कृष्ण कृपाघन पूरण कीजै, आतुरता पहिचानी॥३॥ दुःसह भयो स्वदेशधर्म दुख, अब नहिं जाय वखानी॥४॥ ज्यों शिशु क्षुधित मात मग जावे, सांझ समय जिय जानी॥५॥ तस अब नाथ तकत तव मारग, संत ऋषी मुनि ज्ञानी॥६॥ विमल नलिन लोचन दुख मोचन, त्रिभुवन पति बल खानी॥७॥ अब वलवंत विलंब न कीजै, होत धर्म जग हानी॥८॥

पद १९.

यहि हित आयो शरण तुम्हारी ॥ धृ० ॥ विन मध्यस्थ स्वामिनी तुम्हरे, सुनिहै कौन हमारी ॥ जहं निसदिवस नौवतें वाजें, तूती कहा विचारी ॥ १ ॥ अति कोमल चित परम कृपाला, श्रीवृषभानुकुमारी ॥ कोउ विधि विनय स्वामिसों हमरी, कहिये राज-दुलारी ॥ २ ॥ नहिं आधार धरा संतन को, छई दिसन दश अंधियारी ॥ अव वलवंत विलंब न कीजै, द्वारे कहत पुकारी ॥ ३ ॥

पद २०.

कवलों रहौ योगनिद्रा में, जागो धर्मध्वजाधारी ॥ धृ० ॥ करत पुकार सन्तमंडल सव, वार वार पद सिरधारी ॥ १ ॥ शंभु स्वयंभु स्वभू मुनि गणवर, कहत धर्म हित चितधारी ॥ २ ॥ अवकी वेर अवेर भई, वलवंत मौन धारौ भारी ॥ ३ ॥

पद २१.

कैसे ठाड़े हो धारि मौन गोपाला ॥ विन कहे वनै नहिं काज आज नँदलाला ॥ धृ० ॥ है नाम तुम्हारा

धर्मपाल श्रुतिलेखो ॥ क्या हुई धर्मकी दशा जरा तो देखो ॥ द्विज धेनु संतजन विकल रहत दिनराती ॥ लखि देशदशा अरु धर्म धड़कती छाती ॥ आया है धर्मपर संकट कठिन कराला ॥ १ ॥ त्यागो अब मोहन मौन काम है भारो ॥ डूबत नय्या मझधार धर्मकी तारो ॥ धरि जुग जुगमें अवतार धर्म उद्धारो ॥ दुष्टनको करि संहार भार भू टारो ॥ कसि फेंट गरुड़ तजि धावहु दीनदयाला ॥ २ ॥ आ पड़ी धर्मपै चोट बड़ी अटपटकी ॥ सटकी सबकी मति लखिगति, समय विकटकी ॥ सब रहे देखते लोग, सके नहिं हटकी ॥ घटगे सब पुण्य प्रताप, आपसों अटकी ॥ भइ प्रगट नाथ अब जग, अधर्मकी ज्वाला ॥ ३ ॥ भटकी सब जगहों तुम जानत घट घटकी ॥ रख लीजो लाज महाराज, धर्म संकटकी ॥ प्रणपूरण अपनो करौ, सबन जिय खटकी ॥ बलवन्त शरण अब लीन्ही, नागरनटकी ॥ अब धर्म धेनु आ फँसी, भयंकर जाला ॥ ४ ॥

पद २२.

हे प्रभु परम सुजान कान्ह भगवान कृपा गुण-खानी ॥ धृ० ॥ तुमसों कहा दुराव दयानिधि, अन्तर-

गतिविज्ञानी ॥ १ ॥ नहिं धनधरनीधामकामना, प्रभुता बल जग जानी ॥ २ ॥ केवल धराधर्मवृद्धीहित, हिय अभिलाष समानी ॥ ३ ॥ सो बलवंत आस अब पूरण, करिये अवढर दानी ॥ ४ ॥

पद २३.

भज मन कृष्णहरे, कृष्णहरे, कृष्णहरे ॥ रामहरे, रामहरे, रामहरे, श्यामहरे ॥ धृ० ॥ तिहुंपुर मध्य नाम इकसाधन, सब भव व्याध अगाध हरे ॥ १ ॥ अष्टसिद्धि नवनिद्धि सुखप्रद, किल्मिष कोटिन जन्म टरे ॥ २ ॥ जान अजान भजत हरि नामहिं, संकट कठिन कलेश जरे ॥ ३ ॥ मंगल मोद भई जग सारो, जिन सुमिरन हरि नाम धरे ॥ ४ ॥ निरखि निरखि पद पद्म दंपतिहि, रहत मोद बलवंत भरे ॥ ५ ॥

पद २४.

हरे कृष्ण जय राम कृष्ण, भज पुरुषोत्तम नरसिंह हरी ॥ धृ० ॥ मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, मुरलि मनोहर अधर धरी ॥ १ ॥ प्रणतपाल भक्तनके हित हरि, लीला जगमें विविध करी ॥ २ ॥ व्याध गीध गज आदि उधारे,

गणिका सुमिरत नाम तरी ॥ ३ ॥ भये सुचित बलवन्त नाथके, चरणकमलपै सीस धरी ॥ ४ ॥

पद २५.

जय जय केशव जय नारायण, जय माधव गोविंद हरी ॥ धृ० ॥ देवकिनंदन दनुजनिकंदन, त्रिभुवनवंदन कुशलकरी ॥ १ ॥ गोपिनरंजन खलमदगंजन, भयभ्रम-भंजन मोदकरी ॥ २ ॥ सब जगनायक सब दुखदायक, भवबाधा बलवंत हरी ॥ ३ ॥

पद २६.

हरे राम हरे राम हरे राम हरे, भज मन निस दिन प्यारे ॥ धृ० ॥ नाम लेत मंगल दस दिसहूं, पापसमूह हरे ॥ १ ॥ सुमिरत जान अजान जाहि जन, संकट कठिन टरे ॥ २ ॥ सुख अनंत बलवंत ऊपजे, चातक रटन धरे ॥ ३ ॥

पद २७.

हरये नमः हरये नमः हरये नमः ॥ कृष्ण यादवाय नमः ॥ धृ० ॥ गोपाल, गोविन्द, श्रीराम, मधुसूदन ॥ १ ॥

वृजपाल, जनपाल, नतपाल, जगवंदन ॥ २ ॥
नंदलाल, सुरपाल, प्रणपाल, खल गंजन ॥ ३ ॥
श्रीराम, सुखधाम, घनश्याम, मन मोहन ॥ ४ ॥

पद २८.

हरी हरये नमः, कृष्ण यादवाय नमः॥ हरी हरये-नमः ॥ धृ० ॥ गोपीनाथ, गोपी वल्लभ, गोपी जन मन हरणा ॥ यादवनाथ, अद्भुत गाथ, गोपी जन जीवना ॥ हरी हरये नमः ॥ १ ॥ कृष्णाय, रामाय, गोविंदायनमः॥ यादवाय, माधवाय, गोपालायनमः॥ हरी हरये नमः ॥ २ ॥

पद २९.

भजु मन गोविंद गोविंद श्री गोपाल ॥ धृ० ॥ वासुदेव दामोदर माधव, श्रीमुकुंद नंदलाल ॥ १ ॥ वदन इंदु कंदर्प दर्प दलि, मृगमद चरचित भाल ॥ २ ॥ सीस मुकुट कर लकुट भेष नट, अधरन वेणु रसाल ॥ ३ ॥ कटि तटि पीत पाट पट सुंदर, उर विशाल वनमाल ॥ ४ ॥ वाम भाग वृषभानु नन्दिनी, रूप रासि जनपाल ॥ ५ ॥ सुरभि समूह गोप

गोपी गण, लिये संग बृजपाल ॥ ६ ॥ छवि अनूप बल्लवंत विलोकत, अंखियां भईं निहाल ॥ ७ ॥

पद ३०.

गोपाल कहो, गोविंद कहो, नंदलाल कहो, जगपाल कहो, अखंड आनँद सुःख लहो ॥ धृ० ॥ श्रीगोपीनाथ गदाधर गोवर्द्धन धारी ॥ मन मोहन मदन गोपाल श्याम जनसुखकारी ॥ जो मुक्ति चहो, कृष्ण कृष्ण दिन रैन कहो ॥ १ ॥ घनश्याम सदा सुखधाम ब्रह्म बृज बन चारी ॥ केशव हरि कमलाकांत राधावर बनवारी ॥ बल्लवंत भजो, हरि परमानंद निमग्न रहो ॥ २ ॥

पद ३१.

जै कृष्ण कृष्ण गोपाला, गोवर्धन धर नँदलाला। ॥ धृ० ॥ गोविन्द मुकुन्द मुरारी, बनवारी कुंजविहारी ॥ मनमोहन वंसीवाला ॥ जै कृष्ण कृष्ण गोपाला ॥ १ ॥ माधव मोहन घनश्यामा, मुनिजन मानस विश्रामा ॥ करुणाकर दीनदयाला ॥ जै कृष्ण० ॥ २ ॥ सच्चित आनंद गुणग्रामा, संकर्षण हरि सुख धामा ॥ परमेश्वर परमकृपाला ॥ जै कृष्ण० ॥ ३ ॥ यदुवंस

वनज वन भानू, खल कानन दहन कृशानू ॥ श्रुति धर्म शत्रु उर शाला ॥ जै कृष्ण० ॥ ४ ॥ राधे मुख चन्द्रचकोरा, श्रीगोपीजन चितचोरा ॥ राधे मन सरसि मराला ॥ जै कृष्ण० ॥ ५ ॥ राधेवर रासविलासी, वृजचंद्र द्वारिकावासी ॥ जगदीश भक्त प्रतिपाला ॥ जै कृष्ण० ॥ ६ ॥ कर लकुट मुकुट सिरधारी, कांधे वर कामरि कारी ॥ संग सुरभिवृंद वृजवाला ॥ जै कृष्ण० ॥ ७ ॥ कटि तट पीताम्बर भ्राजे, मणि कौस्तुभ कंठ विराजै ॥ क्या अनुपम रूप निराला ॥ जै कृष्ण० ॥ ८ ॥ खग गज गणिका उद्धारी, दीनोद्धारन व्रत धारी ॥ तिहुं लोक सुयश उजियाला ॥ जै कृष्ण० ॥ ९ ॥ भवसिन्धु भयंकर भारी, बिन श्रम उतरैं नरनारी ॥ चढि नाम नाव तत्काला ॥ जै कृष्ण० ॥ १० ॥ पीपी के रूप रस प्याला, बलवंत हुआ मतवाला ॥ गावत गोविन्द गुण माला ॥ जै कृष्ण० ॥ ११ ॥

पद ३२.

जिन कृष्ण का नाम सनेह लिया, तिन साधन और क्रिया न किया ॥ धृ० ॥ जिन पिया सदा सुर-सरित नीर, तिन कूप का नीर पिया न पिया ॥ १ ॥

जिन ने प्रभु भक्ति धरी न हिये, सो नर तनु धारि जिया न जिया ॥ २ ॥ जिनके उर मांझ दया न बसी, तिन दान अनेक दिया न दिया ॥ ३ ॥ बल-वंत भये प्रभु के जन जे, तिन और का शरण लिया न लिया ॥ ४ ॥

पद ३३.

श्रीकृष्णचंद्र कृपालु स्मर नित, घोर भवभय-भंजनम् ॥ धृ० ॥ मुखइंदु मृगमद बिंदु गुण, गण-सिंधु राजिवलोचनम् ॥ वर मुकुट मस्तक पीत पट कटि, तड़ित द्युति मदमोचनम् ॥ १ ॥ वामांग विल-सत शक्ति सुख, सौभाग्यप्रद जगजीवनम् ॥ द्युति देह दंपति जोति प्रजुलित, कोटि स्मरमदमर्दनम् ॥ ॥ २ ॥ पदकंज सब सुखपुंज मुनि मन, मधुप निस-दिन गुंजनम् ॥ बलवंत हृदय निवास कृत भ्रम, भूरि भव भय भंजनम् ॥ ३ ॥

पद ३४.

भजो मन निस दिन राधे श्याम, सच्चित घन ग्सुख धाम ॥ धृ० ॥ अभिमतफल बरदायक सबको,

मुनिजन मनविश्राम ॥ १ ॥ कृतआदिक में तप मख पूजन, कलियुग तारक नाम ॥ २ ॥ धन्यधन्य बलवंत जगतजन, रटैं जे आठहु जाम ॥ ३ ॥

पद ३५.

इक नाथ नाम आधारा ॥ भव बंधन भंजन हारा ॥ धृ० ॥ चातक सी रटना धारी ॥ लग गई सहज में तारी ॥ बरसे अमृत की धारा ॥ १ ॥ संबंध जीव का सारा ॥ हरि नामहिसों निरधारा ॥ नहिं कोई प्रभुहि निहारा ॥ २ ॥ जिन नाम कवच तन धारा ॥ फिर जम है कौन विचारा ॥ बलवन्त यही है सारा ॥ ३ ॥

पद ३६.

शामके घर जाये हमदास ॥ धृ० ॥ हमको कौन काम की चिन्ता, कल्प तरू तलवास ॥ १ ॥ निरखत रहत जुगल पद पंकज, मगन सदा सुखरास ॥ २ ॥ राखेंगी वृषभानु नंदिनी, सब विधि दृढ़ विश्वास ॥ ३ ॥ औरन सों अब काम कहा है, श्रीपद नातो खास ॥ ४ ॥ अब बलवंत आसरो पायो, भय भ्रम रह्यो न पास ॥ ५ ॥

पद ३७.

हमारो जीवन दंपति पायँ ॥ धृ० ॥ बिछुरत विकल होत जिय भारी, सुख होवत उर आयँ ॥ १ ॥ पादपद्म मधु चिन्मय निस दिन, चाखत नाहिं अघायँ ॥ २ ॥ मगन रहत बलवन्त निरखि छबि, वार वार बलि जायँ ॥ ३ ॥

पद ३८.

राजत श्याम राधिका जोरी ॥ धृ० ॥ नवल छवी अद्भुत त्रिभुवनते, लखि दृग सफल करोरी ॥ १ ॥ नीरद नील स्वामि द्युति सोहत, निपट स्वामिनी गोरी ॥ २ ॥ दंपति जस बलवन्त बखानत, वार वार कर जोरी ॥ ३ ॥

पद ३९.

जुगल छबि निरखत नैन सिरांय ॥ धृ० ॥ कोटि मदन छबि छटा मनोहर, सो कस बरनी जाय ॥ १ ॥ बाल वचन बलवन्त श्रवण करि, स्वामिन मन मुसक्याय ॥ २ ॥

पद ४०.

श्रीराधा माधव पद पंकज, भज मन त्यज जग दुखदाई ॥ धृ० ॥ तिहिं पराग मकरन्द अनूपम, भवके भ्रमरन नहिं पाई ॥ १ ॥ जाने कहा पंक को कीटक, चिन्मकरंद मधुरताई ॥ २ ॥ जब लग रहे न मन जग बाहिर, आनँद स्वाद न दरसाई ॥ ३ ॥ लागो रहे चरण चित जब लग, जग की सुधि न सकत आई ॥ ज्ञान तत्त्व बलवन्त यही है, किये प्रतीत होय भाई ॥ ४ ॥

पद ४१.

अति सुन्दर मनमोहनि मूरति, आज श्यामछबि भली बनी ॥ धृ० ॥ रूपसिंधुकरुणामय स्वामी, तीन लोक के एक धनी ॥ १ ॥ कुटिल लटा लटकें मुख ऊपर, भवें कमानसमान तनी ॥ २ ॥ भाल विशाल कमलदल लोचन, तापर कजरा रेख अनी ॥ ३ ॥ अब बलवन्त विमल प्रभुके यश, वरणत बानी प्रेम सनी ॥ ४ ॥

पद ४२.

वांकी छवि वांके बैन, अदा वांकी प्यारी ॥ बलि-हारी श्याम, कोटि काम नखपै वारी ॥ धृ० ॥ वांकी मुख लटकें लटा, मुकुट छवि मनहारी ॥ १ ॥ वांकी वर वेणु रसाल, अधर वरपै धारी ॥ २ ॥ बलवन्त सदा यह वांकी, छबिपै बलिहारी ॥ ३ ॥

पद ४३.

क्या बनी मनोहर छवी आज बनवारी ॥ तिहुँपुर सों सुन्दर परी अमल उजियारी ॥ धृ० ॥ शिर लसत जटित मणि मुकुट लकुट कर धारी ॥ श्रुति कुंडल मणिमय लोल कपोल विहारी ॥ १ ॥ कच कुंचित रति पति जनु गुहि फंद डारे ॥ जिहिं माधि विहंगमन उरझि न सुरझन हारे ॥ २ ॥ वर बिथुरी अलक रसाल लटें घुंघरारी ॥ आनन मयंक विन अंक देह द्युति न्यारी ॥ ३ ॥ सुठि सघन बंक भ्रकुटी विशाल अनियारी ॥ युग मध्य विमल तिलविन्दु मदन मन-हारी ॥ ४ ॥ नवरसके सागर नैनन माँझ दुराये ॥ पलकन पट सों कछु दुरे कछुक दरसाये ॥ ५ ॥

नासिका सरल सुन्दरतासीम दिखाई ॥ जहं विहरत निसदिन विश्वप्राण हरषाई॥ ६ ॥ द्युतिदशन लसन मुक्तापंक्ती छबि छीनी ॥ तन पै योवनको भार मसें कछु भीनो ॥ ७ ॥ रद पुट संपुट मधि शोभा सकल दुरानी ॥ मुसक्यान माधुरी द्वार कछुक दरसानी ॥ ८ ॥ गुहि सुंदरताकी गैंद चिबुक शुचि खानी ॥ जहं तिल छल बैठा मार मती सकुचानी ॥ ९ ॥ कल कंठ महा छबि भवन मनोहर राजे ॥ बनमाल गरे उर श्री वत्सांक विराजे ॥ १० ॥ सोहत शुचि नाभि गँभीर मनहु मन्मथ सर॥ लिपटो पट पाट सुपीतकेहरिकटि सुन्दर ॥ ११ ॥ कर चरण चारु शोभा रश्मी प्रगटानी॥ लावण्य दिवाकर उदित भयो जग जानी ॥ १२ ॥ वलवँत जहां सब उपमालागत झूंटी ॥ सोई रूप-सांवरो है टूटी की बूंटी ॥ १३ ॥

पद ४४.

अति प्यारी मोहि लागे राम, मूर्ति श्री गिरधारी ॥ धृ० ॥ मोर मुकुट सिर लकुट ललितकर, धुनि वेणू सुखकारी ॥ भ्रकुटी कुटिल कटीले लोचन, नासा शुक छवि हारी ॥ १ ॥ दशन पंक्ति मुक्तावलि सुन्दर

अधर छटा अरुणारी॥ चिबुक चारु मन्मथ मद मर्दन कंठ कम्बु द्युति भारी ॥ २ ॥ उर विशाल वनमाल बिराजे, कांधे कामरि कारी ॥ कटि पट पीत हरत द्युति दामिनि, कोर टकी जरतारी॥ ३ ॥ गो गोपाल बाल संग सोहैं, वृंदा विपिन विहारी॥ निरखत छवि बलवन्त मगन मन, वार बार बलिहारी ॥ ४ ॥

पद ४५.

परम माधुरी हरि मूरति, तू देखी री ॥ धृ० ॥ सुन्दर तनु आभा घनश्याम, शरद इंदु मुख सब सुखधाम ॥ लोचन कंज चारु अभिराम, मेरो मन विश्राम श्याम, तू देखी री ॥ १ ॥ मौक्तिक नासा अग्र सुहाय, अधर बिम्ब फल छबि दरसाय ॥ पीत पाट पट कटि मन भाय, बनसी विपिन बजाय गाय, तू देखी री ॥ २ ॥ सकल कला विद्या गुण खान, नेह निवाहक सूर सुजान॥ रसिक शिरोमणि रूप निधान बलवंत जीवन प्राण कान्ह, तू देखी री ॥ ३ ॥

पद ४६.

बेचैन हुआ दिल भूली मति गति मेरी ॥ जबसे देखी है झलक सांवरे तेरी ॥ धृ० ॥ वह चांदसा

मुखड़ा खिले कमलसे लोचन ॥ दुखद्वंद निवारण पूर्ण प्रीति रस पोषण ॥ १ ॥ नासिका अग्र लोलक अनमोल सुहावे ॥ दिल देखि मदन का सौ सौ झोंके खावे ॥ २ ॥ कटि सोहे पीत पट जनु दामिनि उजि-यारी ॥ हीरा करधोनी लटक रही मन हारी ॥ ३ ॥ बलवन्त प्रीति की छटा है सब से न्यारी ॥ सूरत पर तेरे वार वार बलिहारी ॥ ४ ॥

पद ४७.

पीपी के माधुरी सुरस मगन रहते हैं ॥ नहिं स्वर्ग और अपवर्ग चाह करते हैं ॥ धृ० ॥ हे नाम सुधा से मधुर चखा करते हैं ॥ इक तेरे भरोसे निडर रहा करते हैं ॥ १ ॥ कभी विरह ताप की तपन विकल रोते हैं ॥ कभि पाद पद्म जुग निरखि मुदित होते हैं ॥ २ ॥ बलवन्त सन्त इस ढंग जिया करते हैं ॥ सब आयु समर्पण श्रीहरि को करते हैं ॥ ३ ॥

पद ४८.

रे मन मानु विहरि वृन्दावन ॥ धृ० ॥ सर्व काल सौभाग्य सुखद लखि, लोगन लघु लागत बासव

वन ॥ १ ॥ धरणि धन्य गिरधर पद चिन्हित, तहं सुरभीं नित चरत हरित तृन ॥ २ ॥ वलित वेलि कुसुमित तरु पुंजन, कुंजन मंजु तमाल कदंबन ॥ ३ ॥ कूल कलिंद नंदिनी के वर, पुलिन पवन वहि सनित सुगन्धन ॥ ४ ॥ परम पुरुष वलवंत निरन्तर करत केलि जंह धारि मनुज तन ॥ ५ ॥

पद ४९.

क्या मोर मुकट मुरली वाले की छवि है ॥ जो चाहे देखलो इस मूरत में सव है ॥ १ ॥ नापा तो साढे तीन हाथ का क़द है ॥ देखा तो भुवन समूह भरा वेहद है ॥ २ ॥ सर्गुण निर्गुण दोनों की साफ़ झलक है ॥ लखते हैं इसी को औ फिर यह ही अलख है ॥ ३ ॥ माता को मुख में विश्व देखि अचरज है ॥ वही वाल वंधा ऊखल से खिलाड़ी धज है ॥ ४ ॥ नैनों में गोपियों के वही वसा मदन है ॥ वही कंस कुटिल को दरसा काल कठिन है ॥ ५ ॥ यह चिदानंद ज्ञानी के चिंतन में है ॥ जो परम लोक बासी परमेश्वर है ॥ ६ ॥ आशिक को क्या इन झगड़ों से मतलव है ॥ वलवंत तुम्हें यह सूरत भाई बस है ॥ ७ ॥

पद ५०.

सांवलिया साहु हमारा ॥ सुख संपत लही अपारा ॥ धृ० ॥ मन माना सुख लेते हैं, जो जी चाहा देते हैं ॥ क्या राज काज सुतदारा, सांवलिया साहु हमारा ॥ १ ॥ जो नहीं भाग्य में लेखा, लिखते हैं वहही रेखा ॥ ऐसे हैं संत उदारा, सांवलिया० ॥ ॥ २ ॥ जो हुंडी संत करी है, नहिं अबलों कभी फिरी है ॥ ऐसा है साहूकारा, सांवलिया० ॥ ३ ॥ जब मन का कांटा तोला, अन्दर का खजाना खोला ॥ फिर नहीं देन का पारा ॥ सांवलिया० ॥ ४ ॥ बलवंत भरोसा भारी, नहिं और सिवा गिरधारी ॥ होवे जो निश्चय धारा ॥ सांवलिया० ॥ ५ ॥

पद ५१.

जो भजन भक्ति की रीति संत जन गाई, मैं निज मति के अनुसार कहों समुझाई ॥ धृ० ॥ सीधी है बात पर नहीं समझ में आवे, बिन शुद्ध हुये मन नहीं तत्व को पावे ॥ १ ॥ रज तम को घटादे सत्-गुण हिये वढाकर ॥ एकांत बैठि निशि दिन हरि-नाम जपाकर ॥ २ ॥ सतूगुण है चित का शोधक

जैसे दिवाकर ॥ कफ वात वैद्य ज्यों घटाय पित्त बढ़ाकर ॥ ३ ॥ ज्वरदोष घटे बिन स्वाद अन्न नहिं आवे ॥ बिन शुद्ध हुये मन नहीं भजन सुख पावे ॥ ४ ॥ बिन समय परे के नहीं बीज जमता है ॥ निःशांति इकांत में भजन खूब बनता है ॥ ५ ॥ है कृपादेश करनी का क्या चलता है ॥ स्वामिनी कृपा से रंक शव होता है ॥ ६ ॥ नहीं कर्ज किसी का श्रीहरि पर आता है ॥ है स्वतंत्र जिससे खुश हो उसे देता है ॥ ७ ॥ विश्वास प्रेम नहिं बाहर से आता है ॥ धोने से रातदिन मन का अब्र खुलता है ॥ ८ ॥ सुनते हैं रोज पर निश्चय नहिं आता है ॥ बलवंत इसी का बहुत बड़ा घाटा है ॥ ९ ॥

पद ५२.

खुली समाधि लगावे, देखो खुली समाधि लगावे ॥ धृ० ॥ चिन्मय बिंदु इंदु की आभा, तत्व रंग दरसावे ॥ १ ॥ बिंदू बीच मोहनी मूरति, निरखि निरखि हरषावे ॥ २ ॥ चमके बिजुली गरजें बादल, नाद श्रवण में आवे ॥ ३ ॥ भीतर बाहर एक उजेला,

तनकी सुध बिसरावे ॥ ४ ॥ धन बलवंत गुरू की, महिमा, निसदिन चरणन ध्यावे ॥ ५ ॥

पद ५३.

क्या सोया गफलत में प्यारे, चेत सवेरा होता है ॥ ध्रू० ॥ ताने काल कमान खडासिर, कल क्या जाने होना है ॥ १ ॥ यह बल छल अरु घमंड तेरा, विचार करले थोता है ॥ २ ॥ करता कृति बलवंत न जानी, तो फिर आगे गोता है ॥ ३ ॥

पद ५४.

भजन कुछ करले नरहरि का ॥ मज़ा फिर आवे नरतनु का ॥ ध्रू० ॥ बिना प्रताप भजन के तेरे, दिल में बल नहिं आवे ॥ फ़ाक़ा फ़िकर रोग दुख डर सब, निसदिन तुझे सतावे ॥ १ ॥ जैसे सांप कांचुली तजिके, रूप रंग बतलावे ॥ तैसे जीवन भऱ्यो दिव्य तनु, हरीभजन सों पावे ॥ २ ॥ फिकर काहे की डर है किसका, शंका मन नहिं आवे ॥ सदा मस्त साहब के रंग में, जम को खड़ा डरावे ॥ ३ ॥ कुबेर, केसर भूपति नरवर, और बड़े अधिकारी ॥ तुझको

ऐसे दीख पड़ेंगे, जैसे बड़े भिखारी ॥ ४ ॥ चिंतानल से व्याकुल वे सब, चैन नहीं है छिन भर ॥ कोट कमाई करी हुवा क्या, जैसे जोड़े पत्थरं ॥ ५ ॥ जिसने हरिसेवा फल चाखा, उसको कुछ नहिं भावे ॥ भाग्यवंत बलवंत कोई इक, जग में यह सुख पावे ॥ ६ ॥

पद ५५.

बन अब तू साहब का बंदा ॥ छोड़दे झूटा जग धंदा ॥ धृ० ॥ कृष्ण नाम की जिसके छाती, पै चपरास सुहावे ॥ तीन लोक में जहं कहिं जावे, सबसे आदर पावे ॥ पहनले सिक्का साहब का ॥ हुक्म वाला सबपर उसका ॥ १ ॥ अग्नी जल गज भुजंग केहरि, सब कोइ सीस नमावे ॥ जम का दूत भूतसा भागे, स्वप्नेहू नहिं आवे ॥ हुकूमत का है जो चसका ॥ मजाले प्यारे फिर उसका ॥ २ ॥ बन के नरका दास अरेतू, यों नरदेह लजावे ॥ जिसका पेट आप नहिं भरता, वह क्या हमे खिलावे ॥ दुखी जे तन मन के मारे ॥ हरैं क्या कष्ट तेरे प्यारे ॥ ३ ॥ जिसके आगे सीस नमाते, ऊंचा सब से होवे ॥ ले बलवंत

शरण ऐसे की. वृथा काल जिन खोवे ॥ बन अब तू साहब का बंदा ॥ छोड़दे झूंठा जग धंदा ॥ ४ ॥

पद ५६.

प्रभु का भजन करो भाई, होय जिहिं मन की शुचिताई ॥ धृ० ॥ वहां दया की नहीं कमी है, है सब तेरी गलती ॥ मनपे स्याही मनों चढ़ी है, नहीं रत्ती भर धुलती ॥ १ ॥ इसको धोकर साफ बनाना, यही काम है तेरा ॥ स्वस्वरूप बलवंत दिखे तब, मान वचन सत् मेरा ॥ २ ॥

पद ५७.

भजन नहिं खेल तमाशा है ॥ कठिन फांसी से फांसा है ॥ धृ० ॥ सूली पर दुख पलभर का है, रन में दुःख घड़ीका ॥ विष खाये दुख चार घड़ी का, खड्ग मरे दुख छिन का ॥ यहां दिन रात काम दुख से, नहीं मिलती है नींद सुख से ॥ १ ॥ खड़ा रहै भाले की अनी पर, मन को नहीं डिगावे ॥ एक सुई के नाके में से, गज की फौज चलावे ॥ विकट इससे भी भजन प्रभु का, खेल नहीं घर है साहब

का ॥ २ ॥ मन की मूरी मैल भरी है, छीलो रोज छुरी से ॥ जब देखो तब मैली ही देखो, शोधो अब अभी से ॥ नहीं है दुख यह दो दिन का ॥ काम है अनंत जन्मों का ॥ ३ ॥ मन की लड़ाई बड़ी विकट है, सूर छोड़ रन भागे ॥ भाग्यवंत कोई लाल साईं-का, रुपै है इसके आगे ॥ जो लड़ते आये जन्मों से, लड़ेंगे वही यार मनसे ॥ ४ ॥ धन धरनी सुत दारा छोड़ें, छोड़ें आशा तन की ॥ सब से तोड़ें हरि से जोड़ें, यह रहनी संतन की ॥ न कोरी बातों को मानें, रहै रहनी तो हम जानें ॥ ५ ॥ मंजिल दूर समय थोड़ा है, फिर कहिये क्या कीजे ॥ आंख मूंद के श्रीगोविंद के, धाय चरण गहि लीजे ॥ उसी दम होवे निस्तारा, यही बलवंत सर सारा ॥ ६ ॥

पद ५८.

हम अपने रँग में आप मगन रहते हैं ॥ अपने जोबन के आप मज़े लेते हैं ॥ धृ० ॥ पाई कंचन की काया क्या छबि धारी ॥ निर्गुण में सगुण खिली अजब फुलवारी ॥ १ ॥ नहिं देह देहि का भेद

जरा भी पाया ॥ सच्चितआनंदघन स्वरूप निज प्रगटाया ॥ २ ॥ सुंदर सनेह रस रोम रोम में छाया ॥ अद्भुत विलास बलवंत दृगन दरसाया ॥ ३ ॥

पद ५९.

अब उनको इस दुनिया से काम भी क्या है ॥ अपना घर जिनने श्रीगोलोक किया है ॥ धृ० ॥ सोहत कल कुंज निकुंज पुंज सुखदाई ॥ जहां अष्ट सिद्धि नवनिद्धि रैन दिन छाई ॥ १ ॥ सच्चित-आनन्द मय पंच तत्व जहं राजे ॥ मरकतमय भूमी-मणिमय धाम बिराजे ॥ २ ॥ तरु लता कल्पद्रुम सम जहं तहं सुखदाई ॥ फल फूल गंध मकरंद चहुं-दिस छाई ॥ ३ ॥ जहं पशु पची बहु रंग अनंग लजावें ॥ मीठी वाणीसों कृष्ण कृष्ण गुन गावें ॥ ४ ॥ जहं होत न पात निपात न सुम कुम्हलावें ॥ जहां जरा मरण दुरगंध कबहुं नहिं आवें ॥ ५ ॥ है लोक अलौकिक सब लोकोंसे न्यारा ॥ बलवंतजहां स्वामी कृत नित्य विहारा ॥ ६ ॥

पद ६०.

मुख सूख गया दिन रात पुकारा करते ॥ पथरा गईं आंखियां बाट निहारा करते ॥ धृ० ॥ क्यों सूख गया करुणाका सागर सारा ॥ क्या कामधेनु ने देना दूध बिसारा ॥ १ ॥ वर्षा में करुणाघन वर्षा करते हैं ॥ पै हरिजन चातक सदा रटा करते हैं ॥ २ ॥ नहिं आंख चाह की कभी तृप्त होती है ॥ नित नया रूप रंग प्यारे में पाती है ॥ ३ ॥ ये रोग बुरा है लगा नहीं फिर जाता ॥ पद तीन लोक का नहीं आंख में आता ॥ ४ ॥ पाते हैं मन भर तोभी तृप्ति नहीं आती ॥ बलवंत प्रीत की प्यास कभी नहिं जाती ॥ ५ ॥

पद ६१.

हरिदास नहीं दुनिया की चाह करते हैं ॥ जिनके हैं हौसले बड़े बलँद उड़ते हैं ॥ १ ॥ दिन रात लगे जो प्रभु सेवा करते हैं ॥ अंगुश्त दिखा सूरज को खड़ा करते हैं ॥ २ ॥ नहिं छोटी इच्छा बड़े लोग

करते हैं॥ बंदे से खुदा होने की चाह करते हैं॥ ३॥ जे तन मन अपना मार खाक करते हैं॥ जो रखें रंक सिर हाथ राव करते हैं॥ ४॥ नुक्ते कि बात है जिसे बयां करते हैं॥ बलवंत कामना सोच समझ करते हैं॥ ५॥

पद ६२.

वाणी का छल बड़ा विकट है, भूले पण्डित ज्ञानी॥ इसका सारा झगड़ा जग में, डूबे लाखों प्रानी॥ १॥ स्वर्गऽरुनर्क लाभ हानी, इसीसे होवे जग जानी॥ बीमारी काया को नासे, वाणी जीवहि नासे॥ महामरी से रोग विकट है, उड़के लगे हवा से॥ २॥ बचे रहना इससे प्राणी॥ जहर की फूंक दुष्ट वाणी॥ वेद पुरान कुरान सभी में, इसने डाला चक्कर॥ सीधा रस्ता भूल गये सब, खाते फिरते टक्कर॥३॥ न बातों के झगड़े पड़ना॥ सार हरि नाम सदा रटना॥ भाव कुभाव अनख आलस से, कृष्ण नाम जो गावे॥ पूंछा ताछी कहीं न होवे, सूधा स्वर्ग सिधावे॥४॥ राजपथ येही पहिचानो, शास्त्र श्रुतिसार यही जानो॥

जिसके आगे सीस नमाये, ऊंचा सब से होवे ॥
ले बलवंत शरण ऐसे की, वृथा काल जिन खोवे ॥ ५ ॥

पद ६३.

धन्य धन्य गुरु साहब जिनकी, महिमा जग जानी ॥ हृदयकपाट खुले धरतेही, सीस वरद पानी ॥ ॥ धृ० ॥ खिला गगन में बाग बिरंगी, शोभा मन भाई ॥ छिटकि रही चंद्रिका मनोहर, चहुं दिस सुखदाई ॥ जगमगात जित उत मनु हीरा--कनकी समुदाई ॥ बरस रहे चहुं ओर गगन से, उडु गण सुखदानी ॥ १ ॥ शिव ब्रह्मा विष्णू के सुंदर, रूप अलख छाये ॥ सोम सूरके बिंदु दोउदृग, खेलत दरसाये ॥ दीपमालिका लगी गगन में, देखत हरषाये ॥ दमक रही चहुं ओर दामिनी, सुंदर मन मानी ॥ २ ॥ नैनों का यहि फल है देखो, आंखों से प्यारे ॥ चिदानंद भण्डार भरा है, खाली में सारे ॥ जरा नजर के एर फेर में, खुलें भुवन तारे ॥ क्यों प्रत्यक्ष छोड़के हो तुम, बनते अनुमानी ॥ ३ ॥ जो साहब आँखों नहिं देखा, तो फिर क्या देखा ॥ जीते जी जो मिला नहीं तो, मरे कौन लेखा ॥ नगद पटावें सौदा यहं

नहिं, उधार की रेखा ॥ जिसका जी चाहे देखे, बलवंत यही ठानी ॥ ४ ॥

पद ६४.

पूर रहा है घट घट साहब, पै तेरा क्या काम सेरे ॥ सब लकड़ी में आग भरी है, नेक नहीं तन शीत हरे ॥ धृ० ॥ बड़े बड़े भंडार धान्य के, भरे धरै यदि भवन तरे ॥ खावे जो न पका के रोटी, कैसे तेरा पेट भरे ॥ १ ॥ गुप्त बात बलवंत तत्व की, गुरु विन सो नहिं समझ परे ॥ विना हरी हिये जागृत कीन्हें, नहीं कामना तरू फरै ॥ २ ॥

पद ६५.

सबमें भरा है साहब जिसने जाना जीवन सफल किया ॥ धृ० ॥ भवन गढा भंडार न जाना भीख मांगि अति कष्ट जिया ॥ १ ॥ परके धोके में मूरख परि, अखंड आनँद नसादिया ॥ २ ॥ परमानन्द सुस्वाद सुधा तजि, विषय वारुणी कीच पिया ॥ ३ ॥ अब बलवंत दंपति पद बल, तीन भुवन को जीत लिया ॥ ४ ॥

पद ६६.

आपहि जल थल कमल आप ही, केसर अरु मकरन्द भरा ॥ रस विलास के हेत आपही, सुन्दर मधुकर रूप धरा ॥ १ ॥ अपने रस को आप चाख के, मगन हुआ वनवाग फिरा ॥ अपने सुख के हेत आपही, भोग्य भोगता स्वांग करा ॥ २ ॥ है स्वतंत्र अपने घर आपहि, नहिं दूजा कोइ दृष्टि परा ॥ शोधहु अब वलवँत कहां हौ, माया भ्रमपट दृगन टरा ॥ ३ ॥

पद ६७.

जो जीव भूलगया तुम्हें तो अचरज क्या है ॥ माया का गले में पड़ा बिकट फंदा है ॥ १ ॥ यह पराधीन अज्ञानी तेरा बंदा है ॥ सर्वज्ञ आप सर्वेश्वर जग गाता है ॥ २ ॥ तुमको तो विसरना नाथ नहीं फबता है ॥ बलवँत भूलना अपना तो बाना है ॥ ३ ॥

पद ६८.

खेल माया का है भारी ॥ देखि भूले सुर नर —री ॥ ध्रु० ॥ सब भेदों का भेद बात सुन, नहिं

वेदों से न्यारी ॥ काया यही बड़ी माया है, सोच समझ मतिधारी ॥ १ ॥ यह संसार इंद्रियों के बल, नजर तुझे आता है ॥ तन में तेरे भरी है दुनिया, बाहर का धोका है ॥ २ ॥ जो दिखता है झूठा है सब, सच्चा नजर न आवे ॥ रवि निज छाया सांझ छिपा है, कौन खोज के लावे ॥ ३ ॥ (चाल) नैनों की पुतली ने सब रंग रचा है ॥ संसार इसी ने गढ़के खड़ा किया है ॥ क्या अचल ठाट कानों के परदों का है ॥ दुनिया का सारा राग यहीं बजता है ॥ रस खान पान सब है रसना के भीतर ॥ सर्दी गर्मी का बोध स्पर्शशक्ति पर ॥ हम हैं जहां वहीं दुनिया है, होय न हमसे न्यारी ॥ नाम होश का हुवा है आलम, कहि बलवँत विचारी ॥ ४ ॥

पद ६९.

अभीतक आंख नहीं खुलती, रात दिन करते हो गलती ॥ धृ० ॥ प्रभुता औरों को दे बैठे, फिर कैसा सुख सोना ॥ जोरू अपनी खसम बनाई, फिर काहेका रोना ॥ १ ॥ वासनाओं ने तेरे मनकी, तुझपै करी सवारी ॥ अखंड पदसे गिरा दिया है, करके दीन

भिकारी ॥ २ ॥ नोकर चाकर मालिक होगये, घर में धूम मचाई ॥ तुम्हे पकड़ के कैद किया है, जरा समझले भाई ॥ ३ ॥ (चाल) यह शरीर तेरा, या तू इसका चेरा ॥ तू मालिक मन का, या मन मालिक तेरा ॥ करि बलवँत विचार समझले, तुही स्वामि सुखरासी ॥ जो अपना अब स्वरूप भूले, परै फन्द चौरासी ॥ ४ ॥

पद ७०.

आंख अब खोल देखभाई ॥ यह कैसी गफलत चित छाई ॥ धृ० ॥ पल पल आयू घटती तेरी, तू बढ़ती है जाने ॥ काल अमोल खेल में खोते, गोते खाते स्याने ॥ १ ॥ छिन में रोना छिन में हंसना, है यह दशा तुम्हारी ॥ नहीं चैन चित को है पलभर, देखो जरा विचारी ॥ २ ॥ सगे सनेही नहीं हैं तेरे, हैं मतलब के गरजी ॥ गाल फुला के यह बैठेंगे, जब तोड़ोगे मरजी ॥ ३ ॥ दुख सुख अपने कर्मों के वस, जीव यहां पाता है ॥ और नहीं कोउ देता लेता, झूंठी सब बाता है ॥ ४ ॥ निशि दिन साहब की कर

सेया, नास मती कर अपना ॥ खबरदार बलवन्त रहो अब, हे सब जग यह सपना ॥ ५ ॥

पद ७१.

यह विषयवासना छोड़ अरे, क्यों द्वार द्वार फिरता सारा ॥ एक पेटके पीछे तूने, श्वान सरूप वृथा भाग ॥ १ ॥ चाह कोट की या कौड़ी की, दोनों देख बराबर हैं ॥ रावरंक तृष्णा के मारे, व्याकुल दीन सरासर हैं ॥ २ ॥ जिसको इच्छा नहीं किसीकी, सबमें बड़ा वही नर है ॥ इंद्र चंद्र क्या कुबेर कैसर, कौन करे उसकी सर है ॥ ३ ॥ तीन लोक की अचल सम्पदा, एक उसी के तो घर है ॥ नाहिं इच्छा बलवंत रखो फिर, सच कहने में क्या डर है ॥ ४ ॥

पद ७२.

सीस श्री गुरु चरणन नाई ॥ ज्ञान गुणसार कहौं भाई ॥ मथिके सब उपनिषद पयोनिधि, गुरु नव-नीत निकाला ॥ चाखतही रसना रस जाको, होय हिये उजियाला ॥ १ ॥ गुरु की महिमा जग जानी, धन्य जिन के सिरवर पानी ॥ उसी सार का सार

निकाला, जो कोई भरके प्याला ॥ पीवेगा अभ्यास-रूप से, होय मुक्ति तत्काला ॥२॥ बात यह गुप्त सत्य जानो ॥ मुक्तहो जीवन सुख मानो ॥ जीव-ईश का भेद न जबतक, पूरा मन में लावे॥ तवतक जीव अविद्या तजिके, नहीं मोक्षपद पावे ॥ ३ ॥ ब्रह्म माया को अब जानो ॥ इन्हीं का स्वरूप पहिचानो ॥ आदि शक्ति को अंगिकार करि, जिसने जग विस्तारा ॥ सच्चित आनँद वही ब्रह्म है, निर्गुण अरु अविकारा ॥ ४ ॥ ज्ञान घन पूर रहा भाई ॥ सोइ जग द्रष्टा श्रुति गाई ॥ चार देह अरु चार आत्मा, चार अवस्था सुंदर ॥ इनका जो साक्षी है सोई, परब्रह्म परमेश्वर ॥ ५ ॥ वही जग व्यापक आनंद रूप ॥ ज्ञान घन साखी अमल अनूप ॥ दो नैनों कर एकहि दर्शन, एक शब्द दो कानन ॥ एक लक्षकर दुई मिटादे, प्रगटे जोती तत्छन ॥६॥ भेद जो मेटे बलिहारी ॥ लक्ष की बात बड़ी भारी ॥ औरत औरत एक सरीसी, क्या माता क्या नारी ॥ एक नजर के बल ने दोनों, करदीं न्यारी न्यारी ॥७॥ लक्ष ने द्वैत बनाया है ॥ जगत को भ्रम में डाला है ॥ माया क्या है अब तुम इसको, खूब तरह

पहिचानो ॥ विन पहिचाने वचा न कोई, यही सत्य करि मानो ॥८॥ कल्पना माया है भाई ॥ बात नुक्ते की वतलाई ॥ जो जो मन में फुरें कल्पना, उसपर ध्यान लगाओ ॥ द्दष्टा होकर देखो उसके, चक्कर में मत आओ ॥९॥ परे जो इसकी धारा में ॥ वही डूबें भव भारा सें ॥ सुचित वैठ के हृदय कमल पर, देखो लच्छ लगाकर ॥ उठती मन की मौज जहां है, वह क्या हैगा अंदर ॥१०॥ लखो चैतन्य चंद भारी, जगत में फैली उजियारी ॥ सावधान मन करके अपना, उसी जगह ठहरादो ॥ कोई ख्याल मत करो जो आवे, उसको वहीं दबादो ॥ ११ ॥ फेरदे धारा गंगा की ॥ मौज ले फिर मन चंगा की ॥ जैसें वायू के वल उठते, तरंग जल में भारी ॥ तैसें माया के वस चलती, मन की मौजें न्यारी ॥ १२ ॥ माया मूल मेट भाई ॥ कल्पना तोड़ चतुराई ॥ यही वीज संसार तरू का, तीन लोक में छाया॥ रंग रंग के फूल खिले है, सुख दुख फलन सुहाया ॥ १३ ॥ कल्पना वीज एक तिल भर ॥ बढ़ै तो चढ़ै गगन ऊपर ॥ मन मौजों का कटक बिकट है, वीर बड़े बलकारी ॥ खेल छोड़कर इसके आगे, भागे सुर नर

नारी ॥ १४ ॥ लड़ाई खेल नहीं मन की ॥ बात यह बड़ी है मुश्किल की ॥ मनके मारे सब फिरते हैं, जिनने मनको मारा ॥ सोई सच्चा सूर जगत में, हुआ गगन का तारा ॥ १५ ॥ चढा रह मन के घोड़े पर ॥ डिगे मत आसन से तिल भर ॥ जब उपाधि माया की मिटके, मन निश्चल होवेगा ॥ तब सरूप अपना आनँद घन, अनुभव कर पावेगा ॥ १६ ॥ वृथा जप तप व्रत हैं भाई ॥ सुलभ यह रस्ता दिखलाई ॥ जब मन में मन लीन हुआ फिर तूही तू है प्यारे ॥ सकल जगत का कर्ता भर्ता, फिरे विश्व को धारे ॥ १७ ॥ बात यह बड़ी गुरु घर की ॥ बताई खोल गिरह दिल की ॥ इसी तरह अभ्यास करो तो, मजा देखलो भाई ॥ बिना कृपा बलवन्त स्वामिनी, नहीं हाथ कल आई ॥ १८ ॥

पद ७३.

किशोरी पुजवहु मोरी आस ॥ धृ० ॥ इनहीं नैनन सों यहँ देखों, दंपति विविध विलास ॥ १ ॥ वेई

बन कुंज कूल कालिंद्री, वेइ प्रगटें रंग रास ॥ २ ॥
अपनो जान कृपा करि दीजै, सेवा मन्दिर खास ॥ ३ ॥

पद ७४.

श्रीपद रुचि मन मोर, बसौ सदा सनेह मोर उर, मांगत यही निहोर ॥ धृ० ॥ पाद पद्म मधि रहै निरंनर, मति गति रति मन मोर ॥ जिमि सरोज मकरंद पायकें, मधुकर तजें न ठोर ॥ १ ॥ तापत्रय-संतप्त सनत चित, कलिमल क्लेश कठोर ॥ काल मान संधान विलोकत, छायो कलियुग घोर ॥ २ ॥ अब न अबेर करहु स्वामिनि छिन, लखो कृपा दृग कोर ॥ देहु देवि बलवंत भक्ति वर, विनय करत कर जोर ॥ ३ ॥

पद ७५.

दयानिधि नेक कृपाकरि हेरो, मोहिं महा मोह तम घेरो ॥ धृ० ॥ पुनि पुनि चित्त विषय कों धावत, फिरत न मेरो फेरो ॥ करि उपाय थाको करुणाकर, संकट कठिन निबेरो ॥ १ ॥ महा मूढ स्वारथ नहिं चीन्हत, भो माया को चेरो ॥ पादपद्मसों विमुख रहत

नित, ऐसो कुटिल घनेरो ॥ २ ॥ भव भय विकल शरण मधि आयो, प्रणतपाल प्रण तेरो ॥ अव बलवन्त दास तन स्वामिनि, कृपा कोरदृग हेरो ॥ ३ ॥

पद ७६.

किशोरी, केवल बल मोहि तोर ॥ ध्रृ० ॥ नहीं स्वर्ग अपवर्गहि लेखों, पद नख जोति निरंतर देखों, जैसे चन्द्र चकोर ॥ १ ॥ प्रणतपाल पणपाल दयाघन, आरतहरन द्वंद दुख भंजन, करत शास्त्र श्रुति शोर ॥ २ ॥ तुम्हरो चित्त कमल से कोमल, दीन देखि नहिं धरत नेक कल, करिय न हाहा कठोर ॥ ३ ॥ थाको करत पुकार द्वार पर, अव न विलम्ब कीजिये पलभर, लखहु दया दृगकोर ॥ ४ ॥ मैं यदि क्रूर कुटिल अभिमानी, पै तव दास सकल जग जानी, त्यागत हँसी न मोर ॥ ५ ॥ जुगन जतन कीन्हें जगमाहीं, बिना कृपा तव मिलिहैं नाहीं, दासन नन्द किशोर ॥ ६ ॥ काहु न अब बलवंत बदत है, जो चाहै सो करत फिरत है, केवल तुम्हरे जोर ॥ ७ ॥

पद ७७.

हमारी सुध लेहु राधिका माई ॥ धृ० ॥ जीरण तरणि विकट भव वारिधि, कोउ न संग सहाई ॥ महा मोह तम दशदिश छायो, घाट न बाट लखाई ॥ १ ॥ चंड काम झकझोर पवन गयो, तरणि करण विनसाई ॥ क्रोध मकर मुख फारि फिरत है, लोभ भंवर भयदाई ॥ २ ॥ मदमय तुंगतरंगनि तरतिल, मत्सर झप दुखदाई ॥ काल कराल कठिन संकट अति, देखत धीर पराई ॥ ३ ॥ दास दौर देवी चरणन लों, और न ठौर दिखाई ॥ शरणागत बलवंत दीन जन दीजै पार लगाई ॥ ४ ॥

पद ७८.

मात विन कौन सम्हार करै ॥ धृ० ॥ दीन मलीन हीन सद्गुणसों, कोउ न कर पकरै ॥ १ ॥ पिता पुत्र भ्राता अरु दुहिता, गुणसों प्रीति करै ॥ २ ॥ अब अवलंब अंब इक तेरो, काहे विलंब करै ॥ ३ ॥ भव वारिधि बलवंत बाल कर, को प्रतिपाल करै ॥ ४ ॥

पद ७९.

बाल हठ पूरी कौन करै ॥ धृ० ॥ जो जगदंब राधिका रानी, नेक न ध्यान धरै ॥ व्याकुल बाल विलोकत जननी, निज सुख सब बिसरै ॥ १ ॥ ऐसो को उदार जगमाहीं, जासों सुत झगरै ॥ स्वारथ के सब सखा संघाती, को पर पीर परै ॥ २ ॥ भक्तपाल नतपाल कृपाला, जो ब्रह्मांड भरै ॥ अब बलवन्त दास आशा तरु, सत्वर सुफल फरै ॥ ३ ॥

पद ८०.

नहिं तीन भुवनमें पतीतपावन पायो ॥ वृषभानुकिशोरी शरण तिहारी आयो ॥ धृ० ॥ कीरति का डंका तीन लोक में गाजे ॥ विधि कर्मरेख पर मेख तुम्हारी वाजे ॥ जग जोतिवंत तनु तेज तुम्हारो भ्राजे ॥ नव खंड मही पर प्रचंड राज विराजे ॥ लखि खुले विपुल भंडार दीनगण धायो ॥ १ ॥ भूखे भूमी के भूप असुर सुर पद के ॥ श्रीमान् आस के श्वान भये घर घर के ॥ हम कन के भूखे वह भूखे सौमन के ॥ भूखे भूखन सों कह लें याचन कर के ॥ बलवंत अन्त नहिं तुम सम दानी पायो ॥ २ ॥

पद ८१.

जगदम्ब जगत अवलंब भक्त सुखदानी ॥ अब द्रवहु दया कर श्रीराधे महरानी ॥ धृ० ॥ हे आदि-शक्ति अव्यक्त चराचर चारी ॥ दश चारि भुवन परिपालन पोषण हारी ॥ १ ॥ होते के होते तात भ्रात हितकारी ॥ अन होते की जग केवल मात निहारी ॥२॥ चहुंओर निहारें श्रीवृषभानु दुलारी ॥ घर घर में यही नीति रीति संसारी ॥ ३ ॥ बलवंत बाल बुधिहीन दीन जिय जानी ॥ अब द्रवहु दयाकर श्रीराधे महारानी ॥ ४ ॥

पद ८२.

तुम सम कौन स्वामिनी दानी ॥ धृ० ॥ बिन सेवा बिन विनय याचना, देत दीन हितमानी ॥ जिन पियूष धाराधर धारा, कृपादृष्टि सरसानी ॥ १ ॥ सरल सुशील सुभाव सुमति अति, कृपावन्त जग जानी ॥ पालन पोषण सकल विश्व को करत सदा मुदमानी ॥२॥ सबविधि समरथ सबसुखदायक सकलकलागुणखानी कथा व्यथा बलवन्त दीनजन कहे बिना पहिचानी ॥ ३ ॥

पद ८३.

सांची तुमहिं एक जगदानी ॥ धृ० ॥ दीन दुखी सन्मुख देखत ही, द्रवत दया गुणखानी ॥ १ ॥ फिरौ न अबलों कोउ द्वार ते, कूर कुटिल अघखानी ॥ २ ॥ देत लोक परलोक सकल सुख, जो भक्तन उर आनी ॥ ३ ॥ यह बलवन्त औदार्य बखानत, नाग गिरा सकुचानी ॥ ४ ॥

पद ८४.

रट लागिरही निस दिन जियकों राधे राधे जग आराधे ॥ धृ० ॥ त्रैलोक्य राज्ञी कीर्ति सुता ॥ गोविंद-प्रिया गुण आगाधे ॥ १ ॥ गोलोक स्वामिनी गुणागरी गोपीजन वल्लभ मोद करी ॥ २ ॥ लावण्य निलय ललिता चारा ॥ लालित्य तत्व ललिताकारा ॥ ३ ॥ गोपीजन गोप शिवं करणी ॥ वृषभानु नंदिनी जग भरणी ॥ ४ ॥ श्रीश्यामा श्याम मोददाई ॥ वृज जीवनी संजीवनि राई ॥ ५ ॥ सौभाग्य प्रदातृ मोक्ष दानी ॥ आराध्य तत्व सिद्धिन खानी ॥ ६ ॥ जग जीवनि औषधि वृजेश्वरी ॥ सौन्दर्य आत्मा कृपा

सरी ॥ ७ ॥ देवी वसुदेव सुवन सुखदा ॥ बलवंत सौख्य शुचि सिद्धिप्रदा ॥ ८ ॥

पद ८५.

जैजै वृषभानु दुलारी, कृष्णा श्री कीर्तिकुमारी ॥धृ०॥ श्रीराधे जग आराधे, गोपीश्वरि गुण आगाधे ॥ वृज-संजीविनि सुखकारी ॥ जैजै वृषभानु दुलारी ॥ १ ॥ जगदंब जक्तप्रतिपाला, गुणवती प्रिया गोपाला ॥ भक्तन भय संकट हारी ॥ जैजै० ॥ २ ॥ लावणनिलय सुखदानी, भक्तन जीवनि जगजानी ॥ कीरति त्रिभु-वन विस्तारी ॥ जैजै० ॥ ३ ॥ प्रणपालप्रणत जनपाला, मुदमंगल करनि कृपाला ॥ ईश्वरी चराचर चारी ॥ जैजै० ॥ ४ ॥ सुन्दरी सुंदराकारा, श्री ललता ललता चारा ॥ सुंदरानंद जगधारी ॥ जैजै० ॥ ५ ॥ जीवन औषधि अभिरामा, गोलोक राज्ञि गुणग्रामा ॥ जगतारन हित अवतारी ॥ जैजै० ॥ ६ ॥ वृषभानु कमल कुलतरणी, श्रीकृष्णचन्द्र मनहरणी ॥ योगेश्वरि योगप्रचारी ॥ जैजै० ॥ ७ ॥ कामदा कीर्ति कुलकेतू, दशचार भुवन की हेतू ॥ प्रेमास्पद प्रेमा कारी ॥ जैजै० ॥ ८ ॥ पावनीपुण्य गुणशीला, जगधात्रि अपरमित लीला ॥

श्रीमाया माया हारी ॥ जैजै० ॥ ९ ॥ तपरूप तपोनिधि माता, तापसिद्धि प्रदा सुखदाता ॥ मुक्तिदा मुक्त वृतधारी॥ जैजै० ॥ १० ॥ कल्याण मूर्ति कलगानी, गुणरूप सकल गुणखानी ॥ वलवन्त वालसुखकारी॥ जैजै वृषभानु दुलारी ॥ ११ ॥

पद ८६.

जय जय वृषभानु दुलारि मात अवढर दानी ॥ करुणाकर बेग, धरौ सीस पै वर पानी ॥ धृ० ॥ यह काल घोर चहुं ओर छायरही अंधियारी ॥ १ ॥ डूवे सत ग्रंथ न पंथ दिखैं ढूंढत हारी ॥ २ ॥ नहिं और हमैं कहुं ठौर जगत में तुम जानी ॥ ३ ॥ हम बुरे भले पर तोर दास राधे रानी ॥ ४ ॥ दृढ गहे चरण बलवन्त कृपा गुणगण खानी ॥ ५ ॥

पद ८७.

स्वामिनि, चरण गहों सिर नाई ॥ धृ० ॥ इक द्वै वचन दास के हितकर, कहो स्वामिहि समुझाई ॥ १ ॥ थाकौ लखचौरासी भटकत, गरी जीव गरुआई ॥ २ ॥ परम अधीर पीर भव भ्रम बस, सूझत कछु न

उपाई ॥ ३ ॥ अब की बेर कृपा करि सुनिये, विनय दीन चितलाई ॥ ४ ॥ एक वचन सों कृपासिंधु कों, नहिं आवे लघुताई ॥ ५ ॥ जनम मरन दुख अमिट हमारौ, सहज कहे बिनसाई ॥ ६ ॥ अब बलवंत लाज स्वामिनि कहं, तुम्हरे नाम बिकाई ॥ ७ ॥

पद ८८.

दीनानाथ दयाल दीन प्रतिपालु विनय कर जोर कहौं ॥ धृ० ॥ भव भय भ्रम वस भयो बावरो, नेक नहीं कहुं थाह गहौं ॥ १ ॥ तुम सम समरथ स्वामि शीस पर, तदपि त्रिविध दुख दाह दहौं ॥ २ ॥ सोचत यह निशि बासर बीते, कबलों जिय चुप साधि रहौं ॥ ३ ॥ यही बान बलवन्त स्वामि अब, तुम बिन आन न शरण लहौं ॥ ४ ॥

पद ८९.

ऐसो को दयाल दिन दानि ॥ धृ० ॥ बिन सेवा प्रतिपालहिं रीझहिं, अवगुण को गुण मानि ॥ १ ॥ आलसि अधम अनाथ निवाहन, कीरति जग सर-सानि ॥ २ ॥ बिना दिये मन मुदित रहत नहिं,

यह जिनके चित बानि ॥ ३ ॥ तजो न अस बलवंत नाथ पद, जो सब सुखकी खानि ॥ ४ ॥

पद ९०.

तुम्हारे करुणा के बलिहारी ॥ धृ० ॥ थाकत जहां उपाय सुरासुर, तहां करत रखवारी ॥ १ ॥ कबहु न मुख मोरो जब टेरे, सदा भक्त भयहारी ॥ २ ॥ चीर अपार सभा में दीन्हे, जब द्रोपदी पुकारी ॥ ३ ॥ अस बलवंत कृपानिधि पद पर, दीजे तन मन वारी ॥ ४ ॥

पद ९१.

प्रभु तुम कीन्ह अनुग्रह भारी ॥ धृ० ॥ सर्वशक्ति सुखधाम नाम निज, दीन्हों दया विचारी ॥ तदपि जीव हत भाग्य लेत नहिं, सह अनुराग सुधारी ॥ १ ॥ जन मन मुकुर मलिनता भंजन, जगरंजन सुखकारी ॥ प्रफुलित कर कल्याण कुमुद जिम, शरद चन्द्र उजियारी ॥ २ ॥ विद्यावधू प्राणपति पूरण, सहित प्रेम अविकारी ॥ श्रेष्ठ सुधा सों अमर अजर कर, जग त्रय ताप निवारी ॥ ३ ॥ आतम अमल करन अघ ओघन, भंजन बिपति विदारी ॥ अधम उधारन

भवनिधि तारन, निगमागम निर्धारी ॥ ४ ॥ दारा धरणि धाम धन सब तजि, मांगत गोद पसारी ॥ हेतु रहित प्रनिजन्म भक्ति निज, दीजै भव भय हारी ॥ ५ ॥ कब वह सुदिन दिखावहु स्वामी, नाम लेत इकवारी ॥ गद्गद गिरा प्रेम पुलकित तनु, बहै विलोचन वारी ॥ ६ ॥ पलभर कल न परत तुम्हरे बिन, बीतत जुग अनुहारी ॥ हेरत पथ दृग थकित भये अति, जगत शून्य अनुसारी ॥ ७ ॥ लेहु लगाय हृदय मोहिं चाहे, पायन दलो बिहारी ॥ केवल तुमहिं प्राणपति मोरे, अपर न विश्व मझारी ॥ ८ ॥

पद ६२.

तात मात पति भ्रात सखा गुरु, प्रभु पदसों सब नाते मोर ॥ ध्रु० ॥ करिय उपाय बेगि अस कछु प्रभु, परों न पुनि भव बंधन घोर ॥ १ ॥ मो प्रण चरण कमल अवलम्बन, प्रणतपाल प्रण स्वामी तोर ॥ २ ॥ अब बलवन्त विलम्ब कवन विधि, देहु दृष्टि निज वृद की ओर ॥ ३ ॥

पद ९३.

तुम बिन नाथ कौन पै अब मैं, जाय कहौं निज जियकी बात ॥ धृ० ॥ कल न परत लव ही प्रपंचमें, पै निशि वासर तलफत जात ॥ १ ॥ केवल इक तुम्हरी सुधि स्वामी, जब आवत तब हियो सिरात ॥ ॥ २ ॥ तव पद पद्म पुनीत प्रीति यदि, तो सुधि पुनि पुनि किहिं बिसरात ॥ ३ ॥ सो सत्त जो प्रपंच रुचि सांची, तो जियरा काहे अकुलात ॥ ४ ॥ कब बलवंत कृपानिधि मोरी, सुमिरनसें बीते दिन रात ॥ ५ ॥

पद ९४.

जो तुमसा हो कोई देव बतादो हमको, दिन रात नहीं फिर आके सतावें तुमको ॥ १ ॥ जब नहीं आपसा और कोई मिलता है ॥ फिर रोने में अपराध हमारा क्या है ॥ २ ॥ जहां एक वैद्य हो और पीर तन भारी ॥ वह सुने न दुख फिर रोना है लाचारी ॥ ३ ॥ मर्जी हो इक तदबीर अर्ज करता है ॥ नितका यह झगड़ा जिससे सहज मिटता है ॥ ४ ॥

नहिं कौड़ी का भी खर्च नाम हो तेरा ॥ हंस के कह दो बलवंत दास है मेरा ॥ ५ ॥

पद ९५.

प्रगटे गौर देव जगसाई ॥ धृ० ॥ पूरण कला शशी पूनों को, जैसे त्रिभुवन कहं सुखदाई ॥ १ ॥ नवद्वीप मधि आनंद छायो, घर घर मंगल बजत वधाई ॥ २ ॥ भक्ति भानु भूमी प्रगटो अब, प्रेम प्रकाश भयो सब ठांई ॥ ३ ॥ अब बलवंत करो किमि चिंता, जब माथे पर ऐसे सांई ॥ ४ ॥

पद ९६.

तुम सम गौर देव को दानी ॥ धृ० ॥ बिन सेवा बिन याचन जनको, दान देत मुद मानी ॥ १ ॥ आचाँ डाल पतित किय पावन, कीरति जग सरसानी ॥ २ ॥ दया समुद्र दीन मुख देखत, सद्य द्रवत गुण खानी ॥ ३ ॥ सदा दास बलवंत नाथ के, गावत गुण सुख मानी ॥ ४ ॥

पद ९७.

भक्तन के वंधन तुरतहि दिये निवेरी ॥ क्यों गौर देव मेरे हित इतनी देरी ॥ धृ० ॥ भक्ती की भागी-रथी बहाई जग में ॥ करुणारस की भी कीच मचादी मग में ॥ कीन्हे चांडाल निहाल आपने पल में ॥ डंका हरिनाम प्रताप बजा खल दल में ॥ वलवंत दास है पडा हुवा घर घेरी ॥ क्यों गौरदेव मेरे हित इतनी देरी ॥ १ ॥

पद ९८.

शचिनंदन खेलत होरी होरी ॥ धृ० ॥ नित्यानंद सखन सह सोहत, सूर सोम सम जोरी ॥ भक्ति रंग भर भर पिचकारी, भिंजवत है बरजोरी ॥ १ ॥ भाव अबीर और रुचिरोरी, फेंकत भरभर झोरी ॥ महाभाव के भरे कुमकुमा, मारत तकि चहुं ओरी ॥ २ ॥ श्रीमन्नाम राग को गायन, गूंज रह्यो सब ठोरी ॥ छकि मृदंग वीणा रस आसव भक्तन मति भई भोरी ॥ ३ ॥ सरिता प्रीति प्रतीत वहाई, पीवत जीव करोरी ॥ ऐसे प्रभु बलवंत [illegible]निक पद, लागी सुरत सुडोरी ॥ ४ ॥

पद ९९.

हे महाप्रभू चैतन्य सुधाकर, हे प्रभु नित्यानन्द दयाकर ॥ धृ० ॥ भक्ति दानि भगवंत दीजिये, जानि मोहिं चरणनको किंकर ॥ १ ॥ मिले मुक्ति पै भक्ति न पावे, विन तव कृपा कोउ जग में नर ॥ २ ॥ लई शरण वलवंत तुम्हारी, धरहु माथ पर नाथ वरद कर ॥ ३ ॥

पद १००.

धन धन्य प्रभू चैतन्य गाथ जग तेरी ॥ महि भक्ति प्रचारन आप रूप प्रगटेरी ॥ धृ० ॥ जब भारत खंड प्रचंड जैन मत छाया ॥ श्रुति कर्म धर्म आचार सकल विनसाया ॥ तब शंभू ने तनु धरि पाखंड मिटाया ॥ रहि भक्ति गुप्त यद्यपी ज्ञान जग छाया ॥ भगवंत तबै शिव कर्म न्यूनता हेरी ॥ महि भक्ति प्रचारण आप रूपप्रगटेरी ॥ धनधन्य प्रभू० ॥ १ ॥ वंगाल देश नव द्वीप नगर सुखदाई ॥ गौरांगरूप श्री जुगल दिये दरसाई ॥ घनघोर भक्ति रस घटा घुमड़ि नभ छाई ॥ भय ताप मिटाये सुधा बुंद

बरसाई ॥ तुम जग जीवनके फंद दिये निरवेरी ॥ धनधन्य प्रभू० ॥ २ ॥ खेलत आंगन चांडाल चोर उद्धारे, कैसे अति अधम जघाइ मधाई तारे ॥ करि केहरि वन में कृष्ण नाम उच्चारे ॥ पद पारस परसत वंध असित जन टारे ॥ गौरांग प्रभू क्यों करी मेरे हित देरी ॥ धनधन्य प्रभू० ॥ ३ ॥ इकबेर रजक से श्रीहरि नाम लिवाया ॥ कहते ही भक्तिरस रोम रोम में छाया ॥ फिर जिसने उसके तनको हाथ लगाया ॥ होगया मस्त तत्काल प्रेम पद पाया ॥ चैतन्य चन्द काटिये वेगि भव वेरी । धनधन्य प्रभू० ॥ ४ ॥ सब काशी के सन्यासी ज्ञान अभिमानी ॥ आचरण प्रभू का देखि लाये मन ग्लानी ॥ जब चली नाथ से वेद बाद की बानी ॥ सुनि द्वैत अर्थ उपनिषद मती वौरानी ॥ नव खंड मही प्रभु की कीरति ने घेरी ॥ धनधन्य प्रभू० ॥ ५ ॥ जब नवद्वीप नव्वाव यवन दुखदाई ॥ करी नगर कीरतन की सब ठौर मनाई ॥ तब स्वप्ने में धरि सिंह रूप डरपाई ॥ हरि नाम कीरतन प्रगट कियो सब ठाई ॥ तिहिं उद्धारा बलवंत वजी नभ भेरी ॥ धनधन्य प्रभू चैतन्य गाथ जग तेरी ॥ ६ ॥

पद १०१.

(चाल लावनी.)

सुनके वड़ा दरवार तुम्हारा देस से आये हैं ॥ पतीत पावन नाम आपका, वेद शास्त्र यश गाये हैं ॥ ॥ १ ॥ नहीं फिरा है निराश कोई, जो इस दर पै आया है ॥ दौलत हश्मत दीनऽरुदुनिया, जो चाहा सो पाया है ॥ २ ॥ जिसका नहीं कोई वाली वारिस, है उसका दरवार यही ॥ लावारिस जो माल हुआ, उसकी मालिक सरकार सही ॥ ३ ॥ तू मालिक मैं बन्दा तेरा, अब इसमें क्या झगड़ा है ॥ पापों के क्या देख अटम्बर, प्यारे दिल में बिगड़ा है ॥ ४ ॥ करनी को क्या देखते हो, अपनी तरफ कुछ नजर करो ॥ करो कुछ ऐसा जैसे तुम हो, खता हमारी माफ करो ॥ ५ ॥ औरों ने जब टेर करी, फिर देर नहीं की एक घड़ी ॥ मेरी खातिर देर लगी क्या, ऐसी मुश्किल आन पड़ी ॥ ६ ॥ जलवा कुछ दिखलाव नाथ जी, तौ अब हिन्दू धर्म बचै ॥ हटाव पर्दा दिखाव मुंह को, तो आलम में धूम मचै ॥ ७ ॥ पुरानों की तौ पुरानी बातें, होगई अब कुछ और

चलै ॥ नाम जहां में होवे तेरा, और हमारा काम चलै ॥ ८ ॥ देरदार मत करो नाथ अब, अर्जी तुम पर लाये हैं ॥ दरपै खड़ा बलवंत पुकारे, शरण तुम्हारे आये हैं ॥ ९ ॥

पद १०२.

डंके हैं त्रिभुवन नाथ नाम के तेरे ॥ बैठे हैं आज बृजराज तेरा घर घेरे ॥ १ ॥ तुम लछमीपति भगवान कृपा आगारे ॥ क्या भूख हमारी जरा विचारो प्यारे ॥ २ ॥ घनघोर मेघ मंडल बरसें महि सारे ॥ तहां प्यासा चातक जैसे चोंच पसारे ॥ ३ ॥ जहँ सदा भरा भरपूर पयोनिधि भारा ॥ वहँ क्या हैगा इक अंजुलि नीर उदारा ॥ ४ ॥ नहिं तुम सम कोउ बलवंत दान व्रतधारी ॥ अब पूरण कीजै इच्छा नाथ हमारी ॥ ५ ॥

पद १०३.

बृजराज सुनहु महाराज विनन्ती मेरी ॥ अब कृपा करो दुःख हरो शरण मैं तेरी ॥ धृ० ॥ दारिद्र दुःख दल दलन परम उपकारी ॥ प्रभु चरण आपके

शरण सुरासुर झारी ॥ तुम भक्तन के हित अनेक नर तनु धारी ॥ नहिं टेक भेष की नाथ कबहुं तुम टारी ॥ दीनन प्रतिपालनहार दया दृग हेरी ॥ १ ॥ उद्धारे अधम अनेक वेद गुण गाई ॥ अस अमल अनूपम गाथ तिहूंपुर छाई ॥ पावक न जरो प्रल्हाद मयासुर सोई ॥ तुम राखौ ताको मार सकै नहिं कोई ॥ श्री कृपावन्त भगवन्त विपत निर्वैरी ॥ २ ॥ तुम तात मात गुरु बंधु द्वारकावासी ॥ अस जतन करो जदुनाथ कटे भवफांसी ॥ बहुनात तोहि मोहि कृपासिंधु गुणरासी ॥ सन्मुख सार संसार करो मत हांसी ॥ करुणाकर दीनदयाल करो मत देरी ॥ ३ ॥ हे दीन बंधु सुखसिंधु देवकीनंदन ॥ जगदीश जक्त प्रतिपाल देव जगवंदन ॥ गोपीजनवल्लभ श्याम गोपकुलमंडन ॥ दीनन के दारिददहन दीन दुख खंडन ॥ भगवंत जानि बलवंत चित्त निज चेरी ॥ ४ ॥ अब कृपा करो० ॥

पद १०४.

दुर्घट संकट आपड़े भयंकर भारी ॥ निर्वारो कृपा निधान कष्ट भयहारी ॥ धृ० ॥ तुम पति राखी द्रौपदी

सती दुख टारौ ॥ हो पार्थ सारथी कौरवदल संहारौ ॥ तुम पूरण कियो जो हट ध्रुव बालक धारौ ॥ पद अटल दियो जो टरै न काहू टारौ ॥ दुखि दीनन देखि न सकत दया व्रत धारी ॥ १ ॥ तुम टेर सुनी गज की खग पति तजि धाये ॥ गहि चक्र नक्र शिर काटि नाग अपनाये ॥ कर पकरि कंस के केस प्रभाव दिखाये ॥ भूतल पछारि निज बल खल प्राण नसाये ॥ सुर असुर पशू पक्षी तारे नर नारी ॥ २ ॥ तव कीरति अमल अनूप वेद विस्तारी ॥ गोविन्द त्रिविक्रम विष्णु चतुर्भुज धारी ॥ मधुसूदन वामन श्रीधर पर उपकारी ॥ प्रद्युम्न अधोक्षज नरहरि हरि सुखकारी ॥ हे हृषीकेश संकर्षण कृष्ण मुरारी ॥ ३ ॥ अनिरुद्ध जनार्दन वासुदेव अविनासी ॥ हे पद्मनाभ दामोदर जन मन बासी ॥ हे उपेंद्र उत्कट असुर प्रबल दल त्रासी ॥ जो पठन करे पद कटिहैं संकट रासी ॥ बलवंत सदा भगवन्त चरण बलिहारी ॥ ४ ॥

पद १०५.

स्वामि बिन ऐसो कौन दयाल ॥ धृ० ॥ सुमिरन करत विकल उठि धावें, करैं भक्तप्रतिपाल ॥ १ ॥

राखत हैं निज जन निस वासर, जिम कच्छप प्रिय-बाल ॥ २ ॥ टेरत कूदि खंभ कों फारौ, विपत हरी तत्काल ॥ ३ ॥ अन्य भजें जग छांड़ि स्वामि अस, फसें ते माया जाल ॥ ४ ॥ सुरत संग लागे रहैं निस दिन, धन बलवंत कृपाल ॥ ५ ॥

पद १०६.

नाथ बिन को पत राखन हार ॥ ऐसो कौन उदार ॥ धृ० ॥ ग्रस्यो ग्राह गजराज जब, व्याकुल करी पुकार ॥ चक्र नक्र शिर काटिकें, लीन्हों त्वरित उबार ॥ १ ॥ जब दुःशासन द्रौपदी, सन्मुख राज समाज ॥ बिना वसन लागो करन, तब राखी प्रभु लाज ॥ २ ॥ जिनकों या संसार में, नहीं कहूं आधार ॥ तिनके दीन दयाल प्रभु, तुमहिं एक रख-वार ॥ ३ ॥ व्याध गीध गणिका जिन्हें, तज्यो सकल संसार ॥ ऐसे अधम अनाथ ते, त्वरित किये भव-पार ॥ ४ ॥ प्रणतपाल प्रणपाल हरि, त्रिभुवन सुयश तुम्हार ॥ देखि मगन बलवन्त छबि, बार बार बलिहार ॥ ५ ॥

पद १०७.

दीन हितकारी मोरा नाथ ॥ धृ० ॥ अजामील से अधम उधारे, विश्वविदित गुण गाथ ॥ १ ॥ जब जल मांझ ग्राह गज खींच्यो, डूबत पकऱ्यो हाथ ॥ २ ॥ विनय करत बलवंत जोर कर, कीजै आज सनाथ ॥ ३ ॥

पद १०८.

मैं अस श्रवण सुनी बृजराज ॥ दीन दयाल पतित पावन प्रभु, राखत जन की लाज ॥ धृ० ॥ गज अति दीन हीनबल भो जब, ग्रस्यो आय झषराज ॥ आरत गिरा उचारत पहुंचे, त्वरित त्यागि खगराज ॥ ॥ १ ॥ केवट कीश असुर किय पावन, दे धन राज समाज ॥ भनि बलवंत कान्त कमला के, लीजिये नाथ निवाज ॥ २ ॥

पद १०९.

सुनिये अरज हमारी, गिरधारी संकट हारी, डूबत लेहु उबारी ॥ धृ० ॥ मैं पतित तुम पतित

उधारन, अपनी ओर निहारी॥ जन बलवंत आस चरणन की, आयो शरण तुम्हारी ॥ २ ॥

पद ११०.

सुनिये दीनदयाल देव दीनन दुखहारी॥ दीनबन्धु सुखसिन्धु दयानिधि जन हितकारी ॥ १ ॥ विना पंख के बाल विहंग व्याकुल जस भारी॥ पीड़ित क्षुधा महान वत्स जिम धेनु निहारी ॥ २ ॥ तृषित चातकी स्वातिबूंद हित बदन पसारी॥ प्रिया पियाकी बात तकत नैनन जल ढारी ॥ ३ ॥ तैसे अब बलवंत विलोकत बाट तुम्हारी॥ बेग दरस अब देहु कृपानिधि कुंजबिहारी ॥ ४ ॥

पद १११.

दरस अब दीजे श्रीनंदलाल ॥ धृ० ॥ अब नहिं सह्यो जाय मोपे दुख, करुणा करिय कृपाल ॥ १ ॥
बीते जुग अनंत पद बिछुरे, धीरज अब न गुपाल ॥ २ ॥
मैं यदि क्रूर कुटिल अघ खानी, तुमहो पतितनपाल ॥३॥
कृपापंथ बलवंत निहारत, कीजै बेगि निहाल ॥ ४ ॥

पद ११२.

श्याम मुख देखे ही परतीत ॥ धृ० ॥ ऊधो कहा सिखावत हमको, ज्ञान ध्यान की रीत ॥ १ ॥ हम अबला नहिं जानी ऐसी, लावत कटु फल प्रीत ॥ २ ॥ यह बलवंत विरह रसके बस, लेहैं तिहुंपुर जीत ॥ ३ ॥

पद ११३.

सेवक न जियेंगे बिना दरस पद पाये ॥ नहिं आप रहोगे बिना कृपा दिखलाये ॥ १ ॥ हैं सुभाव अपने अपने बने बनाये ॥ यह अखंड नाते कैसे मिटें मिटाये ॥ २ ॥ फिर क्यों रखते हो वृथा जिया तरसाये ॥ इक दिन तो देउगे मुझे मेरे मनभाये ॥ ३ ॥ कभी उदारता में विचार नहिं आता है ॥ जब देना है फिर उसमें आज कल क्या है ॥ ४ ॥ दाता तो दीन मुख देखे ही देता है ॥ बलवंत करे मत देरी दिल दुखता है ॥ ५ ॥

पद ११४.

रहते हैं व्यथित नित विरह विपत के घेरे ॥ मुख दिखा दियाकर कभी तो सांझ सबेरे ॥ १ ॥ तुमहीं

हो केन्द्र मेरे सुख संपति केरे ॥ तेरे ही नाम से फिरे हैं मेरे फेरे ॥ २ ॥ नहिं रही ज़रा भी सकत श्याम तन मेरे ॥ दम निकल जायगा हाय बिछुरते तेरे ॥ ३ ॥ जावेंगे योंहिं क्या विना कमल मुख हेरे ॥ बलवंत तुम्हारे जनम जनम के चेरे ॥ ४ ॥

पद ११५.

दीनानाथ कहां लगाई देर ॥ धृ० ॥ बाट तकत अँखियां पथराईं, थाको मग मग हेर ॥ १ ॥ करत पुकार कंठ कुंठित भो, सुनी न अबलौं टेर ॥ २ ॥ जन बलवन्त आस दरशन की, परो द्वार तव घेर ॥ ३ ॥

पद ११६.

सोचत मोहिं बहुत दिन बीते ॥ धृ० ॥ चाहत बहुत स्वामिपद सेवन, होत नहीं चित चीते ॥ १ ॥ यह परचण्ड प्रबल माया से, जीव कवन विधि जीते ॥ २ ॥ व्याकुल रहत सतत जिय मेरो, कृपासिन्धु याहीते ॥ ३ ॥ कौन दशा बलवन्त होय अब, रहत सदा भय भीते ॥ ४ ॥

पद ११७.

मन की भीति मोहिं अति भारी ॥ धृ० ॥ पलटत जाहि कलप नहिं लागे, जिमि भुजंग विषधारी ॥ १ ॥ जोगी जती साधु सन्यासी, रहे सकल हियहारी ॥ २ ॥ नहिं विश्वास यदपि सतसंवत, रहै सुमारग चारी ॥ ३ ॥ पीपी पयहिं गरल खल उगले, दुष्ट भयंकर भारी ॥ ४ ॥ रुकै न अब बलवंत कृपा बिन, काली दमन मुरारी ॥ ५ ॥

पद ११८.

ये मन मूढ सुभाव आपनो, नाथ काहुबिध नाहिं तजै ॥ धृ० ॥ जिहि कारण दारुण दुख पावत, करत सोइ शठ नाहिं लजै ॥ १ ॥ किये अमिय उपदेश अनेकन, तिनहिं निदरि विष विषय भजै ॥ २ ॥ नेक न शठ हठ तजै आपनी, कहो खलहिं कहं लौं बरजै ॥ ३ ॥ मन मतंग बलवंत न माने, हरिपद अंकुश धरो निजै ॥ ४ ॥

पद ११९.

जग षट वैरी बलवान, करैं मतिहान, सुर ईश, गिरीश, मुनीश, सबनके करैं गलित अभिमान ॥ धृ० ॥

ये क्रोध अनल जग जारा, नीती पथ लोभ बिगारा॥ कामिनी कामना नैन बान, बस कीनो सकल जहान ॥ १ ॥ यह मोह पाश अति भारी॥ जीते गल फांसी डारी ॥ मद मदन मौज की फौज चढै, तब को ठेरै बलवान ॥ २ ॥ उर मत्सर भुजंग भारा ॥ विष सुखपुर सकल उजारा ॥ जब धारि प्रखर तरवार चढैं छैउ कौन बचावे प्रान ॥ ३ ॥ जग जीव बाल इक जानो ॥ तिहि साथी ज्ञान पुरानो ॥ बलवन्त बिकट जब जुद्ध जुरै, तब पत राखे भगवान ॥ ४ ॥

पद १२०.

प्रभु की महिमा अगम अपार ॥ धृ० ॥ नेति नेति निगमागम गायो, रहे मौन मुनि धार ॥ १ ॥ थाके शेष महेश सुरेशहु, कोउ न पायो पार ॥ २ ॥ दीन दयाल विश्व उद्धारण, धारो वृज अवतार ॥ ३ ॥ सेए न सहित सनेह चरण जिन, ते डूबे मजधार ॥ ४ ॥ जे बलवंत शरण तकि आये, भयो सहज उद्धार ॥ ५ ॥

पद १२१.

कृपानिधान सुजान प्राणपति, तुम्हरी सुध कैसे बिसरावै ॥ संकटहरण भरण पोषणता, इनकी जब उर में सुध आवै ॥ पल पल प्रीति जिया में उँमगत, नैनन में माधुरि छबि छावे ॥ १ ॥ जिनको जीवन चरण तुम्हारे, किहि विधि वे निज समय बितावें ॥ वत्सलता, ममता सुशीलता, सुन्दरता प्रति पल सुध लावे ॥ २ ॥ निसदिन गुण बलवंत नाथ के, जाके श्रवण मनन में आवे ॥ ताहि बिसरबो कैसे होवे, सोवतहू कर पकरि जगावे ॥ ३ ॥

पद १२२.

दयानिधान सुजान प्राणपति, दूर देस किमकर मोहि डारो ॥ मेरोही भार भयो कह भारी, भुवन चतुर्दश को रखवारो ॥ धृ० ॥ यदि अपराधी तदपि किते दिन, सहिहों शिक्षाभार दुखारो ॥ नीति रीति विपरीत होय सब, जो जुग जुग मोहिं योंही टारो ॥ १ ॥ दुःख वियोग दुसह भो अब तो, वेगि उपाय दयाल बिचारो, रोय रोय अँखियां लाल भईं, अरु कंठ रुद्ध भो करत पुकारो ॥ २ ॥ जल बिन मीन

सुता बिन माता, जिम धेनू बिन बत्स विचारो, तैसी है हरि दशा हमारी, अब बलवंत दया उर धारो ॥ ३ ॥

पद १२३.

प्रभु बिन को भव विपत हरै ॥ धृ० ॥ संसृत व्याध अगाध जीव की, टारे नाहिं टरै ॥ १ ॥ ज्यों ज्यों याहि विचारो त्यों त्यों, दुर्घट दृष्टि परै ॥ २ ॥ गलित होत आयुध साधन सब, यह मग चरण धरै ॥ ३ ॥ बाल ख्याल नहिं मुक्ति पदारथ, योगिन धीर गरै ॥ ४ ॥ निज भुजबल बलवन्त नहीं कोउ, दुस्तर सिन्धु तरै ॥ ५ ॥

पद १२४.

वहुत दिन टारो अब न टरैं ॥ धृ० ॥ जनम जनम के दास आपके, कैसे पद बिसरैं ॥ १ ॥ समरथ नाथ बिना निज दुख कर, कासों विनय करैं ॥ २ ॥ आस और विश्वास कहांलों, व्याकुल जीव धरैं ॥ ३ ॥ अब बलवंत होय सो हौवे, द्वारो घेर परैं ॥ ४ ॥

पद १२५.

नाथ दिन बीत गये बहुतेरे ॥ धृ० ॥ श्रवण परी न पुकार आजलौं, परे द्वार नित घेरे ॥ १ ॥ वेड़ी ममता तन को स्वामी, तुम बिन कौन निवेरे ॥ २ ॥ कवन हेतु तट लगत न तरणी, करण धार तुम मेरे ॥ ३ ॥ काल मान लखि विकल होत चित, लखि निज घर के चेरे ॥ ४ ॥ शरण गये की लाज निबाहत, यह दृढ़ निश्चय मेरे ॥ ५ ॥ चरण वियोग रोग तनलागो, पल पल जुग सम हेरे ॥ ६ ॥ दृढ़ विश्वास बलवंत राखिये, आये दिन सुख केरे ॥ ७ ॥

पद १२६.

कृपा गुणगाथ नाथ किम गाऊं ॥ धृ० ॥ जप तप जोग जतन नहि एकहु, तुम्हरो कहत लजाऊं ॥ तापर बहुविधि कृपा करी हरि, तोउ न हिये अघाऊं ॥ १ ॥ दानिहिं दया देखि याचक जस, पुनि पुनि मांगन धाऊं ॥ अबकि बेर मुहिं और एक बर, दीजे पुनि न सताऊं ॥ २ ॥ जिन तब सकृत दरस हित त्यागे, उभय लोक सुख ठाऊं ॥ नित-बलवंत राखिये तिनके, चरणाम्बुज की छाऊ ॥ ३ ॥

पद १२७.

कृपा गुणगाथ चहूं दिस छाई, सुनि जन आये धाई ॥ धृ० ॥ कहा कथा गज गीध व्याध की, जिहि जन पुनि पुनि गाई ॥ कोटि कोटि नित पतित उधारत, साखी जिन गति पाई ॥ १ ॥ जो चित चढ़ी कामना जाके, पूरण की यदुराई ॥ सदा खुले भंडार स्वामि के, कर सके को समताई ॥ २ ॥ सकुचत हों निज दीन दशा लखि, अरु तुम्हरी प्रभुताई ॥ समझ परे नहिं नेक कवन विधि, लियो दीन अपनाई ॥ ३ ॥ तदपि सतत भय भीत रहत हौं, लखि निज चित चपलाई ॥ यह बलवन्त कुशील कुमति अति, करै न पुनि कुटिलाई ॥ ४ ॥

पद १२८.

कृपानिधि चरण शरण अब दीजे ॥ धृ० ॥ जन्म अनेक भ्रम्यो भवसागर, अब जिन नाथ तजीजे ॥ १ ॥ शरणागत प्रतिपाल नाथ प्रण, तापर छिन चित दीजै ॥ २ ॥ दयासिन्धु दीनन प्रतिपालक, जन अपनो करलीजे ॥ ३ ॥ भवबाधा बलवन्त व्यथित अति, करुणा सत्वर कीजे ॥ ४ ॥

पद १२९.

करि साधन हारे, मिटा न भव का फेरा ॥ अब आपहि करो उपाय, नाथ कुछ मेरा ॥ १ ॥ माया ने ऐसा हाथ, सीस पर फेरा ॥ जितना सुलझाया जाल पड़ा उलझेरा ॥ २ ॥ जुग बीते नाथ अनंत, विपत ने घेरा ॥ दुखद्वंद काटि ब्रज चंद्र करो, निरवेरा ॥ ३ ॥ हे अधम उधारन नाथ, विदित ब्रद तेरा ॥ अब कृपा करो बलवन्त चरण का चेरा ॥ ४ ॥

पद १३०.

अपराध मेरे जिन ध्यान धरो, हे दयासिंधु अब क्षमा करौ ॥ धृ० ॥ मैं अतिदीन मलीन हीन मति, माया जाल परौ ॥ १ ॥ समरथ नाथ उदार सुमति शुचि, सुमिरत को न तरो ॥ २ ॥ श्रीयदुनाथ गाथ यह सुनि सुनि, उर अनुराग भरो ॥ जुगलचरण बलवंत शरण अब, भव दुख द्वंद हरो ॥ ३ ॥

पद १३१.

हमारो जीवन नाम तिहारो ॥ धृ० ॥ विसरत सुरत स्वांम इक जाकी, बिकल होत जिय भारो ॥ याहि

आसरे सुख सों जीवत, आन न पोषण हारो ॥ १ ॥
चाखत रस रसना रस बाढत, अमृत कहा बिचारो ॥
हारे को हरि नामहिं जग में, केवल तारनवारो ॥ २ ॥
जीवन मूरि यही विरहिन को, जहंलगि दृष्टि पसारो ॥
सो वलवंत नाम यह मुखसों, नाथ न कीजे न्यारो ॥ ३ ॥

पद १३२.

तुम विन आन उपाय न मोरे, शरण भयो करुणाकर तोरे ॥ धृ० ॥ अजित अजा जग व्यापक जाने, ब्रह्मादिक छिन में झकझोरे ॥ १ ॥ तहं कह कथा होय नर पामर, जुद्ध अजागज जैसे जोरे ॥ २ ॥ ऐसे प्रवल फंद माया मधि, बंध्यो आय कर्मन के डोरे ॥ ३ ॥ कोउ विधि बँध बलवन्त द्वंद को, छूटै ना विन तुम्हरे छोरे ॥ ४ ॥

पद १३३.

चरण गहों बिनवहुं करजोरी, देहु नाथ भव-बंधन तोरी ॥ धृ० ॥ अधम उधारन नाम तिहारो, कीरति पसरि रही चहुंओरी ॥ कृपा पंथ निरखत

निस बासर, बैठो चरण कमल दृग जोरी ॥ १ ॥ जन्म अनेक भ्रमत भये स्वामी, विपता सही नहीं कछु थोरी ॥ अब बलवंत विलंब न कीजै, जानि दास वृषभानु किशोरी ॥ २ ॥

पद १३४.

बिनवत बीतो वृजनाथ समय नहिं थोरा ॥ मुख से बोलो दो बोल, विकल जिय मोरा ॥ धृ० ॥ मोतन हरि हेरो नेक, कृपा दृगकोरा ॥ तव चारुवदन निरखत जिम चंद्र चकोरा ॥ १ ॥ जुग बीते अट्ठाईस, विहंगपति गामी ॥ नहिं आसा पूरण भई, आजलौं स्वामी ॥ २ ॥ तुम दीनानाथ दयानिधि, जस चहुं-ओरा ॥ केसो कीन्हों हमरेहित, हृदय कठोरा ॥ ३ ॥ कन्या जैसे निज श्वसुर, सदन को जावे ॥ लखि जननी आनन, बारबार बिलखावे ॥ ४ ॥ जिम मीन दीन जीवन, बिन कल नहिं पावे ॥ ५ ॥ मृगी भूलि शिशुहिं बन, जैसे शोधत धावे ॥ तैसी भइ हमरी दशा, गोपीचित चोरा ॥ बलवंत आस पुजवहु, श्री नंदकिशोरा ॥ ६ ॥

पद १३५.

अब कब कृपा करहु राघेवर ॥ दीन छीन मति हीन जानकर ॥ ध्रू० ॥ जोवन गयो जरा अंग आई, झलकन लगी स्वेत लट मुख पर ॥ १ ॥ तौउ न प्राणनाथ सुध लीन्ही, अस कस कठिन भये करुणा-कर ॥ २ ॥ दीनबंधु प्रभु नाम तिहारो, छाय रह्यो जस अवनि मनोहर ॥ ३ ॥ अब वलवंत अबेर कवन विधि, वेगि द्रवहु करुणा गुणसार ॥ ४ ॥

पद १३६.

काहु दिन कृपा होयगी स्वामी, यह निश्चय मो मन सब भांत ॥ ध्रू० ॥ तव लग यह दुरदशा हमारी, कारन कवन विलोकत तात ॥ १ ॥ काल करहु सो आजहि कीजे, तुम्हें नहीं कछु दुरघट बात ॥ पीर सहत हैं धीर धरत हैं, रैन दिना मन को समु-झात ॥ २ ॥ जन्म अनंत याही विधि वीते, दुसह कोउ नहिं हमें दिखात ॥ पै तुम्हरे सन्मुख प्रभु आवत, धीर वीरता सकल परात ॥ ३ ॥ जिम वलवंत मात मुख देखे, ताड़ित वाल व्यथा अधिकात ॥ ४ ॥

पद १३७.

जन्म योहीं बीतो जात विहारी ॥ जबतें भो संबंध आपते, मिले न एकहु वारी ॥ कबलों धीरज धरों प्राणपति, देखहु हृदय विचारी ॥ १ ॥ वालापन योवन सब बीतो, स्वेत भई लट कारी ॥ तोउ न नाथ नेक सुध लीन्ही, अस कठोर भये भारी ॥ २ ॥ इक आधार नाम धरि तुम्हरो, वैठी सवन विसारी ॥ ३ ॥ अब जिन अंत कंथ कछु देखो, होवे हंसी तुम्हारी ॥ ४ ॥ तुम बिन आन गती नहिं राखो, चाहे देहु विडारी ॥ ५ ॥ गोपीनाथ गाथ करुणा तव, निगमागम विस्तारी ॥ ६ ॥ करिये वेगि विचार स्वामि चित, अपनो नाम निहारी ॥ ७ ॥ अब बलवंत विलंब न कीजै, देहु दरस बनवारी ॥ ८ ॥

पद १३८.

तुम्हीं पै रचो है सुहाग बिहारी, नाथ कवन विधि सुरत विसारी ॥ धृ० ॥ कृपानिधान सुजान प्राणपति क्षमिये भूल चूक बनवारी ॥ १ ॥ जो अपराध अगाध किये मैं, समरथ नाथ उदार बिचारी ॥ २ ॥ बांह

गहे की लाज तुम्हीं को, प्रीतरीत प्रातिपाल मुरारी ॥ ३ ॥ दया निधान कान दे सुनिये, करत विनय श्रीपद सिरधारी ॥ ४ ॥ बहुत अबेर भई करुणाकर, अबलौं सूनी सेज हमारी ॥ ५ ॥ अति व्याकुल बलवंत विरहबस, दरस देहु श्रीकुंजबिहारी ॥ ६ ॥

पद १३९.

लगन तोसे लागी रे घनश्याम ॥ धृ० ॥

दोहा ।

प्रीतम परम सुजान पुनि, कृपासिंधु गुणधाम ।
रूप शील गुण सींव शुचि, लाजत कोटिन काम ॥१॥धृ०॥

(चाल)

कुटिल लटा लटकें मुख ऊपर, वदन इंदु छबि छटा मनोहर ॥ भृकुटी कुटिल नैन मन्मथसर, सोहत सुन्दर वेणु अधर पर ॥

दोहा ।

ऐसे रूप अनूप को, देखि गई बौराय ॥ ढूंढत बृज बलवंत सब, घर अँगना न सुहाय ॥ १ ॥

पद १४०.

दिन रैन झरोके नैन लगे रहते हैं ॥ विन लखे तेरे नंदलाल बिकल होते हैं ॥ धृ० ॥ इक नजर देखने में क्या हम लेते हैं ॥ है खेल तुम्हारा सुख से हम जीते हैं ॥ १ ॥ जीवन है हमारा सूरत श्याम तुम्हारी ॥ इक वेर दिखादे हमे वह मूरति प्यारी ॥ २ ॥ वलवंत तजे मत धीर पड़ा रह दर पर ॥ आवेगा कभी नंदलाल खेलता बाहर ॥ ३ ॥

पद १४१.

कुर्बान जान सूरत पै किया करते हैं ॥ हम तुम्हें देख वृजराज जिया करते हैं ॥ १ ॥ गजराज मस्त जिस तरह चुआ करते हैं ॥ दिन रैन हमारे नेन वहा करते हैं ॥ २ ॥ यों प्रीति बेल को पानि दिया करते हैं ॥ कब फूलेगी यह बाट तका करते हैं ॥ ३ ॥ कोई पूछे क्या वलवंत किया करते हैं ॥ आगे की मंजिल सफा किया करते हैं ॥ ४ ॥

पद १४२.

जबसे देखी झलक तुम्हारी, हुवा है यह दिल दीवाना ॥ तेरे कारण, नाथजी, लिया फकीरी का बाना ॥ धृ० ॥ कितने जनम बीत गये योंहीं, कब तक दिलको बहिलाना ॥ १ ॥ तन में खाक रमाई मनको, किया है सबसे बेगाना ॥ २ ॥ बालापन की प्रीति सांवरे, हाय भूल कहिं मत जाना ॥ ३ ॥ जबसे तुझसे हुई मुहब्बत, और किसीको नहिं जाना ॥ ४ ॥ मरते हैं हम तेरी सूरतपै, शमापै जैसे परवाना ॥ ५ ॥ सब रौनक़ है तेरे ज़ात की, वर्ना है जग वीराना ॥ ६ ॥ इस बलवंत इश्क़ का तेरे, रहेगा जग में अफसाना ॥ ७ ॥

पद १४३.

कमल मुख कबलौं दुराये रहौगे ॥ धृ० ॥ निशि दिन दरस लुब्ध दृग मधुकर, कब सुख देन चहौगे ॥ १ ॥ प्राणनाथ यदुनाथ कवन दिन, हँसि हँसि बैन कहौगे ॥ २ ॥ कब करि पूरण आस हमारी, तिहुं-पुर सुयश लहौगे ॥ ३ ॥ दृढ़ भरोस बलवंत विरह लखि, हरि कर धाय गहौगे ॥ ४ ॥

पद १४४.

जबसे देखे श्याम सुंदर सखि, पलभर पलक न लागी ॥ धृ० ॥ निशि दिन विकल विलोकत चहुंदिशि, श्याम रूप अनुरागी ॥ १ ॥ बीतत युगसम निमिष विरहवस, काम अनल उर जागी ॥ २ ॥ भूषण वसन भार विषसम भये, खान पान दिय त्यागी ॥ ३ ॥ आन मिलैं बलवंत श्याम जब, तबहिं होउं बड़भागी ॥ ४ ॥

पद १४५.

कवन परे ऐसी विपता में, प्रीति किये को फल पायो ॥ धृ० ॥ तन मन धन अपनो सब वारो, तोउ न उनके मन भायो ॥ १ ॥ प्रीति किये ते दुख उपजत है, बोयो कहा कहा फल आयो ॥ २ ॥ नेह पंथ बलवंत कठिन है, धरत तुरत पग उरझायो ॥ ३ ॥

पद १४६.

देखी जबसे मोहिनि मूरति, रूपरंगीं अँखियां मेरी ॥
हाय कहूं क्या, जागता जादू है सूरत तेरी ॥ १ ॥

नाम तेरा अमृत से मीठा, स्वाद बढ़ा रसना घेरी ॥ सुनके गुणगण, सदा मैं बिना मोल-की हुइ चेरी ॥ २ ॥ विरह विकल बलवंत द्वार पर, निसदिन करता है फेरी । मिलजा प्यारे, वहुत दिन हुये करै मत अब देरी ॥ ३ ॥

पद १४७.

वृज वीथिका वजार मोहन, ढूंढिआई रे ॥ धृ० ॥ गोकुल ढूंढि वृन्दावन ढूंढो, हारे यसुमति माई ॥ १ ॥ पल पल मोहिं जुगन सम बीतत, रो रो रैन बिताई ॥ २ ॥ वढ़ी व्यथा बलवंत विरह की, दीजै दरश कन्हाई ॥ ३ ॥

पद १४८.

जब से श्याम गये मधुबन को ॥ धृ० ॥ धरत न धीर एक पल आली, कहा करिय या मन को ॥ १ ॥ सूल से फूलभये विष बीरी, सिंगार अंगार से तनको ॥ २ ॥ किहि विधि प्राण राखिये सजनी, गताधार जीवन को ॥ ३ ॥ वृजवनिता बलवंत श्याम बिन, करें कहा गृहधन को ॥ ४ ॥

पद १४९.

हे ली अवलौं हरि नहिं आये ॥ धृ० ॥ धेनु धाय बत्सन सन लागीं, खगगण नीड बसाये ॥ १ ॥ भूले पथिक प्रातके पंथन, भरमत सदन सिधाये ॥ २ ॥ विरहकथा बलवंत कथनवर, अधिक अधिक रस छाये ॥ ३ ॥

पद १५०.

घनश्याम तुम्हें हेरत हेरत, चहुंओर सकल बृज-भूमि फिरी ॥ धृ० ॥ नहिं नाथ पंथ को पतो लगो, गृह ग्राम विपिन कंदरी गिरी ॥ १ ॥ करि मोह भंग रचि भस्म अंग, सेली सिंगी कफनी डारी ॥ लट कुटिल गूंथि साजि जटाजूट, लियो जोग भार माथे भारी ॥ २ ॥ तुमसे जो हित अनहेतु कियो, ताके फल पाय भले बनवारी ॥ यह नेह निवाहन नाथ कियो, तुम भोग करो हम जोग धरी ॥ ३ ॥ जहं रहो तहां सुख रहो लला, रचना तो विरंची योंहि करी ॥ श्रीगोपी पदरज राचि बलवन्त, मन मस्त भये डोलें लहरी ॥ ४ ॥

पद १५१.

कहां गया वह पीतम प्यारा श्याम हमारा, मैं ढूंढि फिरी वन बरसाना नंद द्वारा ॥ धृ० ॥ कहं बैठे बदन दुराय जाय मनहारी ॥ देखन को अँखियां तरसें श्याम हमारी ॥ १ ॥ कैसे जगनायक जल थल में संचारी ॥ कहुं ओट उजागर दिखी न सूरत प्यारी ॥ २ ॥ मुख दिखलाना भी हुआ तुम्हें तो भारी ॥ फिर होय हमारी कौन गती गिरधारी ॥ इक तेरे नामपर बैठि जनम सब काटा ॥ परतीत प्रेमकों नहीं किसी संग बांटा ॥ ४ ॥ बलवंत अंत नहिं चरणकमल बिन थारा ॥ कहां गया० ॥

पद १५२.

अरी दई मारी जरो यह होरी ॥ धृ० ॥ श्रीघन-श्याम वियोग व्यथा वस, कारी भई सब गोरी ॥ १ ॥ रंग गुलाल लाल संग गो अब, धूरि उड़त चहुंओरी ॥ २ ॥ लखि ज्वाला ज्वाला तन भड़के, अंग अंग होरी जोरी ॥ ३ ॥ बिरह बह्नि सों विपिन जरत है, होरी लगी सब ठोरी ॥ ४ ॥ बिरहानल सों सिन्धु

दहत है, नहिं बड़वानल भोरी ॥ ५ ॥ तड़ित नहीं तलफन तिय जिय की, नभलौं अनल बढ़ो री ॥ ६ ॥ प्रभु बलवन्त वेगि चल मिलिये, जबलौं पावक थोरी ॥ ७ ॥ होरी करैं ननरु तिहुंपुर की; बाला बिरहन बोरी ॥ ८ ॥

पद १५३.

कैसे दूर देस मोहिं डार दई, पुनि नैहर सों कोउ सुध ना लई ॥ धृ० ॥ वैरिन सास ननँद दुख-दाई, पीतमसौं पहिचान नई ॥ जैसे वत्स बिकल बिन धेनू, तैसी गति निस दिवस भई ॥ २ ॥ भूषण डारों, बसनन जारों, खाय रहों विष हाय दई ॥ ३ ॥ बिन बलवंत मात के हेरे, दशा मिटे नाहिं दुःख मई ॥ ४ ॥

पद १५४.

जाकी व्यथा सोई इक जाने, कृष्णप्रीति जिहिं लागी बलाय ॥ धृ० ॥ नासो सुख संसार यहां सब, पीतमपंथ अगम दरसाय ॥ १ ॥ बौरी कहै कुटुंब पुरवासी, गलिन बालगण धूर उड़ाय ॥ २ ॥ खान

पान उपभोग रोगसम, उन बिन आन न कछू सुहाय ॥ ३ ॥ गुरुजन स्वजन नित्य मोहिं पूंछें, कैसे पदों फारि बताय ॥ ४ ॥ कबहूं गावत कबहूं नाचत, कबहूं जल लोचन भरलाय ॥ ५ ॥ जंत्र मंत्र अरु तंत्र फुरे नहिं, करत उपाय व्यथा अधिकाय ॥ ६ ॥ व्याकुल रहत सतत चित अपनो, उरझें स्वांस जिया घबराय ॥ ७ ॥ दूरदेश पीतमकी नगरी, कृशतन मग पग धरो न जाय ॥ ८ ॥ लोक और परलोक तजे दोउ, तोऊ नेक नहिं उनके भाय ॥ ९ ॥ जनम जनम सजनी योंहि वीते, कबलों जिय को धीर बंधाय ॥१०॥ हाहा पंथ प्रीति को दुर्घट, लोगन को तो खेल दिखाय ॥ ११ ॥ इत बलवंत दशा यह अपनी, उत पीतम रहे बदन दुराय ॥ १२ ॥ परबस प्राण भये अब सजनी, करे जो वाको भली लखाय ॥ १३ ॥

पद १५५.

ऊधो कौन जतन अब कीजे ॥ धृ० ॥ यह बिरहा कटु कूट कहांलों, घूंट घूंट कर पीजे ॥ १ ॥ तुम्हरो कपट भयो जग जाहिर, अब नहिं कोउ पतीजे ॥ २ ॥ कान्ह सुजान प्राणपति बिछुरे, कवन आसरे जीजे ॥ ३ ॥

भारी होय भाव की कामरि, ज्यों ज्यों रतिरस भीजे ॥ ४ ॥ इतो संदेश चरण गहि हरिके, ऊधो कहि जस लीजे ॥ ५ ॥ वृजवाला वलवंत विकल अति, वेगि दरस प्रभु दीजे ॥ ६ ॥

पद १५६.

श्याम मुख देखन को वृज तरसे ॥ धृ० ॥ नैनन नीर प्रवाह निरंतर, तन विरहानल सरसे ॥ १ ॥ ऊधो अहो प्रीति की महिमा, आगि लगी जल वरसे ॥ २ ॥ शीस नमाय चरण गहि कहियो, व्यथा कथा नटवर से ॥ ३ ॥ अव वलवंत विलंव न कीजे, पलपल युग सम दरसे ॥ ४ ॥

पद १५७.

ऊधो निसिदिन धरकत छाती ॥ धृ० ॥ वनिताहग सरिता सम धारा, वहत रहत दिन राती ॥ १ ॥ आठो जाम रहत तन ताती, मनहु दीपि दइ वाती ॥ २ ॥ करो निदान कवन गद है यह, जासु जियत जर जाती ॥ ३ ॥ विपति वड़ी ओछे तिय हिय में, अव नहिं नेक समाती ॥ ४ ॥ यह वड़

ब्रह्मज्ञान पढ़वेकों, जोग न अबला जाती ॥ ५ ॥ काटत हैं हम काल आपनो, को जानें किहिं भांती ॥ ६ ॥ अब वलवंत प्रेमरस ताजिके, और न बात सुहाती ॥ ७ ॥

पद १५८.

ऊधो तुम तो परम सयाने ॥ धृ० ॥ वृजबालन को जोग पढ़ावत, आप भोग लिपटाने ॥ १ ॥ औरन ज्ञान पढ़ावन पंडित, कोरे आप दिखाने ॥ २ ॥ यह तुम्हरे पाखंड ज्ञान को, नहीं कोउ जग माने ॥ ३ ॥ यह वलवंत नेह के झगरे, प्रेम परे पहिचाने ॥ ४ ॥

पद १५९.

ऊधो मन नहिं पास हमारे ॥ धृ० ॥ भौंह बंक वन्सी बेधन करि, लैगये नंद दुलारे ॥ १ ॥ समझै सुनै ताहि कछु कहिये, बौरन कह सिर मारे ॥ २ ॥ कहत कौनसों कहा न जाने, बोलत बिना बिचारे ३ ॥ अब न कथौ वलवंत ज्ञान कछु तुम जीते हम हारे ॥ ४ ॥

पद १६०.

ऊधो प्रीत करी पछतानी ॥ ध्रु० ॥ हम जानी कछु काल निभेगी, उन कछु औरहि ठानी ॥ १ ॥ आप जाय परदेश विलम रहे, पठवत तुमसे ज्ञानी ॥ २ ॥ मधुपुरि के राजा भये मोहन, करी कूबरी रानी ॥ ३ ॥ यह झगरे वलवंत नेह के, वरनत सकुचत वानी ॥ ४ ॥

पद १६१.

उनहीं सों लागे नैन हमारे ॥ ध्रु० ॥ जाके सीस मुकुट पियरो पट, गल वनमाल बिमल डारे ॥ १ ॥ इंदु वदन तिल विंदु मदन जनु, बैठो सकुचि लाज मारे ॥ २ ॥ भृकुटी कुटिल कटीले लोचन, मनहु विशिख वर अनियारे ॥ ३ ॥ कुंचित केश सुवेश सीस पर, माइक मदन फंद कारे ॥ ४ ॥ जमी जाल रंग एक दिखानों, प्राण पखेरु फंसे प्यारे ॥ ५ ॥ ग्वालबाल संग धेनु चरावत, अंग छल वल सबसों न्यारे ॥ ६ ॥ मगन रहत वलवंत दिवस निशि, सो छबि अद्भुत उर धारे ॥ ७ ॥

पद १६२.

मेरो नेह लग्यो हरिसों सजनी, कल न पड़े उन बिन जिय को छिन, वैरिनसी कारी रजनी ॥ धृ० ॥ हाहा कोउ मधुपुरी जावो, श्याम बुझाय चरण गहि लावो। हमरे जिय की जरन बुझावो, कोउ मिलावो प्राणधनी ॥ १ ॥ खान पान मोहि कछु नहि भावे, भूषण वसन न नेक सुहावे। धवल धाम बन सदृश दिखावे, लागी जिय दृग कोर अनी ॥ २ ॥ अंखियां हरि दर्शन की प्यासी, कब मिलिहे मोहन सुख-रासी। जन बलवंत सदा अभिलाषी, दृगन लालसा लगीघनी ॥ ३ ॥

पद १६३.

सुरत वृजचंद्र की आवे, लखि फागुन को चंद ॥ धृ० ॥ वह कलंकि निष्कलंक हमरो, बिछुरे सब सुख कंद ॥ १ ॥ कहां वे भोग राग रंग गे सखि, कहां वे दिन आनंद ॥ २ ॥ अबतो फागु लगत है ऐसी, कुसुम बिना मकरंद ॥ ३ ॥ लखि कालिंदी कूल कदंबन, होवत मति गति मंद ॥ ४ ॥ विरह व्यथा बलवंत हरन हित, चलिय वेगि नदनंद ॥ ५ ॥

पद १६४.

श्याम बिन ना खेलोंगी मैं होरी । तुम कैसोही फाग रचोरी ॥ धृ० ॥ छियों न रंग गुलाल न परसों, लखों न आंखन रोरी । देहों अबीर बुहार द्वारते, गीत न गारी सुनोंरी, करौ जिन तुम बरजोरी ॥ १ ॥ बाला हट और बाल विकट हट, देखि दोउ इकठोरी । वृज बामा सब कृष्णपे आईं, कहि बिन्ती करजोरी, परी हट भानुकिशोरी ॥ २ ॥ सुनत वचन मोहन मुसक्याने, हिये अनुराग भरोरी । आये भवन राधिका माधव, अनुपम फाग मचोरी, रंग बलवंत बटोरी ॥ ३ ॥

पद १६५.

हमारे भाग परोहै नेह, बालापनसों रूप अराधन परी याहि करटेह ॥ १ ॥ विरह व्याप नित मान मनावन, झगरो और सनेह ॥ सुखशाली सूखे नहिं संतत, परत नेह को मेह ॥ २ ॥ सींचि सींचि बलवंत यही रस, रची विरंची देह ॥ ३ ॥

पद १६६.

हमारो कछुहु न और उपाय ॥ध्रु०॥ अपनी अँखियाँ लाल करोंगी, निसदिन नीर बहाय ॥ १ ॥ चुरियां तोरों मांग बिगारों, बसनन देहुँ जराय ॥ २ ॥ मारोंगी हिय कठिन कटारी, सोय रहों विष खाय ॥ ३ ॥ विरह व्यथा बलवंत हरहु हरि, नतर बसों वन जाय ॥ ४ ॥

पद १६७.

सुरत मोहिं मोहन की आवे, सखीरी जियरा अकुलावे ॥ध्रु०॥ घन घुमंड नभ मंडल छाये, दामिनि दमक कठोर ॥ परत फुवार पवन पुरवाई, मोरशोर चहुँ ओर ॥ १ ॥ फूलन पूरि कलिंद नंदनी, बहती करत कलोल ॥ हरित लता तरु कुसुमित कानन, देखि हृदय अनमोल ॥ २ ॥ सर सरितन सरसीरुह पुंजन गुंजन भँवरन भीर ॥ श्याम तमाल रसाल कुंज लखि, होवत हियो अधीर ॥ ३ ॥

पद १६८.

सुरत नहिं बिसरत पीतम की, हाय कह भई दशा मन की ॥ धृ० ॥ धन्य धन्य सौजन्य शीलता, दयालुता उनकी ॥ १ ॥ हियो हिलोरे लेत जब आवत, सुधि उर गुणगण की ॥ २ ॥ मुख मयंक भ्रूवंक माधुरी, छबि उन अधरन की ॥३॥ उर में उरझ रही सजनी, अनि सायक लोचन की ॥ ४ ॥

पद १६९.

मन उरझो श्रीगोविंद सों, अब सुरझै ना ॥ धृ० ॥ हों तो सहज झरोके झांकी, प्रीति रीति समुझै ना ॥ हँसि हेरो हरि मोतन जबते, पलभर चैन परै ना ॥ १ ॥ मन मूरख को किनो पढ़ाऊं, अपनी हठे तजै ना ॥ वह मूरति माधुरी दृगनसों, टारे तनक टरै ना ॥ २ ॥ खान अरु पान कछू नहिं भावे, मन छिन धीर धरैना ॥ नंदकुमार मिले बिन सजनी, तन में प्राण रहैना ॥ ३ ॥ बेगि उपाय करहु अस अली, जिहि बिध व्यथा बढ़ै ना ॥ बिन बलवंत रूप आराधन, अंकुर प्रीति जगै ना ॥ ४ ॥

पद १७०.

अँखियाँ वृजकिशोर निरखन को ॥ अति अकुलाति सतत घर बाहिर, धरत धीर नहिं छिन को ॥ धृ० ॥ तरसति रहति निरंतर जैसे, तृषित चातकी घन को ॥१॥ श्रीवृषभानु लली पद पंकज, रहत लगाये मन को ॥२॥ करें कृपा बलवंत स्वामिनी, तबहिं मिलें मोहन को ॥३॥

पद १७१.

कहु सजनी प्यारी, गोविंद कब अयहैं गोकुल ग्राम में ॥ धृ० ॥ सावन मास आस बहु लागी, बीतत भये निरास ॥ भादों में माधो आवन की, लागि रही पुनि आस ॥ १ ॥ कहु सजनी प्यारी ॥ धृ० ॥

(उत्तर सखी का.)

सावन भादों छाय रहे घन, निसदिन वर्षा त्रास ॥ गमन निषेध कियो निगमागम, जासों तजो प्रवास ॥ १ ॥ सुन राज दुलारी, आवत अब गोपाल लाल, लघुकाल में ॥ धृ० ॥

प्रश्न–सुआ हाथ पाती लिख भेजी, बीत गये दिन
बीस ॥ पलटि नहिं आयो आलि अबलौं,
कहा भई जगदीस ॥ २ ॥ कहु सजनी
प्यारी ॥ धृ० ॥

उत्तर–बनवासी वन फल दल खानो, वाकी कहा
प्रतीत ॥ बदलत नैन उड़त पिंजरासों, नहिं
काहू को मीत ॥ २ ॥ सुन राज दुलारी ॥ धृ० ॥

प्रश्न–पिहु पिहु चातक रटत है, दृढ़ धरि घन
विश्वास ॥ मिले न स्वाती बूंद जो, जीवन
की किम आस ॥ ३ ॥ कहु सजनी प्यारी ॥ धृ० ॥

उत्तर–चित्रा हस्त लगत गत मेघा, प्रगट जगत
यह रीत ॥ बरसे तो बरसे भलो, नाहीं कछुक
प्रतीत ॥ ३ ॥ सुन राजदुलारी ॥ धृ० ॥

प्रश्न–निर्मल जल नभ शशि विमल, लगत शरद
सुखधाम ॥ वालम पलटि विदेश सों, सबके
आये ग्राम ॥ ४ ॥ कहु सजनी प्यारी ॥ धृ० ॥

उत्तर–राज काज के जाल में, उरझि रहे कहुं बीर ॥
बहुत अबेर भई याहीसों, तजो न प्यारी
धीर ॥ ४ ॥ सुन राज दुलारी ॥ धृ० ॥

प्रश्न—सुगुणवंत हेमंत में, घर घर भोग विलास ॥
सब नर नारी करत हैं, मो पीतम नहिं
पास ॥ ५ ॥ कहु सजनी प्यारी ॥ धृ० ॥

उत्तर—जामिके सर सरितन सलिल, भये शैल अनु-
मान ॥ कुहर दुरे भू स्वर्ग कस, पग मग धरें
सुजान ॥ ५ ॥ सुन राज दुलारी ॥ धृ० ॥

प्रश्न—त्रिविध पवन कुसुमित गहन, भ्रमर सरस
गुंजार ॥ कल कोकिल की कूक सुनि, होत
करेजो छार॥ ६ ॥कहु सजनी प्यारी ॥ धृ० ॥

उत्तर—लखि वसंत विरहा व्यथित, चले भवन सुध
लाय ॥ सुमन फूलि शर बन रहे, कंथ पंथ
बिसराय ॥ ६ ॥ सुन राजदुलारी ॥ धृ० ॥

प्रश्न—खस खाने खासे खड़े, हौदन नीर गुलाब ॥
जल केली रत नारि नर, नहीं जिया को
ताव ॥ ७ ॥ कहु सजनी प्यारी ॥ धृ० ॥

उत्तर—घोर घाम वायू तरल, जल थल अनल समान ॥
तरवर ठाढ़े जरत हैं, किहि विधि आवें
कान्ह ॥ ७ ॥ सुन राजदुलारी ॥ धृ० ॥

प्रश्न–विरह व्यथा बस रैन दिन, बीते द्वादश मास ॥ अब कहु पीतम मिलन की, रहैं छोड़ जिय आस ॥ ८ ॥ कहु सजनी प्यारी ॥ धृ० ॥

उत्तर–बीर धीर जिन त्यागिये, और एक है मास ॥ अधिक मास बलवंत में, पूरण ह्वैहै आस ॥८॥ सुन राज दुलारी ॥ धृ० ॥

पद १७२.

कहा कहूं कछु कहि नहिं आवे, बिसरगई सब मति गति मोरी ॥ धृ० ॥ हम जानी हम चाहत उनको, सोतो केवल भास भयोरी ॥ अब यह जान-परी है सजनी, वे सांचेहु चाहत हमकोरी ॥ १ ॥ जबते भनक परी यह कानन, सूझत नहिं कछु कहा करोंरी ॥ मैं अतिकूर कुशील कुजातिन, मोतन इतनो लक्ष कियोरी ॥ २ ॥ को जानै कबते वे चाहत, मैं-रहि हाय सदा मुखमोरी ॥ जांउ कवन मुखसों अब सन्मुख, रहत रैनादिन लाज मरोरी ॥ ३ ॥ लखि दयालुता प्राण नाथ की, सजनी मोजिय जात गरोरी ॥ अस बलवंत कृपानिधि पद पर, निस बासर धरि सीस रहोंरी ॥ ४ ॥

पद १७३.

चकित चित पीतम प्रीति निहार ॥ धृ० ॥ जो इक-वेर उन्हें कोउ सुमरे, वे सुमरत सौ बार ॥ १ ॥ भूलेहुं आलि हेरियत उन तन, रोकत बाट बजार ॥२॥ झूंटेहुं नेह करे जो सजनी, होत गले के हार ॥ ३ ॥ अस बलवंत कृपानिधि पदपर, डारों प्राणन वार ॥४॥

पद १७४.

सुन आवन की बात तुम्हारी, सजे सिंगार सहेलिन प्यारी ॥ धृ० ॥ विविध सुगंध अंगरच केसर, पहिरी सरस सुरंग रंग सारी ॥ १ ॥ वेंदी भाल आंज दृग अंजन चुनि चुनि मुतियन मांग सम्हारी ॥ २ ॥ बेला चमेली चक्री चंपक, कुसुमन सेज सजी सुखकारी ॥३॥ मंदिर मंजु दीप मणि राजत, धूप तरंग उड़त मन-हारी ॥ ४ ॥ निजकर हार गूंथि रचि बीरी, धरी साजि शीतल जल झारी ॥ ५ ॥ कहे बलवंत विलम्ब न कीजे, बाट तकत वृषभानदुलारी ॥ ६ ॥

पद १७५.

सखी को इनमें नंदकुमार ॥ धृ० ॥ सीस मुकुट मणि पीत पाट कटि, टकी कोर जरतार ॥ १ ॥ उर

विशाल बनमाल मनोहर, तापर गुंजाहार ॥ २ ॥ मृग दृग भौंहकमान कटाक्षन, विष बोरी तरवार ॥३॥ मुख मयंक बिन अंक केश जनु, रजनी धरी ॥ ४ ॥ वय किशोर चित चोर देहद्युति, तापर यौवन भार ॥ ५ ॥ धन बलवंत श्री कीरति नंदिन, पूछहिं बारंवार ॥ ६ ॥

पद १७६.

कवन को यह बालक सुकुमार ॥ धृ० ॥ जागृत मंत्र कलासी डोले, बन में मुकुट सम्हार ॥ १ ॥ अलि कुल नवल नलिन जिहिं जानी, भरमत सौरभ भार ॥ २ ॥ नव नीरद दल अतुल जानकें, केकी करत पुकार ॥ ३ ॥ सो मूरत बलवंत लखन कों, बैठे दृगन पसार ॥ ४ ॥

पद १७७.

मन मोहन महलन आज चलो, बनके श्रम सकल निवारौंगी ॥ धृ० ॥ बिथुरी यह कुटिल लटैं तुम्हरी, निज करसों साज समारौंगी ॥ १ ॥ सब विधि शृंगार कराय तुम्हें, लोचन भरि बदन

निहारौंगी ॥ २ ॥ बलवंत युगल रस रीत अनूप, निरखि नित तन मन वारौंगी ॥ ३ ॥

पद १७८.

कर पकर प्रीतयुत बोलत नारि सयानी ॥ घर चलो आज नंदलाल करौं मिजवानी ॥ धृ० ॥ तुम वहुत दिनन में मिले श्याम सुखरासी ॥ हंस बोल गये गल डार प्रीतिकी फांसी ॥ दिन रैन रही बेचैन विना तुम दासी ॥ भई आज सफल अँखियां दर्शन की प्यासी ॥ नाहिं छोड़ोंगी वृजराज आज यह ठानी ॥१॥ निज करसों षट् रस भोजन सरस बनाये ॥ दस-तीन गुनन के सुन्दर पान लगाये ॥ कितने तुम्हरे हित देवी देव मनाये ॥ कोमल कलियन के चुनि चुनि हार सजाये ॥ पूजत बड़ पीपल छनेमोर जुग पानी ॥२॥ लखि प्रीति प्रीति प्रतिपाल लाल जसुदा के ॥ गे भवन भामिनी छैल छबीले बांके ॥ बैठे मंचक पर उभय सार सुखमा के ॥ बलवंत निरखि पदकमल मोद मद छाके ॥ करि पूरन आसा हरि अभिमत फल दानी ॥ ३ ॥

पद १७९.

दृगन सों मोहन अब न टरो ॥ धृ० ॥ वदन विलोकि जियत हों मानों, खोटे चाहे खरो ॥ १ ॥ होतहि पलकन ओट नाथ के, जियरा जात जरो ॥२॥ तुम भगवन्त भक्त प्रतिपालक, आज सनाथ करो ॥३ ॥ जो बलवंत नेह के सांचे, पाछे पग न धरो ॥ ४ ॥

पद १८०.

मो ढिंग सों जिन जाय सँवलिया, मोढिंग सों जिन जाय ॥ मेरो बारो, बारो जियरवा, तुम विन अति दुख पाय ॥ धृ० ॥ खान पान गुण गान न सूझे, भूषण भार दिखाय ॥ १ ॥ नीर उसीरन देह दहत है, सजी सेज डरपाय ॥ २ ॥ प्राणनाथ तुम जीवन मोरे, विरहा सहो न जाय ॥ ३ ॥ करिये अस बलवंत कृपा प्रभु, रहों रैन दिन आनन्द पाय ॥४॥

पद १८१.

मैं बलि जाऊं बारबार, तुम्हरे मन मोहन, एक बेर धुनि वेणु सुनावहु, मोहि रसभीनी ॥ धृ० ॥ तुम्हरी

कही हम करत रैन दिन, हमरी कही तुम एक न कीनी ॥ १ ॥

पद १८२.

लागन मन चरण सरोज निहार ॥धृ०॥ निधि लावण्य कमलसों कोमल, धारें त्रिभुवन भार ॥ चिन्मय मणि गण भूषण भूषित, भक्तन प्राण अधार ॥ तृण सम तिन्हें तीन पुर सम्पति, जिन देखे इक-वार ॥ सो सुख साधु समाधि न पावें, कीन्हे कष्ट अपार ॥ यह रस है बलवंत नियारो, चखो मौन मन धार ॥

पद १८३.

मोहिं अब और न चाह रही ॥ धृ० ॥ श्यामा श्याम माधुरी सूरति, रसिकन ग्रंथ कही ॥ जोगी जाहि जतन करि थाके, नेक न थाह लही ॥ १ ॥ सो इन नैनन निसि दिन निरखौं, विचरत कुंज मही ॥ करो कृपा बलवंत किशोरी, इक अभिलाश यही ॥ ६ ॥

पद १८४.

कृपा तुम्हरी सब काज कियो ॥धृ०॥ कर्म धर्म व्रत जप तप संयम, सपनेहु नाहिं छियो ॥ १ ॥ सेये न साधु संत संगति नाहिं, मुखभर नाम लियो ॥ २ ॥ तदपि जगत दुर्लभ सुर नर कहं, सो सुख नाथ दियो ॥ ३ ॥ अस बलवंत कृपानिधि पद पर, वारों नित्त जियो ॥ ४ ॥

पद १८५.

रहत नाथ नित निकट हमारे. होत न क्षणहु दृगनसों न्यारे ॥धृ०॥ यदि चकोर विधु विन दुखियारे, शोधत शशिहुं चकोर दुआरे ॥ १ ॥ चातक तृषित तृषा के मारे, घनहु लिये जल ताहि पुकारे ॥ २ ॥ आसक्तन उर उरझे पीतम, उरझे फंद न सुरझन हारे ॥ ३ ॥ नेह नात बलवंत जुरै जब, परजन स्वजन छुड़ावत हारे ॥४॥ यही प्रीति की रीति प्रगट है, जीत होत है मन के हारे ॥ ५ ॥

पद १८६.

नहिं आसक्तों से पीतम होते न्यारे ॥ रहते हैं रात दिन साथ हमारे प्यारे ॥ १ ॥ यह पंच प्राण उनके चरणोंपें वारे ॥ पीपी के रूप रस सदा रहें मतवारे ॥ २ ॥ जब लगी लगन दृढ़ फिर क्या बस अपना है ॥ जो होनी होय सो होय वृथा डरना है ॥ ३ ॥ अब जग जाहर होचुके छुपाना क्या है ॥ हरिनाम विकाने कहिये जो जी चाहे ॥ ४ ॥ कुल कान तजी फिर जग में डर किसका है ॥ बलवन्त प्रीति का बहुत बुरा चसका है ॥ ५ ॥ श्रुति कही तजे दोउ लोक कृष्ण मिलता है ॥ कुछ भाव बढ़ाओ और अभी सस्ता है ॥ ६ ॥

पद १८७.

हमारे को भटके अब भाई ॥ धृ० ॥ एकहि देव देवकी नन्दन, एक शास्त्र प्रभुगीता पाई ॥ १ ॥ एक मंत्र श्रीकृष्ण नामबर, सेवत सदा एक यदुराई ॥ २ ॥ हृदय अधार एक गिरधर को, एक छत्र श्रीपति पद

छाई ॥ ३ ॥ एकहि बल बलवन्त भये जग, गये दुरित दुख द्वंद पराई ॥ ४ ॥

पद १८८.

नहिं इच्छा अब शेष रखी प्रभु, पूरा मनभर तौल दिया ॥ धृ० ॥ सिंधुपान करि भरे न जो मन, एक वचन में तृप्त किया ॥ १ ॥ अजब खेल करुणा का तेरे खूब तमाशा देखलिया ॥ २ ॥ हरि तेरी बलवंत कृपा से, नया नया रस नित्त पिया ॥ ३ ॥

पद १८९.

राधिका वल्लभ के बलि जैहों ॥ धृ० ॥ कृष्ण चरण नखचन्द्र विना नहिं, दृगन चकोर लखैहों ॥ १ ॥ केकी करणन नाथ गाथघन, तजि नहिं शब्द सुनैहों ॥ २ ॥ स्वाति बूंद हरिनाम विना नहिं, चात्रकि रसनहिं प्यैहों ॥ ३ ॥ अब बलवंत उदार द्वार तजि, और ठौर नहिं जैहों ॥ ४ ॥

पद १९०.

आज नन्द घर बजत बधाये ॥ धन्य जसोमत पुण्य तुम्हारे, भवन भुवन पति आये ॥ धृ० ॥ मंगल

गान करैं बृजवनिता, पुर प्रमोद अति भारे ॥ सुर सुन्दरी सुमन बरसावत, विबुध बजाय नगारे ॥ १ ॥ अस्तुति करत लोकपति मिलि सब, वेदन विरद उचारे ॥ अब बलवन्त मनोरथ सब विधि, ह्वैहैं सफल हमारे ॥ २ ॥

पद १९१.

माई वाके कौन कौन गुन गइये ॥ धृ० ॥ सहिये सबहि सीस धरि सादर, जबलों गोकुल रहिये ॥ १ ॥ बूंद न बचे पानि पय माखन, किमि गृह चरित चलइये ॥ २ ॥ सुलभ नहीं बसिबो अब यहि पुर, पवन पानि निरबाहिये ॥ ३ ॥ बाल चरित बलवंत नाथ पै, बार बार बलि जइये ॥ ४ ॥

पद १९२.

सकल खल दल दनुज तबहि हिय हारा ॥ धृ० ॥ यदुकुल कमल दिवाकर जबही, मखमण्डप पग धारा ॥ १ ॥ श्रीहत कंस समाज सहित जिमि, प्रात काल शशि तारा ॥ २ ॥ मुष्टिक अरु चाणूर बिगत

बल, भये मनहुं हिम मारा ॥ ३ ॥ प्रभु प्रताप बल-वंत कृशानू, दानव बन सब जारा ॥ ४ ॥

पद १९३.

जब माधव आगमन कियो ॥ धृ० ॥ कुंडिनपुर नरनारि परस्पर, कहत नयन फल आज लियो ॥ १ ॥ कोटि मदन मन हरन रूप रस, सुधापान करि छको हियो ॥ २ ॥ चैद्यादिक नृप खल कोकन को, श्याम सुधाकर शोक दियो ॥ ३ ॥ सदा रहत बल-वंत मगन्न मन, प्रभु चरित्र पीयूष पियो ॥ ४ ॥

पद १९४.

फूल रही फुलवाई, मदन महीप साजि निज सैना जनु चले निशान बजाई ॥ धृ० ॥ मंद सुगंध पवन वृजबन में, बहत परम सुखदाई ॥ युगल सरूप सिंहासन राजें, संग सखी समुदाई ॥ १ ॥ भूषण बसन पियरे तन धारे, शोभा वरनि न जाई ॥ छिरकत केसर रंग परस्पर, लखि अनुपम सुख-पाई ॥ २ ॥

पद १९५.

आई वंसत ऋतु सुखदाई ॥ वृज जन के अतिही मन भाई ॥ धृ० ॥ उमँग बढ़ी होली खेलन की, वृज वामन के हिये समाई ॥ सो बलवंत अभिलाष देखि मधु, बाढ़ी जिमि आहुति घृत पाई ॥ १ ॥

पद १९६.

मुख मुरली मन मोहनि मूरत, देखत नैन सिरावत हैं ॥ ग्वाल बाल सँग वृन्दावनते, बेनु बजावत आवत हैं ॥ नटवर भेष अलौकिक शोभा, कोटिन मदन लजावत हैं ॥ निरखि निरखि बलवंत श्याम छवि, रैन दिना सुख पावत हैं ॥ १ ॥

पद १९७.

सघन वन कुंजन सुखदाई ॥ प्रिया पिय झूलें हरपाई ॥ श्याम घन घुमड़ि घटा छाई ॥ जहां तहं चपला चपलाई ॥

दोहा.

फूले चहुं दिस विपिन मधि, सुमन समूह अनूप ॥
सर सरितन सरसिज खिले, मानहु शोभा भूप ॥ १ ॥

सुगंधनि सानी पुरवाई ॥ घटा मुद बुंदन झर लाई ॥ मनोहर श्री वन हरियाई ॥ लहर जमुना-जल मन भाई ॥

दोहा.

रुचिर खंभ मनि जटित की, अद्भुत छबि दरसाय ॥
प्रगटे द्रुम लावण्यता, जनु पावस ऋतु पाय ॥ २ ॥

ललित गुण वरणत मति हारी, गूंथि मनु शोभा लट डारी ॥ मुनिन मन पटली छबि धारी ॥ रचन झूला अति मनहारी ॥

दोहा.

राधा माधव रसिक वर, जो सुखमा के सार ॥
झूलें तामें मुदित मन, अलि बोलें बलिहार ॥ ३ ॥

भीर बिधु बदानिन की भारी ॥ गीत गावें दै दै तारी ॥ मनोहर बंशी धुनि न्यारी ॥ सुमन सुर वरषें सुखकारी ॥

दोहा.

निरखत झूलन छबिछटा, आँनद उर न समाय ।
गीत बाल बलवंत सुनि, स्वामिनि मन मुसक्याय ॥ ४ ॥

पद १९८.

झूलत लाडिली घनश्याम ॥ धृ० ॥ ललित लता द्रुम मंजु मनोहर, मनहुं मीन ध्वजधाम ॥ १ ॥ धीर समीर कीर कल चातक, बोलत बैन ललाम ॥ २ ॥ मंद मंद गरजत वरसत घन, गान करत वृजबाम ॥ ३ ॥ त्रिभुवन सुन्दरता पर छबि लखि, लजित कोटिन काम ॥ ४ ॥ सो छाबिलाखि बलवंत माधुरी, भे परिपूरण काम ॥ ५ ॥

पद १९९.

झूलत कुंज राधा श्याम ॥ टेक ॥ रत्न जटित हिंडोरना सखि, सरित तट सुखधाम ॥ द्रुम पुंज सघन निकुंज मंद, समीर मन अभिराम ॥ १ ॥ ललित नभ झुकि झूमि छाई, नील नीरद दाम ॥ दामिनी दमकत दुरत द्रुत, मंद वृष्टि ललाम ॥ २ ॥ मोर सुनि घन घोर बोलत, पिकन लहत विराम ॥ राग भरि मल्हार गावत, नवल वय की बाम ॥ ३ ॥ वलवंत मन दृग युगल पदतल, वसत आठो याम ॥ हटत नहिं क्षण एक संतत, जानि जिय विश्राम ॥ ४ ॥

पद २००.

झूलें श्यामा श्याम सरस ऋतु पावस छाई ॥ धृ० ॥ पुष्प पराग भई महि धूरी, महक विपिन सरसाई ॥ ॥ १ ॥ मधुकर गुंजारव वन मानहुं, नारद वीन बजाई ॥ २ ॥ गीत मनोहर गोप वधुन के, कोकिल सुनत लजाई ॥ ३ ॥ श्री दंपति झूलन छवि निशि दिन, दृग बलवंत समाई ॥ ४ ॥

पद २०१.

हिंडोरो झूलैं श्रीवृषभानु कुमारि ॥ धृ० ॥ चंद्रावलि ललितादि सहेली, संग सकल सुकुमारि ॥ श्याम सनेह सनी मृदु स्वर सब, गावत राग मल्हार ॥ १ ॥ पँचरँग रेशम डोर हिंडोरो, बिरचो निज कर मार ॥ मंद मंद झूलन पर बरसत, रति रस भरीं फुआर ॥ २ ॥ मन मोहन आगम अवलोकत, चहुंदिशि दृष्टि पसार ॥ गोपिन गीत सरस सुनि केकी, कूक उठे इकबार ॥ ३ ॥ श्री गोविंद गोप गण मंडित, निरखि नवल वृजनारि ॥ हुलसि उठीं बलवंत चातकी, जनु घन घटा निहारि ॥ ४ ॥

पद २०२.

प्रिया संग झूलत कौन नई ॥ ध्रु० ॥ ललित लता द्रुम मिलित सघन वन, घटा सजल उमई ॥ चपला चमक फुवारन भींजत, चूनरि रंगमई ॥ १ ॥ सजनी सुघर सांवरे रंग की, हौं दृग देखि लई ॥ बोलन हंसन मंद मृदु मुसक्य, चित चोरन चित ठई ॥ २ ॥ नख शिखांत शृंगार सुभगतर, गल भुज कमल दई ॥ नव नागरि दोउ गुणन आगरी, रसकन झूल रई ॥ ३ ॥ सो छवि वरणि सकै किमि कोविद, कविवर दिग-विजई ॥ कुमारिकृपा वलवंत रैन दिन, कुंजकेलि दृग छई ॥ ४ ॥

पद २०३.

झूलत श्यामा श्याम चलो री ॥ ध्रु० ॥ सघन वारिधर सहित तड़ित जनु, लसत ललित वरजोरी॥ कनक खंभ मणि जटित मनोहर, वेलि वलित चहुं ओरी ॥ १ ॥ नीलम डार परण पन्नन के, कलियन वज्र जड़ो री ॥ मानिक सुम पर श्यामराग मनु, मधुहित मधुप अरो री ॥ २ ॥ फल पुखराज प्रेम रस

पूरण, बिधि निजकरन भरो री॥ खिलमे खिहंग समुझ सांचे चित, नटत लेत चित चोरी ॥ ३ ॥ जगमग जाल जरकसी झलकत, पंचरंग रेशम डोरी॥ विद्रुम पाट परम सुन्दर पहं, आसन अमल बिछो री ॥ ४ ॥ तिहिं आसन आसीन जुगल जनु, प्रीति रूप इक ठौरी॥ झोकन मंद झुलावत सखि गण, गान करत मधुबोरी ॥ ५ ॥ हंसि हेरत हरि ओर राधिका, सो सुख कहि न सकों री॥ गोपी गात मल्हार मंजु मनु, मुद निधि उमंग परो री ॥ ६ ॥ अबलन युत चढि यानन अम्बर, सुरन समूह जुरो री॥ अति आनंद मानि वरसावत, सुमनन भरि भरि झोरी ॥ ७ ॥ निरखि निरखि वलवंत विशद द्युति, उर आनंद बढ़ो री॥ झूलें नित नयनन नँदनंदन, श्री वृषभानु किशोरी ॥ ८ ॥

पद २०४.

झूलत श्याम राधिका गोरी ॥ धृ० ॥ लता वितान तने मनहारी, हरित भूमि सब ठौरी ॥ कुंज जाल रंध्रन तनु आभा, फैलि रही चहुं ओरी ॥ १ ॥ घन घुमंड घहरात चहूं दिश, दामिनि दमक न थोरी ॥

परत फुआर सरस मन भावन, केकी शोर घनोरी ॥२॥ पिय प्यारी पर करत छांहरो, निज पीताम्बर कोरी ॥ धीर समीर भीर वनितन की, गायन गति चित चोरी ॥ ३ ॥ चूनरि चारु चमक चटकीली, चुवत चित्र रंग बोरी ॥ छवि बलवंत विलोकि अलौकिक, नवल नेह उंमगोरी ॥ ४ ॥

पद २०५.

श्रीदम्पति पद पंकज शोभा, देखत सखि मैं ठगिहि गई ॥ धृ० ॥ तृप्ति होय कहु किहिं विधि आली, जब देखों तब नई नई ॥ १ ॥ दृग बिन वाणि वाणि बिन लोचन, कैसे बरनी जाय दई ॥ २ ॥ यह बलवंत रहस की बतियां, जिन जानी चुप साधि लई ॥ ३ ॥ सुख सागर प्रतिपल हिय बाढ़ौ, ज्यों ज्यों शुचिता अधिक भई ॥ ४ ॥

पद २०६.

जा नैया के जुगल खिवैया ताहि कहा भवसागर डर है ॥ धृ० ॥ समरथ स्वामि स्वामिनी राधा माधव पद पर अब सब भर है ॥ बूड़त जक्त जहाज तहींते

टूटी नाव हमारि उतरहै ॥ १ ॥ जाके शिर पर अटल छत्र द्वै ताकहं त्रिबिध ताप कह करहै ॥ भव गद कहा कहो तिहि व्यापे जाको दो दो धन्वन्तर है ॥२॥ वाको भाग्य कहा कोउ भाखे युग कर एक सीस ऊपर है ॥ कत काहुहि बलवंत बदत अब एक नहीं दोके बल पर है ॥ ३ ॥

पद २०७.

जिन भूलेहु, प्रभु की शरण लही ॥ बंधन टूट गये तब ही ॥ धृ० ॥ जो आवत प्रभु तारत ताको ॥ पात्रापात्र विचार नहीं ॥ १ ॥ विश्व विदित ब्रद दीन उधारन ॥ निगमागम बहु कथा कही ॥ ॥ २ ऐसे प्रभु बलवंत नाथ के ॥ रहो रैन दिन चरण गही ॥ ३ ॥

पद २०८.

यदुपति चरण कमल बलिहारी ॥ धृ० ॥ विषय विराग विभंजन अलि मन रंजन अघ चयहारी ॥ १ ॥ भव संताप शमन सठ मन मद दमन विश्व उपकारी ॥ २ ॥ पूरण काम धाम सिद्धिन के तन त्रयताप निवारी ॥ ३ ॥ महिमा अमित अलौकिक बरणत कवि कोविद मति हारी ॥ ४ ॥ बसो सदा बलवन्त मनस्सर सो पदकंज मुरारी ॥ ५ ॥

(पद मराठी भाषा).

पद २०९.

येई बा गुरुराया, गुरुराया, पड़तों तुमच्या पाया ॥ धृ० ॥ गौर इन्दुद्युतिसुंदर, धरणीधर्मधुरंधर ॥ येई० ॥ श्रीकृष्णनाम आननीं, मूर्ती मनोहर मनीं ॥ येई० ॥ दंड कमंडलु हातीं, पदी नूपुरें वाजती ॥ येई० ॥ मत्त छबी अलबेली, झळकते वेळो वेळीं ॥ येई० ॥ वरदहस्त प्रभु धरीं, बलवंताचे शिरीं ॥ येई० ॥

पद २१०.

कुठवरि प्रभु उपकार आपुले वाणीने गावे ॥ नसे कृपेचा पार पदीं मस्तक ठेवुनी रहावें ॥ १ ॥ मातेवत पाळिलें पित्यापरि सांभाळण केलें ॥ दुर्घट संकट पडतां देवा सर्वोपरि रक्षिलें ॥ २ ॥ धन धरणी आणि धाम विविध सुख दासा प्रति देशी ॥ ज्ञान भक्ति वैराग्य देउनीं निज सेवा घेसी ॥ ३ ॥ क्षमा करुनि

अपराध जनाचे तारिसि यदुनाथा ॥ असो सदोदित बलवंताचा तव चरणीं माथा ॥ ४ ॥

पद २११.

अभंग ।

धरणे देऊनी उभा तुझे द्वारी ॥
आता कांहिं तरी सोय करा ॥
किती जन्म माझे याचिपरि गेले ॥
टाळियेले तुम्हीं वेळो वेळां ॥
आतातरि करा जीवाचा उद्धार ॥
वारंवार तुम्हा प्रार्थियेलें ॥
कलियुगी तुमची होईल सुकीर्ती ॥
पसरेल सन्मति जनामाजी ॥
बलवंताचे मनी धीर नाहिं आतां ॥
देवा कृपावंता त्वरा करा ॥

पद २१२.

कां बसला रुसोनि कैसा धरोनि अबोला ॥ कृष्णा काहींतरि आज मुखानें बोला ॥ १ ॥ का इतुके निष्ठुर जाहला दीन दयाळा ॥ कृष्णा काहीं० ॥ २ ॥ तुम्ही

अमुचे जीवनप्राण अहो गोपाळा ॥ कृष्णा काही० ॥ ३ ॥ सोडी न कदापि स्वामी तव चरणाला ॥ कृष्णा काही० ॥ ४ ॥ बलवंतविनाविला कंठी हा जिव आला ॥ कृष्णा काही० ॥ ५ ॥

पद २१३.

माझ्या जिवाच्या जीवना, कृष्णा येई बा लवकरी ॥धृ०॥
माझ्या प्रणाच्या पोषणा ॥ कृष्णा ,, ,, ॥ १ ॥
माझ्या नयनाच्या रंजना ॥ कृष्णा ,, ,, ॥ २ ॥
माझ्या मनाच्या मोहना ॥ कृष्णा ,, ,, ॥ ३ ॥
मज अनाथाच्या नाथा ॥ कृष्णा ,, ,, ॥ ४ ॥
माझ्या सुखाच्या साधना ॥ कृष्णा ,, ,, ॥ ५ ॥
माझ्या सौभाग्याचा राणा ॥ कृष्णा ,, ,, ॥ ६ ॥
दीन बलवंताच्या प्राणा ॥ कृष्णा ,, ,, ॥ ७ ॥

पद २१४.

कृष्ण वदा गोविंद वदा, हरि हरि वदा, मुख भरुनि सदा ॥ धृ० ॥ श्रीहरिनाम सतत मुखिं घोका, तुम्हा न धोका होई कदा ॥ १ ॥ शमन करी भवदावानल हा, देई सुधारस पदा पदा ॥ २ ॥ मन

मुकराचे हेंची मार्जन, हरी सर्व अंतर विपदा ॥ ३ ॥ ज्ञानमुक्तिकल्याण विरतिची, सहज वाढवी सुसंपदा ॥ ४ ॥ अनुभवासिंधु सहज साधन हे, ग्रहण करा मनिं त्यजुनिं मदा ॥ ५ ॥ राजयोग हा परमसुलभ परि, दुर्लभ होय कुतर्कविदा ॥ ६ ॥ कृष्ण कृष्ण श्रीकृष्ण, म्हणा, बलवंत दानि हे मुक्तिपदा ॥ ७ ॥

पद २१५.

जय राधा कृष्ण जय राधा कृष्ण जय राधा ॥ म्हणतांचि दूर होती सर्वहि भवबाधा ॥ धृ० ॥ नामाच्या योगें सगुण रूप अनुभवलें ॥ घेतांचि नाम धांउनियां जन उद्धरले ॥ १ ॥ भक्तांचा रक्षक तूंचि एक या काळी ॥ दुःखद्वंद्व दुरित सत्वरी हरी वनमाळी ॥ २ ॥ दंपतीपदीं बलवंत मिठी दृढ घाली ॥ पण शरणागत पालन अपुला सांभाळी ॥ ६ ॥

पद २१६.

ही दुष्ट वासना सुटे न केले उपाय मी किति तरी ॥ मन मर्कट विषयासव पिउनीं बसलें अमुचे शिरीं ॥ बंड करी किती तरी आवरतां नावरे क्षणोक्षणीं

नाना छन्द धरी ॥ बोध बोधितां वाणी थकली उमजे ना तिळभरी ॥ अतां हरी कृपा करीं निजमाया आवरी दयाळा वळवंता धरि करीं ॥

पद २१७.

काय हरिमायेची लीला, शंभु स्वयंभू स्वभू पाहुनीं भ्रमले मनिं इजला ॥ धृ० ॥ बीजकल्पना मनीं स्फुरतां शाखा पल्लव पुष्पफलां सह विश्वविटप उठला ॥ १ ॥ बाग बहुरंगी बघुनि फसला, विषयछंद लागला जिवाला निजानंद भुलला ॥ २ ॥ चाल ॥ या चक्षुबाहुल्या मधीं विश्व खेळतें ॥ लावितां उघड़तां लय उत्पत्ती होते ॥ एकत्र ठेवितां द्वैत सकळ नासतें ॥ जें स्वरूप तुमचें तुह्मां प्रगट भासतें ॥ पहावा ब्रह्मीचा सोहळा, सच्चित घन बलवंत श्रीहरी सर्वठाईं भरला ॥ ३ ॥

पद २१८.

चरणीं देई ठाँव विठोबा हो ॥ धृ० ॥ प्रपंचतापें बहुत तापलों ॥ अति व्याकुळ तव पदीं पातलों ॥ धरुनि एकविध भाव ॥ १ ॥ प्रणतपाल भवजाल-विमोचन ॥ पतितपावन तूं करुणाघन ॥ जगि गाजे

तव नांव ॥ २ ॥ क्षणिक कनक संपदा नको मज अविनाशी निज दावि पदांबुज ॥ बलवंता झणिं पाव ॥ ३ ॥

पद २१९.

देई दर्शन दासा पंढरी ईशा हो ॥ धृ० ॥ दूर देशहुनि आलों येथें पुरवी माझी आशा हो ॥ १ ॥ भवसिंधूमधिं भ्रमतां थकलों, मुक्ति करी भवपाशा हो ॥ २ ॥ प्रणत-पाल पण स्वामि आपुले भरले चारी आशा हो ॥३॥ बलवंताची हीच प्रार्थना, न करी स्वामि निराशा हो ॥ ४ ॥

पद २२०.

वृन्दावन सोडुनी कशास्तव आलां तुम्हीं पंढरी, सांगा मज लागीं श्रीहरी ॥ धृ० ॥ कुठे ठेवला मुकुट मनोहर वंशवेणु त्यापरी, गुंजमाला न च हृदयावरी ॥ १ ॥ वेश पालटुनि उभे ठाकलां ठेवुनि कर कटिवरी, विटेवर का मूर्ति साजिरी ॥ २ ॥ कोश-चतुःशत चालुनि आलों घ्याया दर्शन परी, दिसेना कृष्णमूर्ति कां तरी ॥ चाल ॥ तुह्मीं कृपावंत भगवंत

जगीं ह्मणवितां ॥ निजदास मनोरथ पदोपदीं पुरवितां ॥ मज निराश करुनि कशास हो फिरवितां ॥ दावुनि इच्छा बळवंताची पूर्ण करा झडकरी ॥ मनोहर छबि सांवळि गोजिरी ॥

पद २२१.

दुरुनी आलों चरणा पाशीं ॥ कांहीं बोला या दासासी अगा विठोबा ॥ धृ० ॥ कृपा दृष्टिचा भुकेलो, सन्मुख येवुनि ठाकलो ॥ १ ॥ नाम तुमचें करुणाकर, गाजे कीर्तीचा गजर ॥ २ ॥ परिसावी विज्ञापना, देवा रुक्मिणी रमणा ॥ ३ ॥ मौन करोनि धारण, स्वस्थ बैसलां आपण ॥ ४ ॥ परी अतां विश्वंभरा, कृपा दृष्टि फेकुनि जरा ॥ ५ ॥ पहा दशा धर्म देशाची, होय सीमा हो क्लेशाची ॥ ६ ॥ पहा सांप्रत भूमंडळीं, झाली धर्माची रांगोळी ॥ ७ ॥ दुष्ट कली हा मातला, धर्म समूळ बुडविला ॥ ८ ॥ द्विज धेनु संत जन, विकल असती रात्रंदिन ॥ ९ ॥ दुःखें वर्णिली न जाती, विलोकुनी फाटे छाती ॥ १० ॥ आतां काहीं दया माया, यावी आपणा पंढरीराया ॥ ११ ॥ कृपा वचन आपुलें, आता आठवावें भले ॥ १२ ॥ अगा पार्था जेव्हां जेव्हां, धर्म ग्लानी होई तेव्हां ॥ १३ ॥

कराया मी धर्मोद्धार, युगायुगी धरि अवतार ॥ १४ ॥
करुनि दुष्टांचा संव्हार, हरी सज्जनाचा भार ॥ १५ ॥
पूर्ण करोनी ते आतां, ब्रीद राखी पंढरीनाथा ॥ १६ ॥
मान्य करोनी विनंती, अभय ठेवावें बळवंतीं ॥ १७ ॥

पद २२२.

किती दिवस तरी राहाशिल डोळे झाकुनि वा यापरी ॥ कांहिं तरी विचार मूढा करीं ॥ धृ० ॥ बाल्य आणि तारुण्य हि गेलें देह जाहला जरजरी ॥ तदपि विषयाची मनि तरतरी ॥ १ ॥ धना पाहुनीं धावसि मागें क्षुधित श्वानापरी ॥ असुनि संपदा बहुत निज-घरीं ॥ २ ॥ पाहुनि नारी तोषित भारी नाना चेष्टा करीं ॥ इंद्रिय शिथिल जाहली जरी ॥ ३ ॥ अधिकाराची पिशाच्चबाधा बाधे स्वप्नांतरी ॥ येइना निद्रा कां क्षणभरी ॥ ४ ॥ धाम धरांगि सुत दारा यांची चिंता निशिदिन करी ॥ जाहला मरणोन्मुख बाजरी ॥ ५ ॥ (चाल) नव विवाह व्हावा असे मनीं घोळतें, मदनानें ह्मणतो शरीर हें फाटतें, सुंदरा अप्सरा मिळो असें वाटतें, दश सहस्र मुद्रा दिधल्या नच फार ते ॥ जाये विण वाया धनधरणीचें सुख हें मिळे न उपवर

जरी पहा कोणि पुनर्विवाहित बरी ॥ कांहीं तरा० ॥ शूल मस्तकी उठतो घेतां कृष्णनाम आननी ॥ थकेना बडबडतां निशिदिनी ॥ दानास्तव पैसा देण्याला ह्मणसी सीं बहुक्षणी ॥ रांड पाहातां घरी परवणी ॥ वेद विहित धर्मा प्रति सोडुनि पाखंडाचा धनी ॥ वहुत देई लोका शिकवणी ॥ सुरा पिउनियां असुरवृत्तिमधिं अंध धुंद होउनीं ॥ कांहिं विधिनिषेध नाहीं मनीं ॥ आतां तरी कांहीं उमज बारे काळ खेळतो शिरीं ॥ कांहीं तरी विचार मूढा करीं ॥

पद २२३.

(अभंग)

कोणते साधन करूं भेटी साटीं ॥
सांगा जगजेठी कांहीं तरी ॥ धृ० ॥
जप तप ध्यान किंवा आत्मज्ञान ॥
कीं वनसेवन करूं सांगा ॥ १ ॥
ज्याच्या योगें तुम्हीं होतां हो संतुष्ट ॥
तेंच मज इष्ट दावी मज ॥ २ ॥
जीव कासाविस होतो किती तरी ॥

दयावंता हरी शिणवूं नका ॥ ३ ॥
बलवंताची स्थिती जाणता यदुपती ॥
आतां प्राणनाथा भेट द्यावी ॥ ४ ॥

पद २२४.

कोणाच्या मुखाकडे पाहूं—हरि विण कैसे राहूं ॥ प्राणनाथ मथुरापुरिं गेले—कोणा हृदया लाऊं ॥ १ ॥ दिसे सकल संसार शत्रुवत्—तात मात पति भाऊ ॥ ॥ २ ॥ निर्जन नगर भवन जणु काकन—कोठें जाउनि राहूं ॥ ३ ॥ बलवंताचें केवळ जीवन—कृष्ण प्रलंबित बाहू ॥ ४ ॥

पद २२५.

यदुपती कधी मीं पाहिन या नयनाने ॥ श्रीपती कधीं ठेविन डोई प्रेमानें ॥ धृ० ॥ झुरते मनि निशि-दिनिं विरहवन्हितापानें ॥ क्षण युगसम जाई मजसी तद्विरहानें ॥ चाल ॥ हे वेड लागलें जिवास देवा कुठून ॥ सुखसम्पत्ती मम सर्वहि गेली लुटून ॥ सुत तात मात प्रिय नातें गेलें सुटून ॥ जिव श्याम सुन्दरा स्मरतां पडतो तुटून ॥ मन मोहित झालें

रया अनुपम स्वरूपानें ॥ होईल शान्ति बलवंत रूप रस पानें ॥

पद २२६.

किंचित इंदुवदन दाउनियां वेड लावलें आम्हांप्रति ॥ काय सांवळया केली स्थिति ॥ धृ० ॥ पुत्र कलत्र सुमित्र बंधु गण तुटली ममता सम्पत्ती ॥ नष्ट जाहली कुल रीती ॥ वेश वृत्ति पाहुनी आमुची जगीं हांसती लोक किती ॥ बोल बोलती तीक्ष्ण अति ॥ सुखसंसार बुडाला सर्वचि नसे राहिली देहस्मृती ॥ विरह दाहचा नसे मिति ॥ वनि अनवाणी शोधित थकले व्यथित जाहले सांगुं किति ॥ भ्रमिष्ट जाहली माझि मती ॥ योग्य नसे बलवंत दयाळा तापविणें लाउनि प्रीती ॥ भेट एकदा प्राणपती ॥

पद २२७.

थकले साधन झिजली काया ॥ तूंचि उपाय आतां यदुराया ॥ धृ०॥ भ्रमता भवनिधि माधिं बहु थकलों ॥ मनिं येऊं दे दीनाची माया ॥ १ ॥ जन्म अनेक

याचिपरि गेले ॥ पुनरपि आयु चालली वाया ॥ २ ॥ आतां विलंब न करी बलवंता ॥ दावि त्वरित आपुले पाया ॥ ३ ॥

पद २२८.

कुठवरी दयाळा अंत पाहसी कंठीं जिव आला ॥ धृ० ॥ बुड़तों मी संसारसागरीं उपाय तो थकला ॥ अतां हरी, क्षमा करीं, धरी करीं सत्वरीं दयानिधि शरण पातलों तुला ॥ पतितपावन नाम आपुलें जगतीं स्तव भरला ॥ लक्ष करी, ब्रिदावरी, दृष्टि भरीं अंतरी उद्धरीं बळवंता बाळा ॥

पद २२९.

रूप पाहतां डोळे भरी ॥ मन स्थिरावलें अंतरी ॥ प्रेम पाशीं पडलें मन ॥ गेलें प्रापंचिक व्यवधान ॥ काय करावें साधन नाहीं अपुल्या हातीं मन ॥ ज्याची ठेव त्यानें नेली सर्व पीडा माझी गेली ॥ वरद हस्त तुमचा हरी ॥ राहो बळवंताचे शिरी ॥

पद २३०.

मन जडलें तव स्वरूपीं पाहुनिं छबि सावळी गोजिरी, पंचप्राण विव्हळती मन हें क्षणभर धीर न धरी ॥ पळ पळ युगसम जाती वाटे विषाद मज बहु परी ॥ नको नको हा वियोग दुःख हें सोगूं मी कुठवरी ॥ किती दुराग्रह धरिसी माझ्या इतक्या विनंती वरी ॥ वदन चंद्र पाहुं द्या आपुला आम्हांस डोळेभरी ॥ प्रभुतापद संपदा कदापी नच वागे अंतरीं ॥ सुषमा सार स्वरूप वसो बलवंतमनी श्रीहरी ॥

पद २३१.

स्वरूप अनुपम तुमचें पाहुनि मोहित झाली मती ॥ सुचे ना कांहीं एक मजप्रती ॥ १ ॥ विरहानल चेतला शरीरीं काय जाहली स्थिती ॥ वेदना असती मजप्रति किती ॥ (चाल) मी प्राण अर्पिलें तुम्हांस हो श्रीहरी ॥ हा भेद भाव मग कशास आहे तरी ॥ मी पतीत तुम्ही पावन जोडी खरी ॥ प्राणप्रिया मी प्राणा मुकले अशी जाहली स्थिति ॥ धांव लौकरी आतां श्रीपती ॥

पद २३२.

जोडलें नातें गोविंदासी, अर्पुनि मस्तक पद कमलासी ॥ धृ० ॥ रूपवंत गुणवन्त कृपालू, सोडीना दासासी ॥ १ ॥ मुकुट मयूर मकराकृतकुंडल, द्विभुज वेणु वदनासी ॥ २ ॥ चिन्मय लोक अलौकिक लीला, नित्य विहार विलासी ॥ ३ ॥ सकल विश्व परिवार हरीचे, जाणे जो सुख त्यासी ॥ ४ ॥ शंका व्यथा शोक भय भ्रम हे, गेले सर्व लयासी ॥ ५ ॥ पालन पोषण रक्षण याची, चिंता नाहीं अम्हांसी ॥ ६ ॥ तो आमुचा प्रिय अम्हीं त्याच्या, पदाम्बुजाच्या दासी ॥७॥ माय बाप पति बंधु सोयरा, धन धरणी मीरासी ॥ ८ ॥ खाणें खेळणें चरणिं लोळणें, सेवा सुख अम्हांसी ॥९॥ हें माहेर बळवंत असें तव, घाल मिठी चरणासी ॥ १०॥

पद २३३.

नाम निकट संबंध गुरूनि, लाउनि अमुचे शिरीं॥
आणुनियां घातले कृपानिधि, तुमच्या चरणावरी ॥ १ ॥
माय बाप पति बंधु एक पद, तुमचे मज श्रीहरी ॥
पदरीं पडले अतां मी ठेवा, उचित दिसे त्यापरी ॥२॥

तुम्हां वाचुनि नसे आतां, मज कांहीं गति दूसरी ॥
डाग तुझा बलवंत लागतां, सुटेना सर्वोपरी ॥ ३ ॥

पद २३४.

नव्हता कांहीं संबंध जोंवरी, तुम्हासी श्रीहरी ॥
सर्वप्रकारें करुनि विपत्ती, होती माझे घरीं ॥ १ ॥
तुम्हां वरूनि श्रीवरा सुखी जहालों मी सर्वोपरी ॥
अतां अव्हेर न करा, अर्पिलें मस्तक चरणावरी ॥ २ ॥

(चाल).

तुम्हीं माझें प्रिय सोयरे अहां श्रीहरी ॥ घ्या कांहीं तरी काळजी माझी अंतरीं ॥ कां दूर ठेविले मला आजवरि तरी ॥ पहा मीन जळाविण व्याकुल मी त्यापरी ॥ केल्याचा अभिमान जरी न च, धराल तुम्हीं अंतरी ॥ तुज वाचुनियां बलवन्ताला, कोण दुजा आवरी ॥ ३ ॥

पद २३५.

येतानां जातानां पाहतो तुम्हाकडे ॥ दुःखाचे पंवाडे गाऊं किती ॥ १ ॥ एक दिन तुम्हां येईल

कंटाळा ॥ हेंचि भय दयाळा वाटे मज ॥ २ ॥ याला काय तरी करूं मी उपाय ॥ नसे दूजी माय बळवंता दीनाची ॥ ३ ॥

पद २३६.

जरि तान्हें बाळ, गुंतले खेळाया ॥ माय बापें तया, काय विसरावें ॥ १ ॥ माया जाळीं जीव, गुंतला अज्ञानीं ॥ तुम्हीं ज्ञान खाणीं, त्यजिलें कैसें ॥ २ ॥ नवल येवढें वाटतसे मना, कैसा पितृवाणा भुलला हो ॥ ३ ॥ अतां तरी देवा, संभाळी बळवंता ॥ त्वरित कृपावंता, तारी दीना ॥ ४ ॥

पद २३७.

वत्स धेनुसी जरी भुकलोनी जाय ॥ परि ती न माय विसरे बाळा ॥ १ ॥ तैसी कृष्णाबाई आमुची माउली ॥ भक्तासी संभाळी भूल पडतां ॥ २ ॥ होती अपराध पदोपदीं किती ॥ परि दयावंत देव सदा ॥ ३ ॥ वायु अनुकूल ठेवुनियां सदा ॥ सेवकाची नौका लावी थडी ॥ ४ ॥ भुलोनी स्वधर्मी घडतां व्यभिचार ॥ परि तो दातार सोडी ना हो ॥ ५ ॥ बलवंताचे एक श्रीपदीं माहेर ॥ तेथें नसे अव्हेर कोणा वेळीं ॥ ६ ॥

पद २३८.

चरणीं शरण आलों तुला त्रिविधतापे जिव संतापला ॥ सोडवी या दुखांतुनि मला ॥ दीनदयाळा श्रीहरी ॥ धृ० ॥ नाम तुमचे करुणाकर, चहुदिशिं कीर्तिचा गजर ॥ दया करि हरि या दीनावर, यादवनाथा रे सत्वरी ॥ १ ॥ लज्जा द्रोपदीची राखली अंबरें सभे माजि पुरविली ॥ नाम घेतां गणिका तारली, विलंब न केला क्षणभरी ॥ २ ॥ करुणा करुनि मज करिं धरी, किंवा काढीं घरा बाहेरी ॥ बैसेन तुझ्या दारावरी, निश्चय हाचि अंतरीं ॥ ३ ॥ माझी याचना तरि किति, उदार दाता, लक्ष्मीपति ॥ कृपणता सोडि अतां श्रीहरी, लक्ष ठेवूनि बिरुदावरी ॥ ४ ॥ तुज वाचुनियां उर्वीवरी, न च मजला आश्रय तिळभरी ॥ बुडतों आतां भवसागरीं, दयाळा बलवंता उद्धरी ॥ ५ ॥

पद २३९.

चरणीं शरण आलों देवा, सत्वर करी करुणा ॥ धृ० ॥ आलो सरी सहित परिवार, केला जलक्रीडा विस्तार ॥ नक्रइक धाउनि बल आगार, बळकट फार पदिं धरले ॥ १ ॥ थकलों करिता युद्ध अपार, जरजर

झालीं गात्रें फार ॥ बुडतों अतां नसे आधार, ठेविले भार तव चरणीं ॥ २ ॥ पाहुनि संकट अति भयदाय, गेला त्यजुनि स्वजन समुदाय ॥ ज्यास्तव घालविले वय काय, हाय हाय व्यर्थचि हें ॥ ३ ॥ ब्रिद तव शरणागत प्रतिपाल, करुणाकर तूं दीनदयाल ॥ रक्षिले व्रजीं धेनु गोपाल, कीर्ति विशाल जगिं गाजे ॥ ४ ॥ होउनि पार्थाचा कैवारी, केली निष्कौरव महि सारी ॥ उद्धरियेली गौतम नारी, त्रिभुवन धनी वासुदेवा ॥ ५ ॥ श्रवणीं पडता करुणारव, स्वर्गी गहिवरला माधव ॥ गरुडा त्यजुनि आर्त बांधव, धांवुनि गजोद्धार केला ॥ ६ ॥ गुणगण हरिचे जगीं अपार, गाती प्रेमें वारंवार ॥ म्हणे बळवंत त्यासि संसार, शुद्ध असारसा भासे ॥ ७ ॥

पद २४०.

(अभंग)

आमुचे जीवन देवा तुमचे पाय ॥ सकळ उपाय हेची माझे ॥ धृ० ॥ पूर्वीचे सुकृत उदयासी आले ॥ म्हणोनी सांपडले संतकृपे ॥ १ ॥ दरिद्रयाच्या घरी कामधेनु आली ॥ पाउले हो तिची सोडवेना ॥ २ ॥

सौभाग्याचा टिळक लागला कपाळी ॥ पाउले आपुली । रुचतां मनी ॥ ३ ॥ अनंत जन्मीचे वैधव्य गेले ॥ सनाथ केले तुम्ही मजदेवा ॥ ४ ॥ दुखाची दशा वाटतसे गेली ॥ सुखाची पाळी आली अतां ॥ ५ ॥ निश्चयाचासिंव्ह गर्जतां अंतरीं ॥ संशयाचे करी नष्ट जाहले ॥ ६ ॥ कृपावंत स्वामी आम्ही दीनदास ॥ सेवा सुख विलास नित्य नवे ॥ ७ ॥ अतां दुजी नसे बलवंताची आशा ॥ देई जगदीशा नित्य प्रेम ॥ ८ ॥

पद २४१.

(अभंग)

आम्हीं करावी कामना ॥ तुम्ही पुरवावी श्री रमणा ॥ १ ॥ स्वामी सेवकाची रिती ॥ ऐसी आहे बोले स्मृती ॥ २ ॥ जैसी बालका दआवड ॥ माय लावी त्याची तोड ॥ ३ ॥ तैसे तुम्हीं दीन दयाळा ॥ पुरविता सुख सोहळा ॥ ४ ॥ ऐसे प्रतिपालन करिसी ॥ दासाप्रति पोटी धरिसी ॥ ५ ॥ कधी नाहीं नाहीं केले ॥ मनोगत भक्तांचे पुरविले ॥ ६ ॥ ऐसी दयावंत माउली ॥ राखी बलवंत साउली ॥ ७ ॥

पद २४२.

श्याम सुन्दरी सुख करणी भवतरणी वृषभानु किशोरी॥ माते वरदे वरदे वरदे ॥ धृ० ॥ प्रेममयझरी सुखकन्दे, जगवन्दे भक्त भयहारी ॥ बळवंतें निदिध्यास धरली तव चरणीं आस॥ श्यामे न करी निराश यास करिं धरी ॥ माते वरदे वरदे वरदे ॥

भाव भूमिका.

(छप्पय)

जगव्यापक जगदीश, ईशके स्वरूप सारे ॥ पंचभूत सुर नर अरु, खग मृग कीट अपारे ॥ १ ॥ सबको प्रेरक ईश, बिना अनुशासन पाई ॥ पवन चले ना पत्रहिले तिहुं लोकन माई ॥ २ ॥ कर्मदैव अदृष्ट, नाम याके सब जानो ॥ सुख दुःख जो सिर आय, ताहि प्रभु आज्ञा मानो ॥ ३ ॥ जगमें कर्म प्रधान, नेम येही प्रभु राचा ॥ जो जस करनी करे, पाय फल तैसो साचा ॥ ४ ॥ काल कर्मअरु स्वभाव बंधन वस जगसारा ॥ पै प्रभु इच्छा यापेहू बलवत्तर भारा ॥ ५॥ बदले काल स्वभाव होय, विपरीत कर्म फल ॥ पलट जाय सब सूत्र एक प्रभु इच्छा के बल ॥ ६ ॥ जिन लीन्ही प्रभु शरण कर्म तिनके सब नासे ॥ केवल प्रभु इच्छा बस, सुख दुःख आवत खासे ॥ ७ ॥ पै दुख में दुख नहीं, तत्वजिन हृदय विचारा ॥ भलो होय परिणाम, संत श्रुति यह निरधारा ॥८॥ जैसे कटु औषधि, गदी के मन नहिं भावे ॥ पै कंचन की देह, होत ऐसे चित लावे ॥ ९ ॥ जो निर्दोष स्वरूप, दोष तहं कहं से आवे ॥ नहीं

सुधासन, कबहुं हलाहल गुण दरसावे ॥ १० ॥ सबही स्वामि स्वरूप, सबहि प्रियपूज्य हमारे ॥ भली होय सोइ, करें प्रभू करुणा आगारे ॥ ११ ॥ कासन ठाने वैर, कोप अब कापर कीजे ॥ काके कटुक वचन सों, चितको व्याकुल कीजे ॥ १२ ॥ मत्सर कासों करे, दोष कहुं काको दीजै ॥ करे कोउ कछु कहे, बुराई मन नहिं लीजे ॥ १३ ॥ ईसा मूसा और, पयंबर सब मतवारे ॥ यही सिद्ध सिद्धांत एक सुर कहंत पुकारे ॥ १४ ॥ नाम रूप लीला निज, सुख विन जो उर आवे ॥ ताहे माया जानि, कल्पना वेगि मिटावे ॥ १५ ॥ यह जबलों सिद्धांत नहीं उर में दृढतावे ॥ जन्मन भटकत फिरे नहीं सुख छिनभर पावे ॥ १६ ॥ दास्य सख्य वात्सल्य, और उज्वल यह चारो ॥ सबकी भूमिका, यही एक निश्चय उरधारो ॥ १७ ॥ जबलों भेदाभेद नहीं, सब मनसों त्यागे ॥ तबलों एकहि भाव, नहीं साचो उर जागे ॥ १८ ॥ प्रेम पंथ अति-कठिन जान जिय असि की धारा ॥ कटते सीस हटाय, धर्मपद बिगडे सारा ॥ १९ ॥ यह विधि जो बलवंत, धारणा चित नहिं लावे ॥ होय प्रेम पद भ्रष्ट भक्ति शरणागति जावे ॥ २० ॥

दोहा २४४.

प्रभु सेवा है जानिये, जबलों मुख में नाम।
जिती बने कर लीजिये, प्रभु सेवा सुखधाम ॥ १ ॥

उद्धारे जिन शत्रुगण, दया भाव उर लाय।
सो करुणाकर कवन बिध, निज भक्तन बिसराय ॥ २ ॥

जिन देखो निज दोष दुख, अघ अरु संकटभार।
लखिये समरथ नाथ को, जो सब भंजनहार ॥ ३ ॥

कबहुं उपेक्षा ना करे, तजे न निज जनपक्ष।
विश्व विदित गोविंद वृद, राखो यापे लक्ष ॥ ४ ॥

प्रभुसन जो प्रीतीकरत, तासुं रखत हरि हेत।
जाको चाहत हैं प्रभू, ताकहं दर्शन देत ॥ ५ ॥

गुरु द्वारा संबंध जो, प्रभुसों भयो सुजान।
ताकहं दृढ उर धारि नित, रखिये अनुसंधान ॥ ६ ॥

परमाणुन समुदाय है, जानो यह संसार।
नाम, रूप, गुण, जगनके, हैं कल्पित निःस्सार ॥ ७ ॥

जो है सो दीसे नहीं, दीसे है सो नाय।
अन दीसत को दीसवो, यही तत्व उर लाय ॥ ८ ॥

जग रहस्य को खेल है, नहिं पाखंड सुजान ।
साधो चुपसाधे लखो, करो न नेक बखान ॥ ९ ॥

प्रभुसनमें तबलग नहीं, जबलग जग मनमायँ ।
विष अमृत इक पात्र में, कैसेहु नाहिं समायँ ॥१०॥

भासत है हरि भक्त को, यूं जग फंद कराल ।
मनहुं स्वयंवर मधिपरी, नृपसुत के गल माल ॥११॥

भोगनको शुभ अशुभ फल, पायो मनुज शरीर ।
अब काहे दुख देखके, होवत स्वमति अधीर ॥१२॥

संतत स्वामी स्मरणमधि, दीजे निजहि भुलाय ।
तत्व यही है मुक्ति को, यह ही साध्य उपाय ॥१३॥

सच्चित् आनँदमय सकल, पूर रह्यो गो लोक ।
करिये नित्य निवास तहं, त्यागि सकल भव शोक ॥१४॥

वृज देविन को भाव जो, ताको अनुसंधान ।
गाढ़ लालसा सों सदा, राखो हिये सुजान ॥१५॥

अंतर लीला बाहिर जग, जो चितवत यह भांत ।
तिन जानी बलवंत जिय, परम तत्व की बात ॥१६॥

कुंडलिया २४५.

सांचो नातो नाथ सों, और जानिये झूंट ॥ कच्चो सूत कपास जिम, खींचत जावे टूट ॥ खींचत जावे टूट, याही ते दृढ कर राखो ॥ प्रभु पदसों संबंध प्रेम रस निस दिन चाखो ॥ स्वारथ के सब लोग, कल्ह घर घर में माचो ॥ कोई न आवत काम, परत जब संकट सांचो ॥ १ ॥

संत श्रुति बहु कहिगये, गुंफे ग्रंथ अपार ॥ पै जगमें कोऊ नासुनत, यह सबको है सार ॥ यह सबको है सार, कहैं परमारथ काको ॥ जहं शुक्ता की चाह, कौन पूछे मुक्ता को ॥ मौन साधि आनंदसों, बैठ रहो बलवंत ॥ जातपांत ब्योहार नहिं, तहं कह बोलें संत ॥ २ ॥

सांची कोउ माने नहीं, झूंटी कही न जाय ॥ माया के बलने सकल, राखो तत्व दुराय ॥ राखो तत्व दुराय, संत श्रुति बहुत बखाना ॥ सुने न कोऊ सांचि, झूंट में चित्त भ्रमाना ॥ बिना किये सतसंग, मिटे नहिं खींचा खाची ॥ शुद्ध हृदय जब होय, बुद्धि में आवे सांची ॥ ३ ॥

कवित्त २४६.

मोतिन की झरीसी, झरन लागी आस पास, कंचन को चूर जिम, पसरो चहुं ओर है ॥ रोम रोम आनँद के नगारे गर्जन लगे, उमड्यो सुखसिंधु, जाको ओर है न छोर है ॥ नौसौनवासी नाड़ी, करन लागी मंगल गान, ऐसो श्रीहरि नाम को, अतुल जग जोर है ॥ याही ते माया ने, निज नाश भय दुराय राखो, नातो बलवंत ऐसो साधन कौन और है ॥

॥ दोहा ॥

सदा दास के दाहिने, राधा राधा कंत ।
दंपति पद "पद्माल" यह, अर्पण कृत बलवंत ॥

॥ श्री ॥

सूचना.



इस " पदमाला " के अतिरिक्त श्रीमान् की विमल वाणी से प्रकट होकर उच्चशिक्षा सिखानेवाली, प्रेमपथ दिखानेवाली, भक्तिरस पिलाने वाली स्वर्गसुख दिलानेवाली निम्न लिखित पुस्तकें मुद्रित होचुकी हैं:—

(१) श्रीमद्भागवत् भाषा दशमस्कंध.

(२) मुक्तिद्वार निदर्शन.

(३) धर्मसंदर्प (पुनरावृत्ति होना है).

(४) संगीत हिन्दीभाषा ऊषानाटक.

विनीत,

प्रेमनारायन, मुन्शी,

गवालियार, सी. आई.



